सूचीपत्र ॥

आरोग्यदर्पण—तृतीय खण्ड

इत्यादि गमनद्वारा वृथा वीर्य्य अपक्षय और शारीरिक हानि पर पूर्ण दृष्टान्त।

दूसरे खण्ड में मैं इस विषय को भलीभांति दर्शाय चुका हूं कि जबतक र्य्यंगण हस्तमैथुन वेश्यागमनादि द्वारा वीर्य्य के अपव्यय से संरक्षित न गे भारत का कल्याण होना अति दुष्कर है, क्या वह मनुष्य जो अक-नीय अमूल्यरत्न सृष्टिकारक जीवन मूल को उन्मत्तों के भांति प्रतिदिन वशही होके ऊसर भूमि में फेंक रहा है अकाल मृत्यु से बच सका है ? पुत्र रन, धनवान विद्वान और बलवानों की कोटि में उसकी गणना होगी ? भी नहीं । ... न वीर्य्य ही होने के कारण आर्य्यावर्त का राज्य मुस-लमानों ने ले लिया और असंख्य भकुआ ऐय्याशों को लौंडी गुलाम बना के मारा के लिये बिचारे मिटे मिटाये कपरे कपराये हिन्दुओं के छाती पर आरा चलाने के लिये इसी भारत में छोड़ गये । मुसल्मानों ने भी मय ढाल तरवार जुलाहों के गले में डाल आप दिन रात वेश्यागम-नादि में लिप्त हुये और उधर मरहठों के चित्त पर वीर रस की उत्त-जना प्राप्त हुई अथवा अंगरेजों के सौभाग्य देवता ने उनके द्वारा रास्ता साफ करा दिया कि बिना प्रयास अकंटक राज प्राप्त हुआ, जि-नको सौ वर्ष से अधिक हो गये कि वीर्य्य रक्षाही के प्रताप से भारत का शासन कर रहे हैं, तौ भी कितने अंधों को नहीं सूझता कि जब तक अंगरेज विद्या पढ़ किसी बड़े राज्याधिकार में प्रवृत्ति नहीं होते तबतक विवाह नहीं करते क्योंकि अल्प वीर्य्य में बुद्धि विपर्य्यय रहती है और पूर्ण वीर्य्य की मनीषा शक्ति अनुमति पदार्थ पर झटपट दौड़ती है ।

देख लो एक पक्षवाले नेशनल कांग्रेस के लिये कटिबद्ध हैं दूसरे लोग विपरीत कहते हैं कि यह न होना चाहिये । कांग्रेस अथवा जितने

देशोपकारक कार्य्य होते हैं इनमें प्रथम बहुत परिश्रम और दौड़ धू
करनी पड़ती है और बुद्धि शक्ति जो वीर्य के आधीन है यह चाहती
है कि इस आरंभित कार्य में अवश्य भलाई होगी और इसका अन्त
ल अच्छा होगा सो जो लोग जितेन्द्रिय और वीर्य के अपव्यय से बचे हु
हैं उनकी बुद्धि शक्ति किसी व्यापार अथवा पारमार्थिक कार्य को न
रोकती बल्कि और उत्तेजित करती है और स्वार्थ रक्षा के उपरान्त प
मार्थ में भी उनका मन उद्युक्त रहता है और जो वेश्यादि गमन के द्वा
वीर्य का नाश कर चुके हैं या कर रहे हैं उनका उत्साह दिन प्रति दि
हत और हीन होता जाता है उन्हें आवश्यक स्वार्थ और क्षणिक ड
जो लम्पटता का अन्तिम प्रमोद है चित्त में बसा रहता है उस से उन
मन को अवकाश नहीं मिलता महर्षियों ने जो वीर्य बढ़ाने की अने
औषधियां लिखी हैं वह केवल लाम्पट्य और तुच्छ विषयके लिये नह
किन्तु मस्तिष्क शक्ति और [illegible] धारण और प्रबल साहस की वृद्धि
प्रयोजन से और ब्रह्मचर्य व्रत का भी यही अभिप्राय है कि प्रथम वीर्य
रक्षा से विद्योपार्जन होगा पश्चात् गृहस्थाश्रम आदि के प्रबन्ध में निपुण
ई होगी सो हमारे देश में शास्त्र के विपरीत ब्रह्मचर्य्य का प्रथम ही लो
हो गया, साधारण जनों में तो अल्पावस्था के विवाह और वीस के नी
गर्भाधान के द्वारा अल्प वीर्य्यता और मानुषी सृष्टि की दुर्बलता क
विस्तार हो गया और धनवान तथा प्रभुता वालों का वीर्य्य वेश्या औ
व्यभिचारिणियों के हाथ बिक गया यहां तक नौबत पहुंची कि जन्मा
ष्टमी रामनवमी आदि उपासना पर्व्व में भी वेश्याओं का हाव भा
कटाक्ष मुख्य पूजोपचार समझा गया इस साल माघ मेले में एक ना[illegible]
शाही महन्थ के यहां महीना भर यही मदन महीपति का डंका बजता
रहा सदैव वार वनिताओं के कटाक्ष से दरबार भरा रहता था धन होने
की पूर्णता का प्रमाण इस समय वेश्या ही जिस के विषय भर्तृहरि राज
ऋषि ने यह लिखा है—

"वेश्यासौमदनज्वालारूपेन्धनसमाधिता । कामि भिस्तमहूयन्तेयौवन

दोहा।

गनिका कनिका अगित की रूप समिध मजवूत।
होम करत कामी पुरुष धन जोवन आहूत ॥ १ ॥
बुद्धि विवेक कुलीनता तब ही लो मन माहिं।
काम बाण की अगिन तन जबलों भभकत नाहिं ॥२॥

भगवान मनु ने भी लिखा है कि पर स्त्री गमन से बढ़ कर आयुर्वल
ा हरनेवाला कोई नहीं है "यथा—नातः परमनायुष्यंपरदारोपसेवनं"
ारण यह कि बुद्धि ज्ञान पराक्रम का मूल कारण जो वीर्य्य है सो उसी
नाश और अपहरण की चेष्टा वेश्या लोग करती हैं जिस प्रकार भेदक
ौषधियां कुटकी आदि अँतड़ियों के मल को टूक २ के भेदन करती हैं
से ही शुक्र तत्व को उत्तप्त करने और बाहर निकालने की विविध चेष्टा
्श्या लोग करती हैं लोग उसी को सुख समझते हैं यह नहीं सोचते कि
ाह नस का प्राण खींचे लेती है—जैसा किसी महात्मा का वचन है—

दर्शनात्हरतेचित्तं स्पर्शनात्हरतेवलं। मैथुनात्हरतेवीर्य्यं
वेश्याप्रत्यचराक्षसी ॥

भर्तृहरि जी लिखते हैं—संमोहयन्ति, मदयन्ति, विडम्बयन्ति, निर्भर्त्सयन्ति, रमयन्ति, विषादयन्ति, एताः प्रविश्यसदयं
हृदयंनराणां किंनामवामनयनानसमाचरन्ति ॥

बस बहुत लिखने से शृङ्गार रस के रसिक जन खिन्न होंगे पर क्या
किया जाय शास्त्र कारों ने ऐसाही कहा है ॥

सोरठा। गनिका के रदु पोठ। को कुलीन चुम्बन करै ॥
नट भट विट ठग गोठ। पीक पात्र है सबन को ॥

शृङ्गार रस के रसिक जन तो चाहें जो समझें हों पर स्वाधीनता

और विषय लम्पटता दोष से जो जो अवगुण और बुराइयां उत्पन्न होते हैं उन की गवाही अनेक पुराण और इतिहास दे रहे हैं देखिये ॥

"जब गुन्नौर के राजा को मुसलमानों ने रण में जीता तो उस फौज के एक प्रधान मुसलमान सरदार खां ने चाहा कि गुन्नौर की रानी अति रूपवती है किसी उपाय से उस के साथ भोग करें, उस से मिलने की तदबीर और बन्दिशें करने लगा एक दिन सरदार खां स्वयं रानी के महल में जा पहुंचा और अपने नौकर से उस रानी की दासी को बुला के कहा कि तुम रानी से जा के बोलो कि सरदार खां आप की खातिर खुद मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाये हैं ता कि आप को ख़याल न गुज़रे कि हमारी किसी सूरत में तहक़ीर हुई, अब आप को ज़्यादः इसरार करना अबस है, अगर अब भी हमारी अरज़ को क़बूल न फ़रमाइयेगा तो बस यही समझिये कि आखिर को तो हमारे अख़्तियार में हैं, मगर कोई काम ख़िलाफ़ मरजी के होने में लुत्फ़ नहीं रह जाता आगे महरानी साहिबा को अख़्त्यार है । दासी जा के रानी से सब वृत्तांत सुनाया रानी (शोक में डूब कर मनही मन में विचार करने लगी) हाय एक तो पति के प्राण गये दूसरे यह म्लेच्छाधम मुझे अपनी स्त्री बना कर रखना चाहता है क्या मुझे योग्य है कि क्षत्री बंश में जन्म ले के अपने प्राण प्यारे पति के बध करने वाले की रमणी बन कर जीऊं प्राण परित्याग करना उत्तम है परन्तु आर्य्यकुल वैरी म्लेच्छ की शय्या स्वीकार करना अच्छा नहीं दासी से कहा कि खां साहब से कह दो कि रानी आप से व्याह करना पसन्द करती हैं एक रात का अवकाश मिले कल खां साहब रंग महल में पधारें । दासी ने आ के खां साहब से कहा खां साहब अति प्रसन्न हो डेरे में पहुंचे थे कि रानी के महलों से अमूल्य जड़ाऊ आभूषणादि और रंगीले वस्त्र लेकर ख़ानसामा आया और खां साहब से कहा कि गरीब निवाज़ यह शादी की नज़र महारानी साहबा ने भेजाहै और निवेदन किया है कि कल आप यहीं से ...

त अच्छा प्रातःकाल खां साहब गुस्ल कर वस्त्र आभूषण पहन सवारी
बैठ महलों में गये रानी आदर पूर्वक सजी हुई मसनद पर बैठाया
ड़ी देर गुजरा होगा कि सरदार साहब के सकल शरीर में आग सी
ग गई और मूर्छित हो गिर पड़ा चेहरा नीला पड़ गया नौकर चाकर
र घबड़ा उठे रानी (जब देखा कि पूरा काम हो गया) खां साहब से
हा कि जो होना था सो हो गया यह वस्त्र जो आप पहने हुये हैं
ष से रंगे हैं आप मेरी इज्जत लेने पर तैयार हुये उसके बदले में, मेरी
र आप की मृत्यु एक साथ होगी इतना सुनतेही सरदार के नौकरों
चाहा कि रानी को पकड़ ले रानी महल पर से कूद पड़ी और प्राण
ाग कर स्वर्गधाम का रास्ता लिया इधर खां साहब भी खेमे में पहुंच
र दोज़ख़ का रास्ता लिया पर स्त्री गामियों का यही नतीजा सब को
ोगा और मिलता है।

पाठक गण को तिनकौड़ी बाबू कलकत्ता निवासी के दुर्भाग्यवशता
ोटी अवस्था में फांसी पाने का हाल याद होगा कि जिसका आन्दो-
न सन् ८६ के आर्य्यावर्त भर के सम्बाद पत्रों में हुआ था। तिनकौड़ी
ामक एक धनाढ्य बंगाली का पुत्र जिसकी अवस्था सिर्फ १४ वर्ष की
ी मद्य के नशे में क्रोधातुर हो एक वेश्या (जिसे ५ हजार रुपया दे
ुका था) को ३५ छूरी मारी जिसके कारण फांसी पाया, यह कोई नई
ात नहीं है इसी प्रकार असंख्य आत्मघात रंडियों की बदौलत हुआ
रता है क्योंकि वेश्या प्रसङ्गादि से अधिक शुक्र व्यय जनित मन दुर्बल
ोने से स्वयं आत्म हत्या करने की इच्छा कभी २ बलवती हो जाती है।
हे प्यारे भ्रातृ गणों ! पर स्त्री तथा वेश्या को विष के प्याले के समान
दूरही से त्यागकरो और ऐसे इन्द्रियजित बनो कि अपनी स्त्री के अति-
रिक्त यदि चेत् आप से अप्सरा (परी भी आ के गमनेच्छा प्रगट करै तो
पं० छोलिम्बराज का अनुकरण करो तभी तुम्हारा कल्याण होगा और
देश का मङ्गल कर सकोगे॥

देखिये, दक्षिण द्वीपुर नाम एक नगर था जिसमें वीरेन्द्र नाम एक

राजा रहता था उसी नगर में लोलिम्ब राज वैद्य भी रहते थे और वहाँ सकल कला कोविदा सर्वाङ्ग सुन्दरी रत्नकला नामक वारांगना (वेश्या) भी रहती थी उस वेश्या और उक्त राजासे दोस्ती थी। एकदिन हँसी में राजा ने पूछा, हे लोलिम्बराज! वेश्यागमनमें क्याफलहै? लोलिम्बराज ने कहा महाराज! वेश्या महा पाप शीला होती है "आयुःक्षतिर्विफलता" आदि अनेकप्रमाण शास्त्रोंमें मिलतेहैं इससे वेश्यागमनकरना कोईविद्वान अच्छा न कहैगा। यह वचन सुन राजा सभाजनों को विसर्जन कर अंतःपुर (रनवास) में जा रत्नों से जड़ित सय्या पर लेट गया परन्तु इस चिन्ता से कि कौन उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करै निद्रा न आती भई। रत्नकला ने पूछा हे स्वामिन् आपको नींद क्यों नहीं आती राजा ने कहा जिस उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करैं वह विधि रचो तो हमें नींद आवै। वह हँस कर बोली कि आप चिन्ता त्याग आनन्द से सयन करें, हम कलही इस कामको करेंगी। प्रातःकाल रत्नकला पलङ्ग से उठ अपने गृह में आय निज गृह द्वार को कदली स्तम्भ वन्दनवार गन्ध माल्य आदि अलङ्कारों से चमत्कृत कर सन्ध्या समय दरवाजे पर खड़ी हो लोलिम्बराज की राह जोहने लगी। लोलिम्बराज के सभा में जाने का वही मार्ग था वस आही तो गये, रत्नकला को देख पूछा (किमुत्सवमद्य) आज क्या उत्सव है उसने कहा कि त्रिभुवन जननी भगवती का आज पूजन है हमारी इच्छा है आप भी चलिये दर्शन करिये। उसके मीठी वचन को लोलिम्बराज सुन देवी के दर्शनार्थ उसके साथ भीतर गये, दोनोंको भीतर गयेहुये देखकर पूर्व शिक्षित दास ने केवाड़ा बन्दकरलिया, लोलिम्बराज भीतर भगवती की मूर्ति को न देख चन्द्र चन्द्रिकायत् पलङ्ग को निरीक्षण कर पूछा कि यहपलङ्ग किसलिये है? रत्नकला ने कहा सम्भोगार्थ है, हमारी इच्छा थी कि आप को देवी द[illegible]
लाकर अपनी कामना पूर्ण करैं। लोलिम्बराज ने च[illegible]
विचार कर कहा कि मैं वेश्यागमन नह[illegible]
हो बोली "स्वामतां च स्त्रियं
[illegible] [illegible] आपको

न रोके बोले कि अच्छा तुम्हारे साथ वाणी करके रत दरेंगे शरीर और : करके नहीं (मैथुन आठ प्रकार का होता है)

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं । सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रिया निष्पत्तिरेवच ॥

स्मर्ण (वारंवार चिन्तन करना) कीर्तन (मुख अङ्गादि और उसके ाल चाल की वारंवार तारीफ करना) केलि (हसी दिल्लगी करना)प्रेक्षण प्रेम से देखना) गुह्यभाषण (गुप्त बात करना) सङ्कल्प (सम्भोग करने ी दृढ़ प्रतिज्ञा करना) अध्यवसाय (किसी प्रकार प्रसङ्ग उस्से अवश्य रैं उस्में परिश्रम करना) और (निष्पत्ति संभोग करना) ऋषियोंने यह आ- े को मैथुनही में गणना किया है। बस लोलिम्बराज ताम्बूलरस से (भित्त) ;वालों में हसी दिल्लगी का सम्बोधन सहित रात भर में १२० गद्य पद्य ुक्त श्लोक बना के लिखडाला। प्रातःकाल राजा के सभामें पहुंचे (राजा ो जानताही था) पूछा महाराज रात कहांरहे(लो०)वेश्या के घर(राजा०) हलक्यामिला (लो०) एक पुत्र हुआ (राजा) वह पुत्र कहां है (लो०) उसीके घर में है जाके देख लो राजा जाके दिवालों में श्लोक लिखेहुये देख पर विस्मयापन्न होगया और लोलिम्बराज से क्षमा मांगी (लों०) ने कहा हमने तो क्षमा किया परन्तु अब तुम ऐसा कभी किसी विद्वान के साथ न करना। कहने का तात्पर्य्य यह कि जो लोग अपने अमूल्य जीवन को ानन्द से काटना चाहते हैं वे कभी वृथा वीर्य्य नष्ट नहीं करते क्योंकि ्यों की संयमता यही शारीरिक बल है सो इस पर लोग बिलकुल नहीं देते ॥

कल वेश्या संसर्ग प्रभृति कारणों से देहमें शुक्र का भाग दौर्बल्यादि अनेक दोष प्रायः देखे जाते हैं, और धातु ए के अर्थ वैद्यों के शरणागत हो अनेकानेक औषधों का तरह औषध सेवन करना असङ्गत है, यह ... क का प्रयोजन यह है कि जब तक मूल ि

राजा रहता था उसी नगर में लोलिम्ब राज वैद्य भी रहते थे और वहीं सकल कला कोविदा मयंक सुन्दरी रत्नकला नामक वारांगना (वेश्या) भी रहती थी उस वेश्या और उक्त राजासे दोस्ती थी । एकदिन हँसी २ में राजा ने पूछा, हे लोलिम्बराज ! वेश्यागमनमें क्याफलहै ? लोलिम्बराज ने कहा महाराज ! वेश्या महा पाप शीला होती है "आयुःक्षतिर्विफलता" आदि अनेकप्रमाण शास्त्रोंमें मिलतेहैं इससे वेश्यागमनकरना कोईविद्वान अच्छा न कहेगा । यह वचन सुन राजा सभाजनों को विसर्जन कर अंतःपुर (रनवास) में जा रत्नों से जड़ित शय्या पर लेट गया परन्तु इस चिन्ता से कि कौन उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करैं निद्रा न आती थी । रत्नकला ने पूछा हे स्वामिन् आपको नींद क्यों नहीं आती राजा ने कहा जिस उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करैं वह विधि रचो तो हमें नींद आवे । वह हँस कर बोली कि आप चिन्ता त्याग आनन्द से शयन करैं, हम कलही इस कामको करेंगी । प्रातःकाल रत्नकला पलङ्ग से उठ अपने गृह में आय निज गृह द्वार को कदली स्तम्भ वन्दनवार गन्ध माल्य आदि अलङ्कारों से अलंकृत कर सन्ध्या समय दरवाजे पर खड़ी हो लोलिम्बराज की राह जोहने लगी । लोलिम्बराज के सभा से जाने का वही मार्ग था बस आही तो गये, रत्नकला को देख पूछा (किमुत्सवमद्य) आज क्या उत्सव है उसने कहा कि त्रिभुवन जननी भगवती का आज पूजन है हमारी इच्छा है आप भी चलिये दर्शन करिये । उसके मीठे वचन को लोलिम्बराज सुन देवी के दर्शनार्थ उसके साथ भीतर गये, उनको भीतर गयेहुये देखकर पूर्व शिक्षित दास ने केवाड़ा बन्दकरलिया, लोलिम्बराज भीतर भगवती की मूर्ति को न देख सुन्दर पर्यङ्कादिक पलङ्क को निरीक्षण कर पूछा कि यहपलङ्क किसलिये है? रत्नकला ने कहा आपहीकेलिये है, हमारी इच्छा थी कि आप को देवी दर्शन के बहाने से यहां लाकर अपनी कामना पूर्ण करैं । लोलिम्बराज ने कठिन चिन्त हो अपने विचार कर कहा कि मैं वेश्यागमन नहीं करता । ऐसा सुन वह विलासवती बोली "स्वयमागतां च स्त्रियं त्यजन्तो ब्रह्महत्यां समाप्नुयात्" यह धर्मवच

राजा रहता था उसी नगर में लोलिम्ब राज वैद्य भी रहते थे और वहीं
सकल कला कोविदा सर्वाङ्ग सुन्दरी रत्नकला नामक वारांगना (वेश्या)
भी रहती थी उस वेश्या और उक्त राजासे दोस्ती थी । एकदिन हँसी २
में राजा ने पूछा, हे लोलिम्बराज ! वेश्यागमनमें क्याफलहै ? लोलिम्बराज
ने कहा महाराज ! वेश्या महा पाप शीला होती है "आयुःक्षतिर्धिंफलता"
आदि अनेकप्रमाण शास्त्रोंमें मिलतेहैं इससे वेश्यागमनकरना कोईविद्वान
अच्छा न कहेगा । यह वचन सुन राजा सभाजनों को विसर्जन कर अंतः
पुर (रनवास) में जा रत्नों से जड़ित सय्या पर लेट गया परन्तु इस चि
न्ता से कि कौन उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करै निद्रा न आती
भई । रत्नकला ने पूछा हे स्वामिन् आपको नींद क्यों नही आती राजा ने
कहा जिस उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करैं यह विधि रचो तो
हमें नींद आवै । यह हँस कर बोली कि आप चिन्ता त्याग आनन्द से
सयन करै, हम कलही इस कामको करेगी । प्रातःकाल रत्नकला पलङ्ग से
उठ अपने गृह में आय निज गृह द्वार को कदली खम्भ वन्दनवार गन्ध
माल्य आदि अलङ्कारों से चमत्कृत कर सन्ध्या समय दरवाजे पर खड़ी हो
लोलिम्बराज की राह जोहने लगी । लोलिम्बराज के सभा में जाने का
वही मार्ग था बस आही तो गये, रत्नकला को देख पूछा (कि-
मुत्सवमद्य) आज क्या उत्सव है उसने कहा कि त्रिभुवन जननी भगवती
का आज पूजन है हमारी इच्छा है आप भी चलिये दर्शन करिये । उसके
मीठी वचन को लोलिम्बराज सुन देवी के दर्शनार्थ उसके साथ भीतर गये,
दोनोंको भीतर गयेहुये देखकर पूर्व शिक्षित दास ने केवाड़ा बन्दकरलिया,
लोलिम्बराज भीतर भगवती की मूर्ति को न देख चन्द्र चन्द्रिकायत
पलङ्ग को निरीक्षण कर पूछा कि यहपलङ्ग किसलिये है? रत्नकला ने कहा
सम्भोगार्थ है, हमारी इच्छा थी कि आप को देवी दर्शन के बहाने से यहां
लाकर अपनी कामना पूर्ण करैं । लोलिम्बराज ने चकित चित्त हो स्वधर्म
विचार कर कहा कि मैं वेश्यागमन नहीं करता । ऐसा सुन यह विषादवती
हो बोली "श्यामतां च प्रियं त्यजत्या भ्रूणहत्या भवाप्नुयात्" यह धर्म ग्रंथ
का मत है इसलिये आपको सम्भोग करना उचित है । लोलिम्बराज म-

न्जित होके बोले कि अच्छा तुम्हारे साथ वाणी करके रत करैंगे शरीर और मन करके नहीं (मैथुन आठ प्रकार का होता है)

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं । संकल्पोध्यवसायश्च क्रिया निष्पत्तिरेवच ॥

स्मर्ण (बारंबार चिन्तन करना) कीर्तन (मुख अङ्गादि और उसके बोल चाल की बारंबार तारीफ करना) केलि (हसी दिल्लगी करना) प्रेक्षण (प्रेम से देखना) गुह्यभाषण (गुप्त बात करना) सङ्कल्प (सम्भोग करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना) अध्यवसाय (किसी प्रकार प्रसङ्ग उससे अवश्य करैं उसमें परिश्रम करना) और (निष्पत्ति सभोग करना) ऋषियोंने यह आठों को मैथुनही में गणना किया है। बस छोलिम्बराज ताम्बूलरस से (भित्त) दिवालों में हसी दिल्लगी का सम्बोधन सहित रात भर में १२० गद्य पद्य युक्त श्लोक बना के लिखडाला । प्रातःकाल राजा के सभामें पहुंचे (राजा तो जानताही था) पूछा महाराज रात कहांरहे(छो०)वेश्या के घर(राजा०) फलक्यामिला (छो०) एक पुत्र हुआ (राजा) वह पुत्र कहां है (छो०) इसीके घर में है जाके देख लो राजा जाके दिवालों में श्लोक लिखेहुये देख परं विस्मयापन्न होगया और छोलिम्बराज से क्षमा मांगी (छो०) ने कहा हमने तो क्षमा किया परन्तु अब तुम ऐसा कभी किसी विद्वान के साथ न करना । कहने का तात्पर्य्य यह कि जो लोग अपने अमूल्य जीवन को आनन्द से काटना चाहते हैं वे कभी वृथा वीर्य्य नष्ट नहीं करते क्योंकि इन्द्रियों की संयमता यही शारीरिक बल है सो इस पर लोग बिल्कुल ध्यान नहीं देते ॥

आज कल वेश्या संसर्ग प्रभृति कारणों से देहमें शुक्र का भाग अत्यन्त अल्प तथा दौर्बल्यादि अनेक दोष प्रायः देखे जाते हैं, और धातु वृद्धि एवं पुष्ट होने के अर्थ वैद्यों के शरणागत हो अनेकानेक औषधों का सेवन करते हैं। इस तरह औषध सेवन करना अनकूल है, यह हम नहीं कह सके, हमारे कहने का प्रयोजन यह है कि उन सब दुष्ट विषयों की ओर

दृष्टि न दी जाय गी अर्थात् जिन २ कारणों से उक्त दोष उत्पन्न होते हैं पहले ही तत् विषय में सावधान न हो कर अनर्थक औषध सेवन करने से क्या फल है? कुछ भी नहीं। कारण यह है कि जैसे कोई धनवान मनुष्य मूर्खता से बेपरिमान धन खर्च करने से थोड़े ही काल में जिस तरह एक बारगी दरिद्र हो ऋण रूपी ज्वाला में जलने लगते हैं और वे ही अपव्ययी धनवान स्वयं सावधान न हो के खर्च किया हुआ धन स्वयं न कमाने से अन्त में सहस्त्रों चेष्टा करने पर भी ऋण परिशोध तथा सम्पत्ति रक्षा में किसी प्रकार समर्थ नहीं होते और प्रायः देखा गया है कितने ऋण जाल में जर्ज्जरित जन अन्त में सब सुख विसर्जन कर दरिद्रों की भांति शाकान्न भोजन करके स्वकीय ऋण शोधन में कटिबद्ध हुये तथापि आशा सम्पूर्ण नहीं देखी गई। इसी तरह वे युवक गण वेश्यागमनादि में बे परिमाण धातुनष्टकरनेवाले जिन्हें स्त्री प्रसङ्ग तथा सन्तानोत्पत्ति करनेकी पूर्ण सामर्थ थी, परन्तु अपरमित शुक्र नष्ट करते २ अन्त में एकबारगी धातु हीन एवं धातु दौर्बल्य तथा ध्वजभङ्गादि (नपुन्सक) उत्कट २ रोगाक्रान्त हो (ऋणग्रस्त धनी पुरुष की नाईं) अपार दुःख भोग करते हैं और हजारों औषध सेवन करने से भी तज्जनित रोग से नहीं छूटते। इतनाही नहीं बल्कि वेश्या और परस्त्री के प्रेम में कितने समूल अर्थात् तन मन धन सुख सौभाग्य सब रसातल को चले जाते हैं—देखिये॥

लङ्केश्वरो जनकजा हरणेन वाली तारापहारकतया पृथ कीचकाख्यः। पाञ्चालिका ग्रहणतो निधनं जगाम तच्चेतसापि परदार रतिं न काङ्क्षेत्॥

जानकी जी के अपहरण से रावण कैसी दुर्दशा के साथ मारा गया, तारा (सुग्रीव की स्त्री) के हरण से वालीकी मृत्यु हुई और द्रौपदी के हरण से कीचक का वध हुआ, अतएव बुद्धिमानों को चाहिये पर स्त्री गमन करने की इच्छा कभी मनमें भी न करें-और भी देखिये पुरुरवा राजा उर्वशी अप्सरा की प्रेम रूपी फांसी में फस कर तहस नहस हो गया इस लिये सत्पुरुष इस अमूल्य जीवन को क्षणिक सुख [illegible] विनष्ट करना नहीं चाहते॥

हस्तमैथुनादि निषेध ।

वेश्यादि गमन द्वारा जो कुछ अनिष्ट इस शरीर को होता है उसे भली भांति दर्शाय चुके हैं, वैसाही वरिक उससे कुछ अधिक हानि और शरीर की निर्बलता एवं अकाल मृत्यु हस्तमैथुन और गुदामैथुन से होती है जिस का कुछ २ हाल हम आरोग्यदर्पण के द्वितीय खण्ड में लिख भी चुके हैं ॥

इन दोनों कर्मों से लिङ्ग निर्बल, टेढ़ा अग्र भाग स्थूल और शक्ति हीन हो जाता है। सुन्ते हैं कुरान में कोई आयत है कि महम्मद ने कहा है कि यदि स्त्री गर्भवती हो और पुरुष को काम की इच्छा उत्तेजित हो तो वह गुदा मैथुन करै, ऐसे पुरुष लखनऊ काशी आदि स्थानों में अधिक मिलैंगे। यद्यपि ऐसे २ अनाचार बंद करने को हमारी सरकार ने खास कानून जारी कर दिया है परन्तु जो कुसंस्कार बहुत दिनों से मूर्खों के दिल में जमा है एकाएकी छूटना महा कठिन है। इस स्थल में हमारी राय है कि यदि अपनी स्त्री गर्भवती हो और ६ मास से ऊपर हो उस समय यदि पुरुष अति कामोन्मत्त हो (जिसमें प्रसंग न करने से रोग होने का सम्भव है) तो वेद की आज्ञानुसार नियोग करना उत्तम है, अभावे-सति किसी आरोग्य वेश्या से प्रसङ्ग कर लेना अच्छा है परन्तु गुदा मैथुन करना पुरुष के लिये किसी हालत में अच्छा नहीं है। यह बात हम निस्सन्देह कह सक्ते हैं कि ऐसे २ दुष्ट कर्म प्रथम हमारे आर्य्य भाइयों में नहीं थे मुसलमानों के राज से इसका प्रचार हुआ है और उन्हीं म्लेच्छों के साथ अधिक सहवास होने के कारण आर्य्य सन्तान गण भी उक्त दुर्गुणों में परिपक्क और निपुण हो गये हैं ॥

हस्त मैथुन पहिले भी था प्रायः लोगों के मुख द्वारा श्रवण करने में आया है कि भगवान विश्वामित्र ऋषि ने हस्तमैथुन सृष्टि को किया था परन्तु प्राचीन सत् ग्रन्थों में इसका कोई प्रमाण नहीं पाया जाता, लेकिन धर्म शास्त्र में इसके प्रायश्चित्त का विधान पाया जाता है और प्रायः

वैद्यक के सभी ग्रन्थों में गरमी रोग होने का यह कारण लिखे हैं (हस्ताभिघातान्नखदन्त घातात्) हस्ताभिघात (हस्तमैथुन) से नख और दन्त के अभिघात (भाजे २ कुकर्मी लोग लड़कों के मुख में लिङ्ग डालते हैं) से उपदन्श रोग होता है इससे ज्ञात पड़ता है कि यह कर्म बहुत काल से प्रचलित है । हस्त मैथुन में लोगों की क्यों प्रवृत्ति हुई यह निर्णय करना कठिन है । इतना कह सक्ते हैं, एक तो पिता के स्वप्न और उष्ण वीर्य्य का दोष, दूसरे ठीक २ बालकों की रक्षा का न करना, तीसरे शिशु काल से ही बुरे २ बालकों का संसर्ग इत्यादि कारणों से मुकुलित वीर्य्य का मुख असमय में ही खुल जाता है । बस लिङ्ग स्थान में जहां किसी वस्तु का रगड़ लगा सुर सुरी बोध होने से एक प्रकार का आनन्द आना आरंभ हुआ तब उसे हस्त द्वारा शिश्न का अग्रभाग खोलने और बन्द करने की इच्छा होने लगी । थोड़ेही काल ऐसा करने से वीर्य्य स्खलित हो जाता है। बस जहां एक दफे उक्त क्रिया से अति आनन्द मिला मूर्ख लोग उसी में लिप्त हो जाते हैं और उसी सुख को अपने इष्ट मित्रों से कह कर उन्हें भी अन्ध कूप में गिरा देते हैं, यह नहीं जानते कि यही सुख हमको कुछ काल पाकर सर्व नाश करेगा। शरीर क्षीण बल वीर्य्य विहीन रमण शक्ति से हीन और मन मलीन कर देगा, शरीर निस्तेज, बुद्धि का ह्रास शारीरक और मानसिक स्फूर्ति नष्ट हो जायगी। हमको इस संसार में जड़ पदार्थ की भांति होकर जीवन काटना पड़ेगा, हमको सन्तान रहित होने से दूसरे के बालकों को देख ललचाना पड़ेगा, जन्म भर वैद्य हकीमों की खुशामद करनी पड़ेगी ।

कुछ दिन हस्तमैथुन करने वाला बालक युवावस्था में शुक्र मेह आदि रोगों से ग्रसित होता है । शौच करते समय मूत्र के पहले या पीछे वीर्य्य का निकल जाना और स्वप्न दोष से भी पीड़ित होना, तथा प्रसङ्ग में वीर्य्य का शीघ्र पात होना आदि उत्पात होता है । लिङ्ग भी क्रमशः आकार में छोटा और निर्बल हो जाता है। शिर कमजोर, बिचार ... और नेत्र भी कुछ ज्योति क्षीण हो जाते हैं । ... अंगरेजी ग्रंथ है

हानि पए जाते हैं जिन का स्वरूप अण्डाकृति समान मस्तक और पुच्छ उन्का सूक्ष्मत होता है।

केवल इतनेही लक्षणों पर निर्भर नहीं है, इस नीचवृत्ति क्षुद्र क्रिया हस्तमैथुन से इस शरीर को क्या २ हानि पहुंचती है और उसके द्वारा कौन २ सा दुःख भोगना पड़ता है, लेखनी में ऐसी पूर्ण शक्ति नहीं है जो चित्र खींच कर दिखा दे परन्तु उक्त घृणित कर्म करने वाले युवक गण उ परोक्त लेखोंको ध्यानदेके पढ़ेंगे तो आपही उनकेहृदयमें चित्र खिंच जाय गा और वारंवार अपने किये हुये दुष्कर्मों पर पछतायेंगे और आशा है कि बहुतसे लोग जो अज्ञानता वस इस अमूल्य जीवनमूल में अपने हांथसे कुल्हाड़ी मार रहे हैं चेत जांयगे, और कितने चेतते भी होंगे। जब से आरोग्यदर्पण में हस्तमैथुन द्वारा शरीरनाशक कुशीलतसे वीर्य्यके सत्यानाश करने का दोष और भविष्यत में अनेक क्लेश होने का सम्भव दिखलाना आरंभ किया है तब से अनेक चिट्ठियां उन युवकगणों की हमारे पास आई हैं और आती जाती हैं जो अज्ञानता वस होकर इस सत्यानाशी कार्य्य में लिप्त हो अपने अमूल्य जीवन को वृथा गवाने में कटिबद्ध थे। ये लोग लिखतेहैं। महाशय! भवदीय रचित आरोग्यदर्पण को जिसमें ह स्तमैथुन द्वारा वीर्य्यपात का दोष दिखलाया है पढ़कर पश्चाताप किया और शपथ किया कि आज से अब ऐसा दुष्टकर्म कभी न करेंगे परन्तु महाशय जो मैं इस काम को बहुत दिनों तक करता रहा उस कारण से मैं इतना दुर्बल होगया हूं कि मेरे कमर में दर्द रहता है, पढ़ने में चित्त नहीं लगता, कितनाहू रटते हैं परन्तु याद नहीं होता है, शिर कमजोर होगया है कलेजा कभी धक २ करने लगता है, मन उदास रहता है और बुरे २ ख्यालात् सूझते रहते हैं इत्यादि। इस की कोई दवा लिखिये या आप के औषधालय में तैय्यार हो तो भे०पे० पारसल द्वारा भेजदीजिये।

पाठकगण, ये लोग उपरोक्त लेखों के अतिरिक्त और भी अपनी भीत री मर्मों को जो निरर्थक वीर्य्य पात के प्रभाव से उन लोगों को प्राप्त

नहीं लिखा । इससे जान पड़ता है कि बालकों के दिल पर उस लेखका असर अधिक हुआ है, ईश्वर ऐसाही अच्छा असर सब के दिल पर पहुंचावें । बस इस लेख को मैं यहीं समाप्त करताहूं । आगे कामशास्त्र के अनुसार स्त्री पुरुषों के लक्षण और जो वेश्यागमन में लिप्त हैं और ऐसे चित्त के हैं कि उनके समझाने में विचारे आरोग्यदर्पण की क्या ताकत है वे ब्रह्मा के उपदेश को भी न मानेंगे तोभी उन लोगों के उपकारार्थ यथा शक्ति कुछ लेख देतेहैं ।

कामशास्त्ररहित गमन निषेध ।

पाठकगण को याद होगा मैं इस वाक्य को लिख चुका हूं "कोक पढ़े बिन रति करै सो नर पशू समान" जो मनुष्य काम शास्त्र के जाने बिना मैथुन करता है वह तद्विषयक सुख से वञ्चित हो शरीर से भी निकम्मा हो जाता है । हमें यह कहते शोक होताहै कि आज भारत के प्राणी गण अत्यन्त रोग ग्रस्त क्यों हो रहे हैं ? काम शास्त्र के न जानने से, शायद लोग यह जानते होंगे और प्रायः यह भी कहदेतेहोंगे कि कामशास्त्र तो विषयी पुरुषों ने बनाया है । जैसे अपने आनन्द करने के लिये शास्त्रमत ब्राह्मणों ने स्थापनकर लियाहै, सो नहीं । व्यभिचार कर्म, परस्त्री गमन और अति विषयसेवन ये तो अवश्य लम्पट और कुत्सित पुरुषों के काम हैं परन्तु रीति पूर्वक स्वदार गमनादि में काम शास्त्र का ज्ञान बहुत उपयोगी है, क्योंकि काम शास्त्र स्त्री पुरुष के प्रमोद का बढ़ाने वाला है कि जिसकी क्रिया से उत्तम सन्तान हो सके हैं । अतएव उचित और प्रयोजन मात्र काम शास्त्र का ज्ञान और पाणिग्रहीता वधू का सङ्गम शिष्ट सम्मत है । यह भी ठीक है कि जो जिसके गुणको नहीं जानता उसकी निन्दाही करता है । काम शास्त्र आयुर्वेद का अंतिम भाग है । ऋषियों ने जब देखा कि लोग अति कामातुर होकर अज्ञानतासे अमूल्य रत्न और जीवन के सर्वस्व बीज को वृथा नष्ट करने लगे हैं तब समय आयुर्वेद को मथ कर लोकोपकारार्थ काम शास्त्र एक जुदा शास्त्र ही बना दिया । उसी से चुन कर पं० कोक ने निज नाम की संहिता

आनन्द है वह कदापि लाभ नहीं होसक्ता। जैसे वेश्यागमन में जिसे हम भली भांति आ०द० के दूसरे खण्डमें दिखला चुके हैं।

नैसर्गकी आदि प्रीति के लक्षण।

अभ्यासविषयासाध्यादम्पत्योः सहजातुया। सान्द्रानिगड़भूताच प्रीतिर्नैसर्गिकीमता॥

मालाचन्दनभोज्याद्यैर्विषयैर्विहितातुया। प्रीतिर्विषयजा प्रोक्ता समयोगेसमास्मृता॥

आखिटदेवपूजादिकेलिसङ्गीतशर्मसु। अभ्यासयोगदाद्वृद्धिं यातिमाभ्यासकीमता॥

(अभ्यास विषय साध्य) पासही विषय है जिस्में कोई तरदुत नहीं ऐसी स्वभावज प्रीति विवाह होतेही घोर बेड़ी के समान आपस में हो जावे सो छुड़ाने से न छुटै उसको नैसर्गिकी प्रीति कहते हैं। यह प्रीति उसी अवस्था में होसक्ती है जब १२ वर्ष से ऊपर उमर वाली स्त्री का २० वर्ष से ऊपर उमर वाले पुरुष के साथ विवाह हो, अन्यथा नहीं। जो प्रीति माला, अतर, मिठाई, वस्त्र, आभूषण, अथवा कोई लालच वस्तु के लेने देने से प्रीति हो उस प्रीति को विषयजा प्रीति कहते हैं। समान योगों को करके अर्थात् स्त्री और पुरुष रूप से यौवन से, धन से तथा कुल आदि हर वस्तुओं से समान होने के कारण जो प्रीति भई हो उसे समा प्रीति कहते हैं।

अब अभ्यासकी प्रीति का वर्णन करते हैं। आखिट अर्थात् शिकार खेलने से जो प्रीति हो (इससे मालूम होता है कि पूर्व समय में स्त्रियां भी शिकार खेलने जाती थीं अथवा पुरुषही कहीं शिकार को गया हो किसी स्त्री से प्रीति होवे जैसे शकुन्तला और दुष्यन्त की प्रीति) तथा देव पूजन से (जो देखने में आता है कि मन्दिरों में नित्य २ देवपूजनार्थ स्त्री पुरुषों के जाने से किसी किसी से परस्पर बड़ी गहरी प्रीति होजाती है। यहां तक कि देवपूजन

लड़की को मुख उसकी देखी की पून, छाती से छपटाय इत्यादि
सो तो प्रसिद्धही है कि उत्तम गाने वा बजाने वाले पर प्रायः स्त्रि-
त होजाती हैं, तथा उत्तम गाने बजाने वाली स्त्री पर पुरुष भी
ा कर प्रीति बढ़ाते हैं। और अभ्यास योग से जो प्रीति बढ़ती है
ाई २ पुरुष किसी २ स्त्री से रगड़ा करते २ प्रीति बढ़ाय लेते हैं।
भी किसी २ पुरुष को इसी प्रकार के रगड़े से प्रीतिकर बनाय लेती
भ्यासकी प्रीति कहते हैं॥

कल हमारे उच्च जातियों में जिस प्रकार आधुनिक विवाह की
ंध गई है अर्थात् छोटे २ बच्चों को पकड़ के उनके माता पिता
र देते हैं--कहीं लड़का आठ बर्षका तो लड़की दश बर्षकी, कहीं
ड़का दोनों पांच २ छः २ वर्ष के होते हैं यहां तक की लड़की
गोदी में लेके भवरी घुमाते हैं। भला बतलाइये इस विवाह से
में उपरोक्त प्रीतियों में कोई भी प्रीति मानी जा सक्ती है?
ाव है कि उन बाल विवाह वाले दम्पतियों से उनकी जवानी में
दोनों से प्रीति होती होगी? कभी नहीं। क्योंकि जब लड़की
ानी में आई तो लड़का ठाकुर लड़कही रहे, स्त्री क्यों बरदास्त
जिसके अङ्ग में ऋषियों ने पुरुष की अपेक्षा अष्टगुण अधिक काम
कहा है वह क्योंकर उस काम के वेग को रोक सकैगी? बस,
ी आदि प्रीतियों की ओर झुक पड़ीं, पुरनियों ने जादा दबाव
क, यारी कहारों का आसरा लेना पड़ा, कहीं गर्भ रह गया, बड़ी
बधाई बजने लगी, घर की बड़ी बूढ़ी बूढ़े कहने लगे कि हमारे
बच्चे की बहू के चातुर्मास का गर्भ है बस बरही आदि के लिये
टने लगा। यद्यपि महल्ले की औरतों में गर्भ रहने का कारण
ा है, पर कह कौन सक्ता है? क्योंकि घर घर की तो यही दशा
जब लड़का महाराज जवान हुये तो उनको अपनी स्त्री ज्यादा
कारण फीकी लगने लगी (क्योंकि ऐसी अवस्था में लड़के की

ी चढ़ते २ लड़की महरानी तीन चार बच्चे वाली होगई स्थन फूल कपोल पिची होगये, आंखों से रसीली चितवन जाती रही बस यौ- का तिलाञ्जुलही समझिये) फिर इसके साथ बोलना तो एक तर्फ उसकी ओर निगाह उठा के देखते भी नहीं, छैल चिकनियां बन बजार सरायों में कोठी कोठा झाकने लगे, कहीं जमा वाले ठहरे तो आध कौवा परी को बैठाय लिया, उससे भी पेट न भरा तो अहरिन ान, चमारिन आदि ढूढ़ने लगे।

उधर दुलहा देव की करनी सुन २ के दुलहिन देई आग भभूला होने , दिन २ भर रोटी न खाना, चूल्हे में आग न बारना, बरतन भांड़ा डालना, इत्यादि रोजही कलह मचने लगा, इतनाही नहीं, माता ा को भी दुख झेलना पड़ता है, वह भी वैरागड़ों से विभूति मांगती ती हैं और कहती हैं भैया मोर ललनवा बेटौना अपनी मेहरिया नाहीं चाहत कुछ यतन बताओ तुम्हार पुजैया करिहैं इत्यादि, ईश्वर ा भारत का भी कल्याण होगा ?।

परकीया लक्षण।

अब हम उन स्त्रियों के लक्षण बयान करते हैं जो पर पुरुष को चा- वाली हैं। यदि नीचे लिखे हुये लक्षणों से स्त्रियां युक्त हों तो जान ा कि (चाहे जिस लालच से) हमको अवश्य चाहती है। यथाः—

स्वेहंमनोभवकृतंकथयंतिभावा नाभीभुजस्तनविभूषणदर्श ानि। वस्त्राभिसंयमनकेशविमोचणानि भ्रूक्षेपकम्पितकटाक्ष निरीक्षणानि ॥

का ... प्रगट करते हैं। नाभी, भुजा, छाती, ... एक विलक्षणता के साथ, जैसे प्रीतम ... से हेके छाती के कुछ ... उसने स्वयं ऐसा कियाहै

घूंघट अथवा अञ्चल या बांह के ऊपर के वस्त्रों को बारंबार सुधारना, बालों को आगे के तरफ छिटकाना, भौंहों को चढ़ाके तिरछी निगाहोंसे देखना इत्यादि लक्षण परपुरुष के चाहने वाली स्त्रियों में देखे गये हैं। परन्तु यह लक्षण प्रथम प्रेमकी सीढ़ी का है जब अधिक प्रेम बढ़ जाताहै सिर्फ सहवास करना बाकी रहता है उस अवस्था के लक्षण यह हैं-जैसे।

प्रीतम प्यारे को देखके खखार कर थूकना, बहुत हसना या गीत गाना सेज से उतर कर अथवा बिछौने से सरक कर पास आ बैठना, अङ्गों को तोड़ना, या जँभाई लेना, गरीब स्त्री है तो कुछ द्रव्य या वस्त्र आभूषण की याचना करना, स्त्री धनवान है तो उस पुरुष से कहना कि तुम्हारे शरीर पर अमुक गहना या वस्त्र बहुत अच्छे लगते हैं क्यों नहीं बनवा लेते हो अथवा कोई वस्तु या अपनी अँगूठी पहिरने को देना, उसे देख के अपने बालक का अथवा किसी सहेली का मुख चूमना, या अपने बराबर की स्त्री के साथ हसी दिल्लगी करना, कान खजुवाना और पीठ पीछे अपने प्यारे की बड़ाई करना।

गहरी प्रीति के लक्षण ।

इमांचविन्द्यादनुरक्तचेष्टांप्रियाणिवक्तिस्वधनंददाति । वि लोक्यमंहृष्यतिवीतरोषाप्रमार्ष्टिदोषान् गुणकीर्तनेन ॥ तन्मित्र पूजातदरिद्विपित्वंकृतस्मृति:प्रोषितदौर्मनस्यम् । स्तनौष्ठदा नाभ्युपगूहनंचस्वेदोऽथचुम्बाप्रथमाभियोग: ॥

मीठी वचनों का बोलना, धनादि वस्तुओं से सत्कार करना, किंचाहू क्रोध में बैठी हो देखतही प्रसन्न होजाना, उसके दोषों पर ध्यान न देके हमेशा उसकी तारीफ करना, उसके मित्रों की खातिरदारी करना और बैरियों से अति द्रोह रखना तथा अपने प्यारे के चोदोंगी भी सत्कार को बहुत मानना और याद रखना, उसके परदेश में रहने से या परदेश जाने के नाम सुनने से निहायत रञ्ज करना, छाती का छूना, ओठों का चुम्बन

छटपटा लेना और बारंबार पसीने का आजाना आदि लक्षण अधिक होने से प्रायः देखने में आते हैं।

परपुरुपरत स्त्रियोंके संकेत।

राचीविहारजागररोगव्यपदेशपरगृहेचणिका:। व्यसनोत्स स्थसङ्केतहेतवस्त्रैपुरच्याथ॥

रात में घरके बाहर निकलना, कहीं अपने भाई बिरादरी के घर जावे प्रायः दिया जलने के बाद अपने घर आवे, रतजगे में अदबदाय के रात भर जागना, रोग के बहाने से पड़े रहना और वैद्य हकीम के दवा कराने जाना, भोजन न करना, नीच की स्त्री तथा पुरुषों से चीत करना, इधर उधर की बातें पूछना इत्यादि परपुरुष रत स्त्रियों लक्षण होते हैं। इन स्त्रियों के दूती दूत, भी प्रायः नीच जाति के होते हैं, लिखा भी है।

भिक्षुणिकाप्रव्रजितादासीधात्रीकुमारिकारजिका। माला कारीदुष्टाङ्गनासखीनापितीदूत्य:॥

भीख मांगने वाली, वैरागिन, टहलनी, बुढ़िया लड़कियां, धोबिन, लिन, बुरे चाल वाली स्त्री, सखी, और नाइन, परपुरुष रता स्त्रियां उक्त लोगों से दूती का काम कराती हैं, इन लोगों के द्वारा अपना हाल ने प्रीतम के पास पहुचाना और उनका हाल सुन्ना—बाजी २ स्त्रियां कर्म में ऐसी पक्की होती हैं कि पतिव्रता स्त्री को भी पर रता बना हैं, और कितनों का तो घर कुटुम्बादि छुटा के आजन्म के लिये ा बना देती हैं।

अलभ्य स्त्री।

भर्तस्नेहवतीदृढ़ैकमनिता प्रेम्णाविहीनाभृशं सेर्प्याभूरि-सुताचपाभरयुतागुर्वादिभीतिस्थिता। प्रायेपार्श्ववर्तीतथापर-

चनालापैविरतासदा निर्लाभाव्यभिचारयार्मशिनुधैःदुर्लित-
साध्यास्त्रुता ॥

जो स्त्री अपने पति में अत्यंत प्रेम रखती हो, या एकही पुरुष में आसक्त हो, हरएक पुरुष के साथ प्रेमहीन हो, इर्षा जिस्में अधिक हो और अधिक लड़के वाली, बहुत लजाने वाली, सास ससुर ज्येष्ट आदि घर के बड़े पुरुषों से अधिक भय खानेवाली (अर्थवती) इसका अर्थ यह है कि धनकी कांक्षा रखती है । इस अर्थ से यह आपत्ति आती है कि प्रायः स्त्रियां धनकी लालच से पर पुरुषरता हो जाती हैं इसका अभिप्राय यह है कि (अर्थवती) अर्थात् धनवान हो, परपुरुष से बातचीत करने में निरन्तर लज्जित और निर्लोभ हो प्रायः ऐसी स्त्रियां व्यभिचार कर्म में कुटनियों करके नहीं फंसती हैं । उपरोक्त लक्षण युत स्त्रियों को देख दुष्ट पुरुष उनके मिलने की आशा न रक्खें वे अधर्म्मियों करकेप्राप्त नहीं हो सक्तीं ॥

सहज प्राप्त स्त्री ।

मार्गादिश्रांतदेहाचिरविरहवतीमासमात्रप्रसूतागर्भालस्या-
चनव्यज्वरयुततनुश्चात्यक्तमानाप्रसन्ना । स्नातापुष्पावसानेन-
वरतिसमयेसंघकालेवसन्ते । प्रायःसंपन्नरागास्मृगशिशुनयना-
स्सुमसाध्यारतेस्यात् ॥

भावार्थः—इतनी स्त्री अलबता छल छिद्रयुत कुटनियों को अथवा चतुर, रूपवान, धनवान पुरुष को लाभ हो सक्ती हैं । जैसे मार्ग से थक गई हो या मार्ग से भूलगई हो * बहुत दिनों की बिरहवती या जिसे

* एकदिन एक विमई लाला हमसे कहने लगी कि हम मुहर्रम के नवईं तारीख को १२ बजे रात को चौक में ताजिये देखने गये, जहां अधिक भीड़ भाड़ थी देखा कि एक बहुत हसीन नौजवान किसी बड़े मुसलमान के घर की औरत अपनी संग की औरतों से छूट कर व्याकुल सी इधर उधर घूमरही

अनेक दिनों से पुरुष से समागम न हुआ हो, महीना मात्र की प्रसूता हो, गर्भवती (लड़का होने के कुछ मास बाद और ५-६ मास तक गर्भ रहते स्त्रियों को मैथुनेच्छा अधिक रहती है) आनन्दयुक्ता, नवज्वरवाली, मानहीना, जो बहुत हँसनेवाली हो, मासिक धर्म से स्नान करचुकी हो, प्रथम २ यौवन का उमङ्ग उठा हो, वर्षा और वसन्त काल में तथा जिसकी अत्यानन्दा योनि हो, ऐसी स्त्री रति के अर्थ बहुत सहज में प्राप्त हो सक्ती हैं ॥

पतिध्रुक् स्त्री के लक्षण ।

नाभिपश्यतिभर्तारं नोत्तरंसम्प्रतीच्छति । द्विषोगैसुपका-
प्रोतिसंयोगेचातिसीदति ॥ शय्यामुपगताशेतेवदनंमार्ष्टिचुम्ब
ने । तन्मिन्नदृष्टिमानस्तुविरक्तानाभिनन्दति ॥

जो स्त्रियां अपने पति को नहीं चाहतीं उनके लक्षण इस प्रकार लिखे हैं । पति के सन्मुख न देखना, इसके बोलना कौन कहै पति कुछ कहै अथवा कुछ पूछे तो उसकी बात का उत्तर भी न देवै, जब तक पति घर में रहै चुप २ बैठी रहै और मुख लटकाये रहै और जब पति घर से

है । हमने उससे पूछा कि तुम कौन हो क्यों भटकती फिरती हो हमने कहा कि [illegible]

बाहर चला जावे तो वहीं प्रसन्न रहे और उसके घर में आने से दुःखी हो। पहले तो कभी अपने पति के साथ एक संग पलङ्ग पर सोवे नहीं यदि पलङ्ग पर जाय भी, कि तो सो रहे या करवट फिर जावे, अगर पति मुख चुम्बे तो झट गाल पोछ डाले । पति के मित्रों से शत्रुता रखना और पति कैसाहू उसे चाहे परन्तु यह नराजही रहे ॥

स्त्रीणां वैराग्य हेतु ।

कार्पण्यादतिमानरोगविरहैःदौर्गादिपारुष्यतो मालिन्या सममङ्गतादिभयतःशोकाद्दरिद्रादपि। भर्तुर्याऽन्तनुतादिभिश्च वपुषःकाठिन्यतःशङ्कना दोषाणांचवृथाप्रथात्निर्वनितावैराग्य मुच्चैःसदा ॥

निम्न लिखित कारणों से प्रायः स्त्रियां उदासीन बनी रहती हैं-जैसे अत्यन्त कृपणता से (पति के अधिक सूम होने से स्त्री उदास रहती है) अति मान (जादा प्यार करने से ऐसी घमण्डिन हो जाती हैं कि हमेशा मानही मटका रहता है) पति के रोगी बने रहने अथवा व्यापार पुरुषार्थ रहित होनेसे असमं-अर्थात् असमानता से तात्पर्य यह कि स्त्री पुरुष उमर में, यौवन में, कुल आदि में परस्पर बराबर न हो। पति की मूर्खता से,(भयतः) सास ससुर जेठ और पति के अधिक डरसे भी स्त्रियां उदासीन रहती हैं) शोक से, दरिद्रता से, पति का देह अत्यन्त दुबला, हड़ीला, तथा अत्यन्त कठोर होने से, अत्यन्त शङ्का युत रहने से, और व्यभिचारादि मिथ्या दोष लगानेसे इत्यादि कारणों से स्त्रियों के मन में पुरुष की ओर से विरक्तता उत्पन्न होता है ॥

स्त्री के बिगड़ने का लक्षण ।

पितृसदननिवासःसङ्गतिःपुंश्चलीभिः प्रवसनमपिपत्युर्मेधर्का सेर्ष्यताच । वसतिरघचपुंभिर्दुष्टशीलैस्त्ववश्यम् सतिरपिनिज नस्तैर्यापितांनाशहेतुः ॥

स्त्रियां नीचे लिखे हुये कारणों से प्रायः बिगड़ जाती हैं-सर्वदा पिता के घर में रहना (पिता के गृह में निडर और परदा रहित रहती हैं) दुष्ट स्त्रियों के साथ बैठना उठना, उनसे मित्रता रखना, उनके साथ मेले ठेले में जाना, पति के परदेश रहने से और उन पर किसी का दाब न रहने से, अथवा बुड्ढे पति के होने से (भला बतलाइये जो लोग अपने बुढ़ाई अवस्था में बाला के साथ विवाह करते हैं मुमकिन है कि यह बाला पतिव्रता हो ? कभी नहीं। बुड्ढों को चाहिये कि ज़ादा उमर वाली विधवाओं के साथ विवाह करें) पति के अधिक ईर्षा करने से, तथा ऐयाश पुरुषों में बैठ कर हँसी दिल्लगी करने से निज वृत्ति के लोप होने से स्त्रियां व्यभिचारिणी होती हैं। यह तो अक्सर देखने में आया है कि यदि अति रूपवती स्त्री किसी नीच कुल में अथवा किसी गरीब के घर में होने से व्यभिचारिणी हो जाती हैं॥

सम्भोग समय के भेष यह है।

स्नातश्चन्दनलिप्ताङ्गःसुगन्धःसुमनोन्वितः। भुक्तवृष्यासुवसनः सुवेषःसमलङ्कृतः। ताम्बूलवदनःपत्न्या मनुरक्तोऽधिकस्मरः। पुत्रार्थीपुरुषोनारी सुपेयाच्छयनेशुभे॥

युत, कामवान हो प्रसङ्ग करैगा वैसाही रूप यौवन, बल

सन्तान उत्पन्न करैगा ॥

गर्भाधान विधिः ।

यद्यपि गर्भाधान की विधि दूसरे खण्ड के आरोग्यदर्पण

हैं तथापि वैद्यक मत से इस स्थल में पाठकगणों के उपकार

लिखते हैं । गर्भाधान किसे कहते हैं (गर्भस्याऽऽधानं वीर्यस्य

करण' यस्मिन्येन वा कर्मणा तद्गर्भाधानम्) गर्भ का धारण या

में वीर्य्य का स्थापन करना जिस कर्म से होता है उसे गर्भाधान

जैसे बीज और क्षेत्र उत्तम होने और विधि पूर्वक बीज के बोने

उत्तम प्रकार सींचने से अन्नादि पदार्थ मोटे घने और बलवान

हैं उसी प्रकार उत्तम बलवान ब्रह्मचारिणी स्त्री पुरुषों के संयोग से

भी उत्तमही होते हैं और उसीके साथ यह भी है कि स्त्री पुरुष जि

कार की चिन्तना करै उसी प्रकार सन्तान होगा । शङ्खसंहिता में

भी है "चित्तेन भावयति दूरगताऽपियं स्त्री गर्भं बिभर्ति सदृशं पुरुषस्य त

मैथुन के समय यद्यपि स्त्री दूर है परन्तु चित्त से जिस पुरुष की चि

करैगी उसी के सदृश गर्भ धारण होगा, यही बात चरक मे भी सिद्ध हो

है "गर्भोपपत्तौ तु मनः स्त्रियाय जन्तु व्रजेत् तत्सदृश प्रसूते" इससे मा

यित होता है कि स्त्री पुरुष जैसे पुत्र और कन्या की कामना करैं सद्रूप

उन पदों का चिन्तन करने से वैसाही सन्तान उत्पन्न कर सक्ते हैं इसी

लिये रजोधर्म से स्नान करके स्त्री को प्रथम पतीही का दर्शन करना लिखाहै ।

उत्तम सन्तान करने की विधि, सुश्रुतसे ।

यदि स्त्री ऐसी इच्छा करै कि मेरे श्रेष्ठ पराक्रम बल बुद्धि युत सज्जन

सिंह के समान तेजस्वी सन्तान उत्पन्न हो तो रजोधर्म के चौथे दिन शुद्ध

स्नान कर उस दिन से सात दिन पर्य्यन्त कुछ जवों का सत्तू घृत मे मि

लाय बछड़ा सहित गौ के सौधे हो ऐसी श्वेत गौ के दूध में मिलाय, चांदी

पदा कांसे के पात्र में भर प्रातःकाल नित्य सेवन करे या पुराना साठी का चावल अथवा जौ के पदार्थों को पूर्वोक्त गौ के दही, सहत और घृत अथवा दूधही के साथ भोजन करे। नित्यप्रति सुवासित जल से स्नान करे, केशर, कपूर और सफेद चन्दन गुलाब के अर्क में घोट अङ्ग में लेपन करे, खूब मुलायम श्वेत वस्त्र धारण करे, सुन्दर आसन पर बैठे, सुखद सेज पर शयन करे, सुन्दर सवारी रथ जोड़ी पर चढ़के अथवा उत्तम तुरंग पर चढ़के साम सवेरे आरोग्यकर वायु का सेवन करे, काम, क्रोध, लोभ, मोह मात्सर्य रहित रहे, उत्तम सजे हुये कमरे में रहे, हर समय चित्तको प्रसन्न रक्खे, सुन्दर, स्वरूपवान, चतुर और मीठी वचन बोलने वाली प्रेमी सहेली अथवा टहलुइन पास रहे (शब्द) गान या मनोहर बोलने वाली चिड़ियों की आवाज (स्पर्श) तकिया आदि मुलायम पदार्थ बारंबार छूना (रूप) तस्वीर आदि देखना (रस) ताम्बूल अथवा कोई रस को चाटना (गन्ध) अँतर सूंघना इत्यादि सेवन करे, शान्ति शील एवं अनेक चिन्तनों से रहित हो सात दिन तक पति से भिन्न रहे, आठवें दिन शिर से स्नान कर षोडश शृङ्गार कर वेदानुसार संस्कार कर पति के साथ प्रसंग करे निस्सन्देह उत्तम, बली विद्वान गर्भ धारण करैगी। पुरुष को भी चाहिये ॥

ततोपरान्हेपुमान्मासं ब्रह्मचारीसर्पि:स्निग्धः सर्पि:क्षीराभ्यांशाल्योदनंभुक्ता।

एक महीने पर्य्यन्त ब्रह्मचर्यव्रत धारण करनेवाला पुरुष सायंकाल को शरीर में घृत मर्दन करके सुगन्धित जल से स्नान कर घृत और दूध से बनाया साठी चावल अथवा पुराने चावलों का खीर भोजन करके स्त्री के पास जावे परन्तु स्त्री खीर न खाके तैल और उरद का भोजन करे।

चरेत्।

पदार्थों को तथा (विसृतैः)

रके पति के समीप जावै।

सेवना द्वारा धातु को भी गाढ़ा एवं स्निग्ध कर तब पुत्रार्थ मैथुन करै ॥

ऋतुदान का काल ॥

ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतसदा । पर्ववर्जंव्रजेच्चै-नां तद्व्रतीरतिकाम्यया ॥ ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयः षोडशस्मृताः । चतुर्भिरितरैःसार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥ तासामाद्याश्चतस्रस्तुनिन्दितैकादशीचया । त्रयोदशीचशेषास्तुप्रशस्तादशरात्रयः ॥

मनुजी महाराज ने भी ऋतुदान के समय का विचार अपने ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है कि मनुष्य को चाहिये हमेशा ऋतुकाल में अपनी स्त्री के साथ समागम करै सेवाय अपनी स्त्री के पर स्त्री गमन करने की इच्छा मन में भी न लावै और पुत्रोत्पादन करने वाला पुरुष पर्व तिथियों को जैसे अमावस्या चतुर्दशी अष्टमी आदि छोड़ के तब स्त्री के साथ रति क्रिया करै स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल १६ रात्रि का है अर्थात् रजोदर्शन के दिन से लेकर सोलह दिन तक ऋतुकाल कहा जाता है। इनमें से ४ रात्रि अर्थात् जिस दिन रजोधर्म हो उस दिन से लेकर ४ दिन तक प्रसङ्ग करना महा निन्दित है और जैसे चार रात्रि निन्दित हैं वैसाही ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी निन्दित है शेष रहे दस रात्रि वेही रात्रियां ऋतुदान के लिये श्रेष्ठ हैं ॥

युग्मासुपुत्राजायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु । तस्माद्युग्मासुपुत्रार्थीसंविशेदार्त्तवेस्त्रियम् ॥ पुमान्पुंसोधिकेशुक्रे स्त्रीभवत्यधिकेस्त्रियाः । समेपुमान् पुंस्त्रियौवा क्षीणेऽल्पेच विप-

पुत्रोत्पन्न इच्छा करने वाले पुरुष युग्म रात्रि अर्थात् रजो दर्शन से छठवीं आठवीं दशवीं और बारहवीं रात्रि यह रात्रीमें गर्भाधान करें परन्तु उत्तरोत्तर रात्रि और भी श्रेष्ठ हैं अर्थात् जैसा छठवीं रात्रि में गर्भाधान करने से बलिष्ट पुत्र उत्पन्न होगा उससे अधिक बलिष्ट आठवीं रात्रि में ऋतुदान करने से होगा उससे भी बलिष्ट दशवीं रात्रि में होगा इसी प्रकार उत्तरोत्तर श्रेष्ठ जानना । जिनको कन्या उत्पन्न करने की इच्छा हो रजोधर्म के पांचवीं, सातवीं, नवमीं और ग्यारहवीं रात्रि में गर्भाधान करैं और इसमें भी उत्तरोत्तर रात्रियों को श्रेष्ठ जानना चाहिये । पुरुष के अधिक वीर्य्य होने से पुत्र और स्त्री के अधिक रज होने से कन्या उत्पन्न होती है । यदि पुरुष के वीर्य्य और स्त्री के रज दोनो बराबर हो तो लड़का पैदा होगा तो नपुंसक और कन्या बन्ध्या होगी । क्षीण वीर्य्य अथवा अल्प वीर्य्यसे गर्भ का न रहना अथवा रहकर भी गर्भ का गिरजाना होता है । सुश्रुत जी भी कहते हैं ॥

यथूत्तरोत्तरंविद्या दायुरारोग्यमेवच । प्रजासौभाग्यमैश्वर्यं
बलंचाभिगमात्फलं ॥

इस बात को हम दूसरे खण्ड में लिख चुके हैं कि रजोदर्शन निवृत्ति होने में पुरुष स्त्री के साथ गमन कर सक्ता है सो तीन दिन स्त्री वर्जित है । चौथे दिन से प्रसङ्ग का दिन गिना जाता है चतुर्थ रात्रि में गमन करने से आयुष्यमान और आरोग्य लड़का पैदा होता है, छठवीं रात्रि में गमन करने से निस्सन्देह पुत्र उत्पन्न होता है, आठवीं रात्रि में सौभाग्यवान्, दशवीं रात्रि में ऐश्वर्य्यवान्, और बारहवीं रात्रि में गमन करने से बलवान् पुत्र उत्पन्न होता है इसी प्रकार कन्या की इच्छा करने वाला विषम रात्रियों में गमन करै और उत्तर २ यही फल होगा । इसी विषय मे वाग्भट्ट जी भी कहते हैं ॥

ऋतुस्तुद्वादशनिशाः पूर्वास्तिस्त्रश्चनिन्दिताः । एकादशीच
युग्मासुस्यात्पुत्रोऽन्यासुकन्यका ॥

यह कहते हैं कि रजोदर्शन से लेकर बारह रात्रि पर्य्यन्त स्त्री ऋतुवती रहती हैं । अब इससे तीनही दिन ऋतुवती रहती है यह खण्डन हो गया । इसका मतलब यहहै कि तीन दिन रक्त स्राव अधिक रहताहै उसमे गमन करना निषेध लिखाहै क्योंकि उन तीन रात्रियों में गमन करनेसे गर्भाधान के रहने के अलावा स्त्री के भग के रुधिर की गर्मी पुरुष के लिङ्ग द्वारा भीतर जा के रक्त के परमाणुओं को अत्यन्त उष्ण कर गमनागमन में बाधा डालती है और वीर्य्य को द्रवीभूत करती है तथा वही गर्मी शिर में प्रवेश कर मनुष्य को बुद्धिहीन बलहीन कर देती है । रजोधर्म वाली से अत्यंत प्रसङ्ग करने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, भगन्दर और उपदंश आदि असाध्य रोग उत्पन्न होते हैं इसलिये मासिक धर्म वाली स्त्री के साथ कदापि गमन न करै ॥

यह बात जो वैद्यक शास्त्र में लिखा है कि विषम रात्रियों में गमन करने से कन्या और सम रात्रियों में गमन करने से पुत्र उत्पन्न होता है और उसका कारण यह दिखलाया है कि विषम रात्रियों में स्त्री के रज कम रहता है और सम रात्रियों में पुरुष के वीर्य्य कम रहता है परन्तु यह नहीं लिखा कि क्यों कम रहते हैं ? मालूम होता है कि यह सब बात वैद्यवरों ने अनङ्ग रङ्ग आदि काम शास्त्र द्वारा परीक्षा करके सिद्ध किया है ॥

सन्तानार्थ मैथुनविधिः ॥

पुत्रोत्पादन के अर्थ मैथुन करने की विधि वेद तथा आयुर्वेद में बहुत कुछ लिखी है बहिस्तार लिखने में इसका बड़ा भारी एक ग्रन्थ हो जाय गा और आज कल ऐसे विद्या हीन बल विहीन लोग हो गये हैं चाहें आ जन्म पुत्र हीन रहें परन्तु विधिपूर्वक मैथुन कभी न करेंगे। तथापि इन पाठक गणों के उपकारार्थ कुछ मैथुन की विधि लिखते हैं । स्त्री पुरुष को चाहिये कि पूर्वोक्त रीत्यानुसार आहारादि कर्मों से निवृत्त हो सुन्दर आभूषण और मनपसन्द [illegible]

हुये सुशोभित एकान्त मकान में जिस में निर्दोष उत्तम पलङ्ग बि मैथुन के अर्थ गमन करै और दोनों स्त्री पुरुष हर्ष पूर्वक पलङ्ग पर लेकिन पहिले पुरुष अपना दहिना पैर पलङ्ग पर रक्खे और बाम पैर धर के पलङ्ग पर चढ़ें परन्तु पुरुष के दहिने तर्फ होके चढ़े कि बाग्भट्ट के शारीरस्थान में लिखा है ।

आरोहेत् स्त्री तु वामेन तस्य दक्षिणपार्श्वत: ॥

स्त्री पलङ्ग पर बांये पैर से चढ़े परंतु पुरुष की दाहनी तर्फ से । बाद इसके पहले स्त्री दक्षिण हाथ से पुरुष के लिङ्ग स्पर्श करै और नीचे लिखे हुये वेद के मन्त्र को पढ़े ॥

ओं, पूषाभगंसवितामेददातु रुद्र:कल्पयतुललामगुंविष्णु-योनिंकल्पयतु त्वष्टारूपाणि पिंशतु आसिंचतुप्रजापतिधाता गर्भंदधातुमे ॥

तदनन्तर पुरुष अपने दहने हाथ से स्त्री का भग स्पर्श कर और नीचे लिखे मन्त्रों से स्त्री को अभि मंत्रित करै ॥

ओं अहिरसिआयुरसिसर्वत: प्रतिष्ठासिधातात्वांदधातु विधातात्वांदधातु ब्रह्मवर्चसाभवेति ॥

ब्रह्माबृहस्पतिर्विष्णु: सोम:सूर्यस्तथाश्विनौ भगोथमित्रा वरुणौवीरंददतुमेसुतं ॥

बाद इसके स्त्री शय्या पर आनन्द पूर्वक उतान लेट जावे और समग्र अपने शरीर को यथा वस्थित करदेय अर्थात् किसी अंग को टेढ़ा मेढ़ा न करै इसका सबब यह है कि समस्त अवयव यथावस्थित रखने से वातादि दोष भी यथावस्थित रहते हैं इससे वीर्य्य गर्भाशय में अति सुगमता से प्रवेश करता है लिखा भी है ॥

यथाऽऽस्थानस्थिता दोषाः (?) ...

रायाऽऽस्योजगृह्णाति दोषे स्वस्थानमास्थितैः ॥

सन्तानोत्पादनार्थ जब स्त्री वीर्य्य ग्रहण करै तो अपने शरीर को ऐसे ढङ्ग से रक्खे कि वातादि दोष अपने २ स्थान में स्थित रहैं सो उतान लेटने से होता है। जब स्त्री उतान लेट जावै तब पुरुष आनन्द पूर्वक स्त्री के नाशा के पास अपना नाशा और भी अङ्ग प्रत्यंगों को अपने अङ्ग प्रत्यङ्गों से स्पर्श सहित सहवास करै और गिरते हुये बीज को न रोके और न देर से पात होने की इच्छा करै और ऐसा भी शीघ्रता न करै कि वीर्य गर्भाशय न प्राप्त होके मार्गही में च्युत हो जाय * क्योंकि अति शीघ्र वीर्य्य पात होने से बालक दुर्बल और कमजोर होता है और अधिक देर में वीर्य्य पात होने से बालक क्रोध युक्त और गर्म मिजाजवाला उत्पन्न होता है। जब वीर्य पात हो जाय तब पुरुष एक मिनट ठहर के आहस्ते से उठ जाय और स्त्री तीन चार मिनट तक वैसाही लेटी रहै तत्पश्चात् आहिस्ते से करवट होके उठ बैठे और शीतल जल से भग को सिंचन करै। शीतल जल से सिंचन करने का अभिप्राय यह है कि जब वीर्य्य गर्भाशय में गिरता है अत्यन्त गर्म और तरल भाव में रहता है और सिंचन करने से वह गाढ़ा होके जम जाता है॥

ऋतुदान देने के बाद फिर पुरुष उस स्त्री से प्रसङ्ग न करै जब तक फिर रजो दर्शवती न देख पड़े क्यों कि एक महीना के भीतर गमन करने से गर्भ का द्वार खुल कर गर्भ गिर जाता है इसलिये आचार्य्यों का यह मत है कि स्त्री यदि फिर रजो दर्शवती होय तो जानना कि गर्भ नहीं रहा

---

* आज कल भारतवर्षीय लोगों के वीर्य में उष्णवायु का इतना अधिक कोप रहता है कि यदि पूर्वोक्तरीत्यानुसार पुत्रार्थ मैथुन करने की चेष्टा करे तो निस्सन्देह हम कह सक्ते हैं कि बहुत से ऐसे प्राणी निकलेंगे कि मैथुन किसे कहते हैं स्त्री पुरुष परस्पर लिङ्ग भग स्पर्श कर वेद् मंत्र पढ़तेही भर में वीर्य च्युत हो जायगा। ऐसी अवस्था में जब तक वीर्य को खूब ठंढा और पुष्ट न कर लेवै सन्तानार्थ मैथुन न करे॥

इस अवस्था में मनुष्य को उचित है कि पुनः पूर्वोक्त लेखानुसार स्त्री ग... करे और गर्भ रहने पर गमन कदापि न करे ॥

गर्भवती होने का लक्षण ॥

तृप्तिर्गुरुत्वंस्फुरणशुक्रास्त्रावनुवन्ध्यनम्। हृदयस्पन्दनंतन्द्रा तृड्ग्लानिर्लोमहर्षणम् ॥

गर्भ रहजाने का लक्षण वाग्भट्ट में इस प्रकार लिखा है। चित्त प्रसन्न, शरीर में कुछ भारीपन, कोखे का फरकना, वीर्य जो गर्भाशय में गया। उसका न वहना तथा रक्तश्राव भी न होना, कलेजा धक २ करना, नेत्रों पर आलस्य, पियास, खाने पर मनका न चलना और रोमों का खड़ा होना इत्यादि लक्षण होने से जानना कि यह स्त्री गर्भवती हो गई है ॥

गर्भपुष्टकारक उपाय ॥

लब्धगर्भायाश्चैतेष्वहः सुलक्ष्मणावटशुंगा सहदेवाविश्वेदेवा मन्यतमाक्षीरेणाभिसुत्यचीं श्चतुरोवापिविंदून्दद्यात् दक्षिणे नाशापुटे पुत्रकामानतान्निष्टीवेत् ॥

जिस दिन गर्भ धारण किया हो विशेषकर उसी दिन अथवा तीन दिन के भीतर लक्ष्मणा बूटी या बरगद का शुनगा (कोपल) या पीले फूलकी कगही या गुलसकरी अथवा सफेद फूल का वरियारा इनमें से कोई भी एक मिल जाय जिस गौ के नीचे बछरा हो और दोनो का एकही रंगहो उसके दूध में पीस पुत्र की इच्छा रखने वाली गर्भवती अपने दहने नाशा मे तीन या चार बून्द सिघ्रन करे अर्थात् नाश लेवे यदि वह गले में उतर आवै तो उसे थूके नहीं (दक्षिणे नाशा पुटे) इस लेख से सिद्ध होता है कि कन्या उत्पन्न करने की इच्छुक गर्भवती वाम नाशा पुट में सिघ्रन करे वाग्भट्ट में लिखा भी है (पुत्रार्थं दक्षिणेसिंचे द्वामेदुहितृवांछया) उपरोक्त लिखे हुये औषधों में गर्भाधारण के लिये लक्ष्मणा बूटी एक प्रधान औषध

है प्रायः गया जी की ओर पर्वतों पर तथा उत्तरीय पर्वतों पर भी मिलता है। लक्ष्मणा का वृक्ष वन तुलसी के समान बड़ा और आकृति में भी वैसाही होता है सिर्फ भेद इतना है कि लक्ष्मणा के पत्ते पर पुष्प के रुधिर के समान लाल २ छींटे जायजा होते हैं, पुत्रोत्पन्न करने की शक्ति ईश्वर ने इसी को दी है॥

लक्ष्मणा को उखाड़ने की शास्त्रोंमे इस प्रकार लिखते हैं कि शरद ऋतु में जब लक्ष्मणा फल पुष्प सहित हो तो शनिवार के दिन सन्ध्या समय पवित्र होके उसके चारों ओर खैर की लकड़ी की चार कीले गाड़ धूप दीपादि से पूजन कर निमंत्रण कर आवै जिस समय हस्त मूल या पुष्य नक्षत्र के सूर्य्य हों उस दिन जाके जड़ी बूटी उखाड़ने का प्रसिद्ध मन्त्र है उस मंत्र से उखाड़ लावे और पीछे फिर कर न देखे और ऊपर लिखे अनुसार उसके जड़ को दूध में पीस गर्भवती के नाक मे सिञ्चन करै। गर्भाधान के न रहने का और भी बहुत से हैं उन्हें और उसके रहने के उपाय आ० द० के चतुर्थ खण्ड मे लिखेंगे। इस समय गर्भ के कुछ विकारों को दिखलाते हैं। जो गर्भाधान विधिपूर्वक किया जाता है उसका फल यह है॥

एवंजातारूपवन्तः सत्ववन्तश्चिरायुषः। भवन्त्यृणस्यामोक्तारः सत्पुत्राःपुत्रिणोहिताः॥

विधिपूर्वक ऋतुदान करने से कन्या अथवा पुत्र उत्पन्न होता है वे रूपवान, सत्त्वगुणविशिष्ट पूर्ण आयु पर्य्यंन्त जीनेवाला, अपने बाप दादों के पैदा करके लानेवाला, और माता पिता को सुख देनेवाला होता है और जो ऋतुदान अविधि किया जाता है वही गर्भ दोष सहित होता है अर्थात् गर्भ का न रहना, या रह कर गिर जाना, गर्भही में बालकों का मर जाना अथवा लँगड़े लूले बेढंग कुरूप अद्भुत सन्तानों का [illegible] होना इत्यादि इसलिये सुन्दर सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा

गर्भाधान [illegible] न करै॥

जोड़ा लड़का होने का कारण ॥

बीजेन्तरवायुनाभिन्ने द्वेबीजेकुक्षिमाश्रिते । यमावित्यभि-
धीयेते धर्मेतरपुरःसरौ ॥

रज वीर्य्य दोनों मिल कर जिस समय गर्भाशय में आता है यदि वा भीतर के वायु से दो भाग हो के रह जाय तो दो लड़का एक साथ उ- त्पन्न होगा और वह भाग रज वीर्य की ताकत या मिकदार कम होने से हुआ हो तो लड़के जन्मतही मर जावेंगे । यदि एक भाग पुष्ट और दूसरा भाग अल्प हो तो उसमें से एक लड़का जीवेगा और एक मर जावेगा। अगर दोनों भाग पुष्ट हो तो दोनो जीवेंगे ऐसा बहुतेरों जगह देखने में आया है यदि उसी रज वीर्य की भीतर की वायु बिलकुल विभाग न कर सकी हो कुछ विभाग हुआ हो और कुछ एकही साथ मिला हो तो दो लड़के होंगे परन्तु जुटे होंगे ऐसे लड़के भी कभी २ देखने [सुनने मे आते हैं । इसी प्रकार तीन चार बालक भी होते हैं । एक ही साथ पुत्र कन्याओं का उत्पन्न होना रज वीर्य के न्यूनाधिक पर निर्भर है ॥

कुत्ते बिल्ली आदि पशुओं के जो अनेक बच्चे पैदा होते हैं उसका कारण यही है गर्भाशय में वायु कर के रज वीर्य्य का विभाग होना एकही समय कई सन्तान होने के विषय में अनुमान से इनको यह जान पड़ता है कि इस कार्य सम्पादन करने में वायु स्वतंत्र नहीं है । क्योंकि यद्यपि खाली घड़े में वायु है परन्तु उसमें भी सहज पारा आदि वस्तु एकबारगी भर देने से वायु निकल जाता है यदि उसी में गेहूं चना आदि भर दो तो अवश्य खाली भागों में वायु बना रहेगा इसी प्रकार गर्भाशय में वीर्य-रज पूरा मात्रा एकही बार आने से वायु निकल जाता है और वीर्य रज यदि गर्भाशय में कई बार टर के आने से बीच में वायु रह जाता है इसी से कई लड़के होते हैं और इसका का बिकार है ।

नपुंसक सन्तान उत्पन्न होने का कारण ॥

सुश्रुत जो पांच प्रकार के षंड (नपुंसक) माता पिता के रज वीर्य दोष से उत्पन्न होने को दिखलाते हैं—जैसे

पित्रोरत्यल्पवीर्य्यत्वादासेक्यःपुरुषो भवेत् । सशुक्रं प्राश्यलभतेध्वजोछ्रायमसंशयम् ॥

गर्भाधान के समय माता पिता के अधिक कम वीर्य होनेके सबब से जो गर्भाधान रहता है, उस से जो सन्तान उत्पन्न होता है वह आसेक्य नामक नपुंसक कहाता है उसका लक्षण यह है कि युवाअवस्था में, दूसरे मनुष्य के प्रसंग करने से जो वीर्य पात हो उस वीर्य को वह आसेक्यनामक नपुंसक भक्षण करे तब उसका लिंग उठे।

सौगंधिक नपुंसक ॥

यःपूतियोनौजायेत ससौगन्धिक संज्ञत : । सयोनिशेफ सौगन्ध्यमाघ्रायलभतेबलम् ॥

जिस स्त्री के योनि से मवाद जाता हो उस के साथ संभोग करने से जो लड़का पैदा हो वह सौगन्धिक नामक नपुंसक कहाता है। जबतक वह किसी अन्य पुरुष के लिंग को अथवा स्त्री के भग को न सूंघेगा तबतक उसका लिंग चैतन्य नहीं होगा।

कुंभिक नपुंसक ॥

स्वेगुदेब्रह्मचर्य्यायः स्त्रीषुपुम्वत्प्रवर्त्तते । कुंभिकःसतुविज्ञेयःईर्ष्यकंशृणुचापरम् ॥

जो मनुष्य पहले किसी पुरुष से अपनी गुदाभंजन करावे उससे उस का लिंग चैतन्य हो तब यह स्त्री के साथ प्रसंग करने लायक हो उसकोकुंभिक

रूप अपनो शिथिललिंग से स्त्रीको गुदाभंजन करै (अधिक ब्रह्मचर्य रहनेसे मे नपुंसकता होतीहै उसको दूर करनेके यही उपायहै) जब लिंग उत्थान होजा स्त्री के साथ प्रसंग करे आगे ईर्ष्यक नपुंसक या लक्षण सुनियेगा। कुंभिक नपुं सक के उत्पत्ति का कारण ग्रंथांतरो में इस प्रकार लिखि है। गर्भाधान के समय माताके विलोम मैथुन और पिताके अल्पवीर्यके प्रभावसे कुंभिक नामक नपुंसक म नुष्य पैदा होता है एक आचार्य कहते हैं कि गर्भाधानके समय कम रज वाली औरत के साथ अत्यन्त शिथिल वीर्य वाला पुरुष गमन करे और उस पुरुष से उस स्त्री की तृप्ति अर्थात् काम को शांति न हो पुनर बार अथवा दूसरे पुरुषके साथ मैथुन कराने की इच्छा बनी रहै और वह मैथुन न होने पावे बीचही में गर्भाधान हरजाय उससे जो सन्तान होगी वह कुंभिक नपुंसक होगा।

ईर्ष्यक नपुंसक के लक्षण ॥

दृष्ट्वा व्यवायमन्येषांव्यवायेयःप्रवर्तते । ईर्ष्यकःसतुविज्ञे योदृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥

ईर्ष्यक नपुंसक उसे कहते हैं जो दूसरे मनुष्य को मैथुन करता देख कर आप मैथुन करने को उद्यत हो और जबतक अन्य पुरुषको मैथुन करता न देखे लिंग कभी प्रसंग करने लायक न हो। ईर्ष्यक खंड इस प्रकार जन्मता है कि गर्भाधान की समय स्त्री पुरुष किसी ऐसे कार्य में पराभव हो जो सहने लायक न हो शोकातुर हर्ष रहित मैथुन करनेसे जो पुत्र हो वह ईर्ष्यक संज्ञक नपुं सक होगा।

स्त्री चेष्टाकार पांचवां नपुंसक का लक्षण और स्त्री षंढ के लक्षण अर्थात् जिस कारण से स्त्री नपुंसक होती हैं दोनों का वृत्तान्त आरोग्यदर्पण के दूसरे खंड में लिख चुके हैं इस स्थल में हम यह दिखलाते हैं कि उपरोक्त नपुंसकों के वीय है या नहीं।

आसेक्यश्चसुगंधीचकुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा । सरेतसस्त्वमी ज्ञेयाअशुक्रःषंडसंज्ञितः ॥ अनयाविप्रकृत्यातुतेषांशुक्रवहाः शिराः । हर्षात्स्फुटत्वमायान्तिध्वजोच्छ्रायस्ततोभवेत् ॥

आसेक्य, सुगंधी, कुंभीक, और ईर्ष्यक इन चारों पंढोंमें तो वीर्य है परन्तु ांचवांपंड जो स्त्री की सी चेष्टा वाला नपुंसक है जिसका लक्षण अ॰ द॰ के खंड ं लिख चुके हैं उस में वीर्य नहीं है यदि कोई शंका करे कि जब वीर्यमान है तो पुंसक कैसे हुआ? उसका मतलब दूसरे श्लोक से स्पष्ट हो जाता है। यद्यपि क्त पंडों में भी वीर्य नहीं है तथापि ऊपर लिखे हुये चेष्टा करने से जैसे वीर्य भक्षण, योनि सूंघना, गुदाभंजन और अन्य पुरुष का मैथुन देखने से शुक्रनाड़ी शिराहर्ष युक्त होकर फूलती है इससे भी लिंग चैतन्य होता है। यही नपुंसकता दोष स्त्रियों में भी होता है॥

निकृष्ट गर्भोत्पन्न ॥

यदानार्यावुपेयातांवृषस्यन्त्यौकथञ्चन: । मुञ्चत:शुक्रम-
न्योन्यमनस्थिस्तत्रजायते ॥

जिस समय दो स्त्री अति कामातुर हो पुरुष के साथ मैथुन न करके दोनों आपस में मिल कर भग से भग मिलाय कर दोनों अपने २ रज को त्याग करें उस अवस्था में यदि गर्भ रहजाय तो उस गर्भ से बिना हड्डी के लड़का पैदा होगा, उस लड़के का लक्षण यह होगा कि वह अपने हाथ पैर कड़े व कठोर न करे अन्य कोई उसके हाथ पैर को चाहे जिस ओर मुका दे ठीक नहीं होगा ऐसे बालक अवश्य कभी २ देखने में आये होंगे परन्तु जीते नहीं

स्वप्न मैथुन से गर्भोत्पन्न ॥

ऋतुस्नातातुयानारीस्वप्नेमैथुनमावहेत्। आर्त्तवंवायुरादाय
कुक्षौगर्भंकरोतिहि ॥ मासिमासिविवर्द्धेत गर्भिण्यागर्भलक्ष
णम्। कललंजायतेतस्यावर्जितंपैतृकैर्गुणैः

यह श्लोक सुश्रुत के शारीर स्थान के हैं। इसका अभिप्राय यह है (ऋतुस्नाता) जो स्त्री [illegible] [illegible]

भीतर स्वप्न में मैथुन करे और रज अपरालित होजाय तो उस समय में रज को वायु लेकर गर्भाशय में स्थापन कर देता है। वह गर्भ भी गर्भ के समान बढ़ोना २ बढ़ता है और उससे कलल भी उत्पन्न होता है परन्तु पिता के लक्षण रहित अर्थात् जो लड़का पैदा होगा वह एक मांस का पिंड मात्र होगा क्योंकि कलल उसी को कहते हैं। इस के अलावा और भी अनेक प्रकार के विकृत स्वरूप वाले स्त्रियों के सन्तान उत्पन्न होते हैं। जैसे कि सुश्रुत में लिखा है।

सर्पवृश्चिककूष्माण्डविकृताकृतयस्तुये। गर्भास्त्वेवंविधास्सर्वे ज्ञेयापापकृतोभृशम् ॥

सांप, बिच्छू, कुम्हड़े के समान मांस का लोथड़ा ऐसे भयानक रूप वाले, तथा अत्यंत खराब खराब अङ्ग वाले गर्भ, प्रसूता के पाप करने से होते हैं।

गूंगा आदि गर्भों के कारण ।

गर्भोवातप्रकोपेणदौर्हृदेचावमानिते। भवेत्कुब्जःकुणिःपङ्गुर्मूकोमिण्मिणएवच ॥

गर्भाशय में वात के प्रकोप से और माता के दौहृद अपचार से अर्थात् गर्भाधान के बाद गर्भावस्था में बुरे आचरणों से गर्भ में बालक कुबड़ा, टेढ़ा, लंगड़ा, गूंगा और मिनमिन बोलने वाला होता है। इस स्थल में यह सन्देह होसक्ता है कि यदि माता पिता ही के अपचार आदि दोषों के कारण गर्भ बिगड़ता है तो पूर्व संस्कार मानना सर्वथा असंगत है ? सो ठीक नहीं है। सुश्रुत ही में लिख दिया है (भावितापूर्वदेहेषु इत्यादि तथा अदृष्टमेवपराकृतैः) तात्पर्य यह कि पूर्व जन्म के निषिद्धकर्मों से गर्भाशय में वायु दुष्ट होती है।

गर्भ में बालक के मल मूत्र न करने के सबब ॥

बेशक यह सन्देह तो सभी को उत्पन्न हो सक्ता है कि जब गर्भाशय में बालक की सम्पूर्ण इन्द्रियां बन गई और जीव संयुक्त हुआ तो यह बालक म-

र्भाशय से दिया प्रमात्र क्यों नहीं करता ? गर्भ में बालक के मल मूत्र न करने का कारण यह है।

मलाल्पत्वादयोगाच्च वायोःपक्वाशयस्यच । वातमूत्रपुरीषाणिनगर्भस्थःकरोतिह ॥

गर्भ के भीतर बालक के शरीर में मल बहुतही अल्प होने से और पक्वाशयमें वायु के भी अत्यन्त कर्महीन होने से बालक गर्भ में मल मूत्र और वात का परित्याग नहीं करता, इसी प्रकार गर्भस्थ बालक के न रोने का भी कारण समुझना।

गर्भ में वालक के न रोने का सबब ॥

जरायुणामुखेच्छन्नेकण्ठेचकफवेष्ठिते । वायोर्मार्गनिरोधाच्चनगर्भस्थःप्ररोदति ॥ निश्वासोच्छाससङ्क्षोभस्वप्नान्गर्भोधिगच्छति । मातुर्निश्वसितोच्छास संक्षोभस्वप्नसम्भवान् ॥

गर्भाशय के मुख आच्छादित होने से और कंठ कफ करके वेष्टित होने से एवं वायु का मार्ग रुके रहने से, गर्भ के भीतर बालक नहीं रोता और गर्भ के भीतर बालक का श्वास लेना, डोलना तथा निद्रादि क्रिया माता के श्वासादि लेने से होती है, याने माता जो जो श्वासादिक चेष्टा करती है वही गर्भस्थ बालक भी करता है।

पूर्व कर्मानुसार बुद्धि का होना ॥

भावितापूर्वदेहेषुसततंशास्त्रबुद्धयः । भवन्तिसत्वभूयिष्टा पूर्वजातिस्मरानराः ॥

पूर्व जन्म में जिस मनुष्य का जिस विषय में अत्यन्त अभ्यास रहता है वेही गुण वर्तमान शरीर में भी होते हैं। जैसे जिस मनुष्य की आत्मा पूर्व देह में जिस विद्या कर के विशेष तन्मय रही होगी वह मनुष्य वर्तमान देह

में अवश्य उसी शास्त्र का जानने वाला होगा । इसी प्रकार चोरी, धूर्तता, व स्पटता आदि बुरे कर्मोंका अभ्यासी भी वर्तमान देह में तत्दुर्गुण विशिष्ट होगा । पूर्वदेह में जिन के सतोगुण प्रधान थे वे वर्तमान देह में भी वैसे गुणवान होंगे, तथा व्यतीत जन्म जाति के स्मरण रखने वाले भी होते हैं।

गर्भाधान स्थित के पश्चात् जबतक स्त्री पुनः रजोवती देख न पड़े तब तक उसके साथ मैथुन न करे, ऐसा अनेक शास्त्रों में वचन मिलेंगे । दूसरी बात यह है कि प्रथम २ जबतक कन्या ऋतुवती न हो उस के साथ भी गमन न करे और ऋतु होने का समय जो सुश्रुत में लिखा है वही ठीक है ।

तद्वर्षाद्द्वादशात्कालेवर्त्तमानमसृक्पुनः । जरापक्वशरीराणां यातिपंचाशतःक्षयं ॥

भोजन से खिंचा हुआ जो रस उससे उत्पन्न होने वाला रज (मासिक रुधिर) बारह वर्ष के उपरान्त प्रगट होकर जैसे २ शरीर में रसादि शरीर बढ़ता है तैसे २ रज भी बढ़कर महीने महीने योनि द्वारा प्रवृत्त है और जब पचास वर्षसे ऊपरकी अवस्था प्रारम्भ होतीहै तब बुढ़ापा के कारण क्रमशः रज नष्ट होने लगता है और ६० वर्ष की अवस्था होते२ कुल नष्ट होजाता है । इस स्थल में यह वचन देने का हमारा मतलब य कि प्रथम २ मासिक रक्त स्त्रियों को बहुत कम होता है, यहांतक कि कि धर्मवती होजाती हैं और रक्त नहीं देख पड़ता, कई महीनों के बाद — मालूम होने लगताहै । इस अवस्था में भी मैथुन करना नहीं चाहिये, गर्भ रह जाने से बालक का जन्म अति कष्ट से होता है इसलिये, जबतक खुलासा मासिक होना प्रारम्भ न हो सन्तानार्थ मैथुन कदापि न करे । इसी ऋषियों ने १६ वर्ष की अवस्था वाली स्त्री के साथ सन्तानार्थ मैथुन करने लिखा है ।

अदृष्टि मासिक लक्षण ॥

पीतप्रभन्नभदगांप्रक्लिन्नास्यमुखद्विजां । नरकामांप्रियकथां[illegible]

स्तयुच्चचिमृदुजां ॥ स्फुराद्भुजस्तनश्रोणिनाभ्यूरुजघनस्फिजं।
हर्षौत्सुक्यपरांचापिविद्यादृतुमतींस्त्रियम्॥

जो स्त्री ऋतुवती होजाय और रक्तस्राव न हो उसके लक्षण सुश्रुत में इस प्रकार लिखे हैं। जिस स्त्री का मुख पीत (यह पीतमुख कान्ति विशेष में जानना) प्रसन्नतायुक्तहो एवं आल (देह) मुख और दांत रसीलेहों (नरकाम प्रिय कथा) मैथुन सम्बन्धी बातें अच्छी लगती हों, कोख आंख और बाल विकसित याने प्रफुल्लित हों, बाहु छाती कमर नाभि पिंडरी जांघ और चूतड़ जिसके फरकें एवं प्रसंग कराने की अत्यन्त इच्छा होतीहो तो जानना यह स्त्री ऋतुमती हुई है परन्तु रक्त की अल्पता के कारण वह नहीं दिख पड़ता।

व्यतीत ऋतु में मैथुन निस्फल है ॥

नियतंदिवसेतीतेसंकुचत्यम्बुजंयथा। ऋतौव्यतीतेनार्यस्तु योनिःसंव्रियतेतथा॥

जैसे फूला हुआ कमल अपने नियत समय में पहुंच कर संकुचित याने सिकुड़ जाता है वैसाही ऋतु के व्यतीत होने पर अर्थात् रजोधर्म होने के १६ दिन बाद स्त्री की योनि (गर्भस्थान) संकुचित होजाती है। उस अवस्था में मैथुन करना निष्फल है क्योंकि वीर्य गर्भाशय में नहीं जाता।

गर्भवती होने के पश्चात् जो लक्षण होते हैं, पुत्र पुत्री और नपुंसकगर्भ रहने के पहचान, गर्भिणी स्त्री के उपचार अर्थात् गर्भयुक्त स्त्रियों को किस प्रकार रहना चाहिये। गर्भ के भीतर कौन महीने में बालकके कौन अङ्ग प्रत्यङ्ग बनते हैं इन सबों को आगे प्रकाश करेंगे। इस समय हम इस बात को दिखलाते हैं कि गर्भवती के दुख होने से वही दुख भीतर गर्भगत बालक को होता है लिखा भी है।

दोषाभिघातैर्गर्भिण्यायोयोभागःप्रपीड्यते। ससभागःशिशोस्तस्यागर्भस्थस्यप्रपीड्यते॥

वात पित्तादि दोषों करके कोई किसम की बिमारी गर्भिणी को होवे और उसे शीघ्र शांति न किया जाय तो वही रोग बालक को होगा याने वातादि दोष से तथा लकड़ी आदि के प्रहार से गर्भिणी का जो जो अङ्ग दुखित होता है वही अङ्ग गर्भ में रहने वाले बालक का पीड़ित होता है। इसलिये गर्भिणी स्त्री को मारना या किसी प्रकार का शोक देना कदापि न चाहिये और जब गर्भिणी दौहृदनी होजाती है उस समय स्त्री को अनेक प्रकारके सुख के द्वारा प्रसन्न रखना आयुर्वेदकी सम्मति है। दौहृदनी उस स्त्रीको कहते हैं जिसके गर्भमें ४ महीने का बालक होता है ४ महीने में गर्भस्थित बालक के जीव प्रगट होता है इस से शब्द स्पर्श रूप रस गंध इन विषयों में बालक का मन चलता है और गर्भ के बालक का जो हृदय है वह मातज है इसलिये चतुर्मास के ऊपर वाली गर्भिणी स्त्री दौहृद वाली कहाती है इस से गर्भिणी का हृदय सन्तप्त होने से गर्भ में जो बालक होता है उसका भी हृदय सन्तप्त होता है। इसलिये गर्भवती स्त्री का मनोर्थ पूर्ण न करना बहुत बुरा है। सुश्रुत जी कहते भी हैं।

दौहृदविमानात्कुब्जं कुणिं खञ्जं जडं वामनं विकृताक्षमनक्षं वा नारी सुतं जनयति। तस्मात्सा यद्यदिच्छेत्तत्तस्यै दापयेत्। लब्धदौहृदा हि वीर्यवन्तं चिरायुषं पुत्रं जनयति॥

अगर स्त्री की दौहृदेच्छा (दौहृदय की इच्छा) परिपूर्ण न होवे तो वह स्त्री कुब्ज, लूला, नपुंसक, बौना (५२ अङ्गुल का लम्बा मनुष्य) ऐंचाताना नेत्रवाला और अनेक रूप रङ्ग रोग वाले आदि ऐसे बालक उत्पन्न करती है। इसलिये चाहिये कि गर्भवती स्त्री जिस२ बातकी इच्छा करे (परन्तु वह इच्छा अत्याचारी न हो) उसे अवश्य पूर्ण कर देना चाहिये क्योंकि जिस गर्भवती स्त्री की इच्छा पूर्ण होती है वह स्त्री वीर्यवान और दीर्घ उमर वाला सन्तान को पैदा करती है।

इन्द्रियार्थांस्तु यान्यान् सा भोक्तुमिच्छति गर्भिणी। गर्भा-बाधभयात्तांस्तान्भिषगाहृत्य दापयेत्॥ सा प्राप्तदौहृदा पु

जनयेतगुणान्वितं । अलब्धदौहृदागर्भंलभेतात्मनि वा भयम्
येषुयेष्विन्द्रियार्थेषुदौहृदेवैविमानता । प्रजायेतसुतस्यार्त्ति
स्तस्मिंस्तस्मिंस्तथेन्द्रिये ॥

गर्भवती स्त्री के इन्द्रिय को जो जो प्रिय हो, जैसे गान सुनना, उत्तम२ गहना वस्त्र पहरने की इच्छा, दिव्य मूर्त्तादिकों का देखना, स्वादिष्ट द्रव्यों का भोजन, सुगंध द्रव्य का सूंघना, वन उपवन आदि स्थानों में हवाखाना आदि, जिस बात की इच्छा प्रगट हो उसके घर वालों को चाहिये कि अवश्य पूर्ण करें, बल्कि गर्भवती स्त्री से पूंछते रहें कि आजकल उसकी तबियत किस बात को अधिक चाहती है, उसे पूर्ण करें क्योंकि गर्भवती के इच्छानुसार सुख न मिलने से निस्सन्देह गर्भ की विकृति हो जाती है और इच्छा पूर्ण होने से गर्भवती उत्तम प्रकार के सन्तान को प्रसव करती है और अलब्ध दौहृदा गर्भवती के गर्भ को अथवा उसके सुहृदी शरीर को भय रहता है ॥

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यह पांच विषय हैं और उक्त पांचो विषयों के भोग करने वाली पांच इन्द्रियां हैं कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक । अगर गर्भवती स्त्री की जो इन्द्रिय अपने विषय को चाहै और वह न मिले तो गर्भस्थित बालक की भी उसी इन्द्रिय को पीड़ा होगी । जैसे गर्भवतीको गान सुनने की इच्छा हो और वह न सुने तो गान (शब्द) के चाहने वाला कान है, वह कर्ण न तृप्त होने से गर्भ गत बालक के कान को दुख होगा इसी प्रकार सब इन्द्रियों को समझना ॥

दौहृदकेद्वारा सन्तानके लक्षण ॥

सुश्रुत शारीरस्थान अध्याय ३ ॥

राजसन्दर्शनेयस्यादौहृदंजायतेस्त्रियाः । अर्थवन्तंमहाभागं
कुमारं [illegible]

जो हो गर्भ वाली स्त्री वनशूकर का मांस खाने की इच्छा । इच्छा प्रगट करनेसे मतलब है बारंबार उसी वस्तुकी याचना करनी हे तो स्त्री अधिक सोनेवाला बड़ा शूरवीर जो रण से विमुख न हो उपीर पुत्र को निःसन्देह उत्पन्न करेगी। उक्त वाक्यों से जान पड़ता ह मांस खानेका प्रचार पूर्वमें भी अधिक था। और जो गर्भवती स्त्री ने फिरने की इच्छा अधिक रखती हो वह बहुत चलने वाला औ गा वनमें घूमने वाला पुत्र को पैदा करेगी। इसी प्रकार बारह मांस की इच्छुक, चञ्चल चित्त वाला और तीतर का मांस चाहने व री डरपोक बालकको उत्पन्न करेगी। यद्यपि इस स्थलमें इस बातको डरा कि मांस खानेकी इच्छा करनेवाली किन जातकी स्त्रियां हैं ले ह जाना जाता है कि शूद्र की स्त्रियां अवश्य मांस खाती थीं बहुत स्त्रियां गर्भावस्था में मट्टी खपरा आदि चीजें खाती हैं और उन्हीं च र उनका सदैव मन रहता है इसी से वे स्त्रियां कुरूप, दुर्बल, द ाण्डुरोगी, और जिस के पेट में केचुवे होजांय ऐसा सन्तान उत्पन्न तीहैं॥

इसमें सन्देह नहीं कि माता अपने गर्भस्थित बालक पर अपने नसिक विचार द्वारा बहुत कुछ अच्छा बुरा प्रभाव उत्पन्न कर सक्त यह तो स्पष्टही है कि गर्भिणियों के चित्त में अकस्मात् भय शोक उद्वेग होने से शीघ्रही गर्भपात हो जाता है, या बालक को अत्यंत होता है और उस क्लेश का लक्षण उस बालक के उत्पन्न होने पर प्र हो जाता है। आत्म विद्या के एक बड़े भारी विद्वान सी०डी०डाएस व अमेरिका ने दौहृदिनी के विषय में कई बातें प्रत्यक्ष देख कर लिखा है कि एक स्त्री जब उसका ३ मास का गर्भ था अचानक एक ज रीछ के बच्चे को देखकर बहुत डर गई, उसका अन्तिम परिणाम हुआ कि उसके गर्भ से बावला लड़का पैदा हुआ और सयान होने रीछ के समान खेलता था यह लड़का १४ वर्ष तक जिया॥

सकी उत्पन्न हुई लड़की की बोली प्रायः तोते की सी १० वर्ष तक रं
वे कहते हैं कि एक स्त्री ने मेरी जान पहचान थी जो गर्भवती थी उस
एक दिन अपने पाले हुये भेड़ी के बच्चे का शिर हाथ में लेकर
दबा दिया और पीछे से बहुत पछताई उसका नतीजा यह हुआ कि
उसके पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसकी छाती दबी हुई और शिर पचका हुआ
भेड़ के बच्चे के समान आगे को कुछ बढ़ा था। कुछ वर्ष हुये एक ग
में एक मनुष्य ने एक लड़की को जिसका जन्म से ही एक पाव और ए
हाथ था लोगों को देखलाने के लिये लाया। एक स्त्री जिसको दो मास
का गर्भ था उस लड़की के देखने की अत्यन्त इच्छा हुई और देखने के
लिये वहां गई और बहुत देर तक उसे देखती रही, उस एक हाथ पैर
की लड़की को देखकर उसके जी में ऐसा शोच समाया कि चौकन्नी सी
हो गई और कई दिन इस विचार में थी कि कहीं मेरे भी ऐसाही पं
गुल बालक उत्पन्न न हो, उस मानसिक विचार का अंतिम नतीजा यह
हुआ कि नौ मास पूर्ण होने पर उस स्त्री के भी वैसाही एक हाथ पैर
विहीना कन्या जन्मी ॥

यह बात यद्यपि सर्वसाधारण को आश्चर्य जनक है परन्तु पदार्थ वि
द्या के जाननेवाले इस बात को कह सक्ते हैं कि सृष्टि कर्ता परमेश्वर ने
स्त्रियों के गर्भाशय और रज को ऐसे ढंग से रचा है कि गर्भाधान होने के
बाद माता को जिस प्रकार का मानसिक दृढ़ विचार होगा निस्सन्देह
गर्भगत बालक सब प्रकार करके माता के मानसिक विचार का पूर्ण चित्र
होगा। न केवल मनुष्य जातही पर यह बात निर्भर है बल्कि पशु योनि
में भी यही बात पाई जाती है। अक्सर संवाद पत्र द्वारा सुनने में आता
है कि अमुक शहरमें गौका एक बचा हुआ जिसके चार आंख और मुख घोड़े
का सा। किसी घोड़ा का हिरन का सा रूप रंग का बचा सुनने में आया,
बल्कि बाईबिल के एक इतिहास में पशु जाति के माता के मानसिक
विचारों के असर पड़ने का वर्णन है। यह इतिहास इस प्रकार लिखा
है कि याकूब नामक एक मनुष्य ने लाबान से कहा कि मैं अपनी रि-

लायन नामक कन्या मुझे व्याह दे, लयान ने कहा कि तू सात वर्ष तक मेरी भेड़ बकरी चराव तो मैं व्याह दूं, उसने वैसाही किया तब लयान ने छल करके याकूब के साथ रिकायल के बदले लीह नामक कन्या व्याह दी जब यह कपट खुल गया तो लयान ने कहा कि तू सात वर्ष मेरी और सेवाकर तो मैं तुझे रिकायल भी व्याह दूं और उस सात वर्ष में जितने भेड़ बकरी मेरे गले में बुंदकीदार होंगे तुझे दहेज में देदूंगा। इस्से लयान का मतलब यह था कि ऐसे बच्चे न बहुत होंगे और न मुझे देने पड़ेंगे। लेकिन याकूब ने मंजूर कर लिया और एक ऐसा उपाय निकाला कि जिस्से सब बुंदकीदारही बच्चे पैदा हों। उसने यह हिकमत निकाली कि पानी पिलाने के कठरों के पेंदों में बुंदकीदार लकड़ियां भर दीं। नर और मादा भेड़ों को अलग २ करके रक्खा। उसने नर भेड़ों को तो खुला रक्खा परन्तु भेड़ियों को बांध रक्खा और पीने को पानी न दिया जब तक कि वह सब मारे पियास के मिमयाने न लगी। जब भेड़ियें अत्यंत प्यासातुर हुईं तब उन को भी भेड़ों के बीच में पानी पीने के लिये छोड़ दिया उन मादा भेड़ियों को उस पानी पीने के कठरोंमें सिवाय बूंदेदार लकड़ियोंके कुछ न देख पड़ा ऐसीही दशा में उनका जोड़ा लगने दिया। याकूब इस विषय में बड़ा विद्वान था दूसरे दिन फिर भेड़ बकरियों के झुण्डों को उसी स्थान पर लाया और उसी प्रकार जोड़ा खिलाया। इसी प्रकार जबतक जो मादा जोड़ा नहीं खाया उन्हें रोज वैसाही करता रहा। मादा भेड़ बकरियों को उन बूंदों पर मानसिक ध्यान अधिक जमने से उसका फल यह हुआ कि उनके बहुधा बच्चे ऐसे हुये जिनके शरीर पर बहुत बिंदु थे इससे सिद्ध होता है कि सुन्दर सन्तान का उत्पन्न होना माता के खान पान और मानसिक इच्छाओं पर निर्भर है॥

इस्टाटल नामक चीन देश के एक बड़े भारी आयुर्वेद के विद्वान ने स्वकीय रचित मास्टर नामक पुस्तक में दौहृदइच्छा पर जो लिखा है प्रकाश करते हैं। लिखते हैं कि बालक के माता पिता के समता में माता

का ध्यान जिस २ पर पड़ेगा बालक का कोई न कोई अंग उसी के समान होगा। जैसे मैथुन के समय स्त्री जिस पुरुष को ध्यान में लावें बालक रूप रंग में उसी के समान होगा, यहां तक कि कोई व्यभिचारिणी स्त्री पति के साथ व्यभिचार करते समय अपने पति का ध्यान करे तो बालक उसी के सदृश होगा मानो उसका औरस जात वह बालक नहीं है। यही कारण बालकों के मसे, मांसल, काले दाग इत्यादि का भी है और कई महाशय एक कारण अधिक कामादि का भी कहते हैं ॥

लड़कों को विकृताकार तथा बद सूरत होने का कारण माता का अनमेल वस्तुओं पर ध्यान देने का है, गर्भिणियों को चाहिये कि बदसूरत मनुष्यों को ध्यान देकर न देखें और अदृश्य वस्तुओं पर इच्छा न प्रगट करें। कदाचित देख भी पड़ें तो उनको ख्याल में न लावें और सदा खूबसूरत तसवीरें देखा करें ॥

अस्वाभाविक जन्म का कारण।

यह भी ईश्वरेच्छा से स्त्री पुरुष के सांसारिक और स्वाभाविक नियम उल्लंघन करने का पाप फल रूप है। यह फल स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुये बालक पर होता है क्योंकि विद्वज्जनों का मत है कि माता पिता के पुण्य या पाप का भागी उनका सन्तान होता है। बालक का बदसूरत अंग भंग का होना मैथुन के आधिक्यता और न्यूनता पर निर्भर है, जैसे कि मैथुन की आधिक्यता से हाथ पैर में उंगलियों का अधिक होना और मैथुन की न्यूनतासे एक हाथ या दोनों हाथों का न होना अथवा उंगलियों का कम होना इत्यादि ॥

स्त्री के प्रकृति विरुद्ध मैथुन कराने से अक्सर अस्वाभाविक बालक उत्पन्न होता है। सन १६०३ ईस्वी में इङ्गलैण्ड देश में एक ऐसा बालक उत्पन्न हुआ था जिसका शिर से कमर तक शरीर मनुष्याकार था और कमर से पैर तक सलोम कूकुर के समान था। विद्वानों के अनुसन्धान करने से जाना गया कि उस स्त्री ने कूकुर के साथ मैथुन कराया था।

भावार्थः—जब स्त्री के गर्भाशय में गर्भ रहता है तो पहले महीने में पुरुष का वीर्य्य और स्त्री का रक्त दोनों सम्मिलित हो कफ रूप कल्ल (पिण्डाकार) अवस्था को प्राप्त होता है। दूसरे महीने में शीत (कफ) गरमी (पित्त) और वायु इन्हीं से विपक्व पञ्च महाभूतों का शुक्र शोणितात्मक जो समूह वह कुछ घना हो जाता है। तीसरे महीने में दो हाथ दो पांव, शिर यह पांच पिण्ड एकही समय में पैदा होते हैं सिर्फ पिण्डाकारही नहीं बल्कि उसके महीन २ अङ्ग प्रत्यङ्ग भी उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे हाथ पैर और शिर यह अङ्ग है और पैरों की अङ्गुलियां तथा शिर के नाक कान ओंठ आदि प्रत्यङ्ग कहाते हैं। गर्भगत बालक के जितने अङ्ग होते हैं उनमें से कोई माता के अङ्ग से और कोई पिताके अङ्गसे उत्पन्न होते हैं॥

चतुर्थे सर्व्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरोभवति ॥

जो तीसरे महीने में सूक्ष्म अङ्ग प्रत्यङ्ग उत्पन्न हुये थे सब चतुर्थ महीने में अलग २ हो जाते हैं और इसी चौथे महीने में बालक का हृदय बनता है इसी से गर्भिणी स्त्री चौथे महीने में दो हृदय वाली कहाती है परन्तु चरक का मत है कि तीसरेही महीने में गर्भिणी स्त्री दौहृदनी हो जाती है और चरक महराज चतुर्थ मास का वर्णन इस प्रकार करते हैं ॥

चतुर्थमासे स्थिरत्वमापद्यते गर्भस्तस्मात्तदागर्भिणी गुरुगात्रत्वमापद्यते ॥

चौथे महीने में गर्भगत बालक (स्थिर) पुष्ट होता है इसी समय से चौथे मास में गर्भवती को शरीर भारी हो जाता है ॥

पञ्चमेमनःप्रतिबुद्धितरंभवति । षष्टेबुद्धिः । सप्तमेसर्व्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागःप्रव्यक्ततरः ॥

पांचवें महीने में गर्भगत बालक का मन अर्थात् चेतना उत्पन्न होती

है । मनुष्य के शरीर में १७ कलाहैं उनमें यह एक कला है । सत्रह कला यह हैं ।
५ कर्मेन्द्रिय, ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ प्राणादयः, मन एक और बुद्धि एक । सो
ये पांचवें महीने में उत्पन्न होताहैं और चरक भी एक बात और कहते हैं कि
पांचवें महीने में बालक के शरीर में मांस और रुधिर का समूह अधिक
होता है यही कारण है जो पांचवें महीने में गर्भिणी स्त्री कुछ दुबली हो
जाती है । छटवें महीने में गर्भगत बालक के बुद्धि उत्पन्न होती है ।
औरों का मत है कि छटे महीने में बालक बलवान और रूपवान होता है
जो के इस महीने में गर्भिणी के चेहरे का रंग कुछ तब्दील हो जाता है
परन्तु वाग्भट कुछ और भी कहतेहैं (षष्ठेस्नायुशिरारोमबलवर्णनखत्वचाम्)
छटें महीने में गर्भगत बालक के स्नायु (छोटे २ नसें) शिरा (रक्त बा-
हनी नाड़ियां) बाल, नाखून, रूप और त्वचा यह सब बनतेहैं । सातवें
महीने में हाथ पैर सिर और इन्हीं के प्रत्यंग अर्थात् नाक, कान, नेत्रादि
क सब ठीक अलग २ हो जाते हैं । इसी से सातवें महीने का उत्पन्न
बालक जीऐं २ जीते हैं ॥

अष्टमादि मासका वर्णन ॥

अष्टमेऽस्थिरीभवत्योजस्तत्रजातश्चेन्नजीवेन्निरोजस्त्वान्नैर्ऋत
भागत्वाच्च ततोबलिंमांसौदनमस्मैदापयेत् ॥ नवमदशमैकादश-
द्वादशानामन्यतमस्मिञ्जायते । अतोऽन्यथाविकारीभवति ॥

आठये महीने में गर्भगत बालकके हृदय में वास करने वाला जो ओज
अर्थात् सर्व धातुसम्बन्धी तेज अस्थिर रहता है । इसलिये आठवें महीनेका
पैदा हुआ लड़का नहीं जीता उसका सबब यहहै कि यह तेज उस महीने
में बालक के हृदय में पूर्ण रूप से नहीं जमता । यह राक्षसों का भागहै ।
ग्रन्थों में लिखा है कि शिव जी ने आठये महीने के बालकों को राक्षसों
को दे दिया है । इससे आठये महीने में उर्द का दाल और भात राक्षसों
को बलि देवे । यद्यपि यह वचन शास्त्रोक्त है परन्तु हमें कल्पित जान प

इता है क्योंकि शिव जी ऐसे हत्यारे नहीं हैं जो बालकों पर दया न कर के राक्षसों के भोजनार्थ दे देवें । आठवें महीने में बालकों के जीने का मुख्य कारण यही है जो ऊपर लिख चुके हैं अर्थात् सब धातुओं की है शक्ति है यह कभी गर्भिणी के तेज को सञ्चार करता है और कभी बालक के तेज को सञ्चार करती है । इसी से प्रायः माता और बालक दोनों उस महीने में मुरझाये रहते हैं । यही कारण है जो अष्टम महीने का जन्मा हुआ बालक नहीं जीता । औरनवह महीना ग्यारहवां और बारहवां महीना भी बालक उत्पन्न होने का है इसके उपरान्त होने से गर्भ न स मझ कर रक्तगुल्म आदि की बिमारी समझना चाहिये । परन्तु इस विषय में चरक मुनि की राय है कि बालक पैदा होने का समय दशही महीने तक रहता है उसके उपरान्त गर्भ में बालक का रहना विकार समझना चाहिये । लेकिन अधिकांश ऋषियों के मत से स्पष्ट होता है कि बालक गर्भ में बारह महीना तक रह सक्ता है । हमने किसी समय एक पत्र में पढ़ा है कि एक स्त्री के अठरह महीने में लड़का पैदा हुआ । बालक पेट में कैसे रहता है विस्तार पूर्वक उसके अंग प्रत्यंगादिकों का बयान मै तस्वीर के आगे बयान करेंगे । इस समय हम यह दिखलाते हैं कि जब गर्भगत बालक के अंग प्रत्यंग आत्मा आदि सब यथोचित बन गये तो वह बालक बिना आहार के जीता कैसे है क्योंकि मुख तो जरायु अर्थात् कफ से बन्द रहता है ? उसके जीने का सबब यह है ॥

मातुस्तुखलुरसवहायां नाड्यांगर्भनाड़ीप्रतिबद्धा, सास्य मातुराहारं सवीर्य्यमभिवहति । नोतेपसेहेनास्याभिवृद्धि-र्भवति ॥

माता के जितनी नाड़ियां रस बहने वाली हैं उनमें गर्भगत बालक की नाड़ी बंधी है, वही सब नाड़ियां माता के आहार और उसके वीर्य्य का तत्व खिंचकर भाग लेकर गर्भगत बालक को पुष्ट करती है ॥

गर्भगत बालकका प्रथम कौन अंग बनताहै ॥

इसमें प्रमाण, सुश्रुत शारीरस्थान अध्याय ३ ॥

गर्भस्य हि सम्भवत: पूर्वंशिर: सम्भवतीत्याह शौनक: शिरो मूलत्वाद्देहेन्द्रियाणां। हृदमिति कृतवीर्य्योबुद्धेर्मनसश्च स्थानत्वात्। नाभिरिति पाराशर्य्यस्ततोहि वर्द्धते देहो देहिन:। पाणिपादमिति मार्कण्डेयस्तन्मूलत्वाच्चेष्टायानर्भस्य। मध्यशरीरमिति सुभूतिर्गौतमस्तन्निबद्धत्वात् सर्व्वगात्रसम्भवस्य। तत्तु न सम्यक। सर्व्वाङ्गप्रत्यङ्गानि सम्भवन्तीत्याह धन्वन्तरिर्गर्भस्य सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते वंशाङ्कुरवच्चूतफलवच्च ॥

भावार्थः—इस विषय में शौनक जी कहते हैं कि गर्भगत बालक के प्रथम [illegible]र उत्पन्न होता है क्योंकि सम्पूर्ण इन्द्रियों की जड़ शिर है। कार्तवीर्यार्जुन यह तन्त्र शास्त्र के कर्त्ता हुये हैं। जो कहते हैं कि प्रथम गर्भ में बालक के हृ[illegible]य उत्पन्न होता है, कारण यह है कि मन और बुद्धि इन दोनों का स्थान हृ[illegible]य है। पराशर महाराज कहते हैं कि पहले सन्तान के नाभि बनती है क्योंकि [illegible]भिमेंही प्राण का स्थान है और यही वायु देह को बढ़ाती है। मार्कण्डेय जी [illegible]ह कहते हैं कि सम्पूर्ण शरीर धारी की गमनागमन चेष्टा हाथ पैरों केही द्वारा [illegible]ती है इससे पहले हाथही पैर बनते हैं। गौतम मुनि कहते हैं कि गर्भस्थित [illegible]ालक के प्रथम मध्य शरीर अर्थात् पेट उत्पन्न होता है, बाद उसके सब शरीर [illegible]नते हैं क्योंकि पेटही से सब शरीर का सम्बन्ध है। परन्तु धन्वन्तरि जी कहते [illegible] कि यह ठीक नहीं है सम्पूर्ण शरीर एक साथही उत्पन्न होता है किन्तु सब[illegible]ंग प्रथम सूक्ष्म होने से देख नहीं पड़ते, जैसे आम का फल गुठली जाली [illegible]पा मज्जा और ऊपर का छाल यह सभी एकही साथ उत्पन्न होता है परन्तु ब[illegible]त महीन होनेके कारण अलग २ नहीं देख पड़ते हैं और ज्यदहीं फल बढ़ता [illegible]ौर पुष्ट होता है तब सब देख पड़ने लगते हैं। इसी प्रकार गर्भ में भी उत्-

सूक्ष्म होनेके कारण दिख नहीं पड़ती तब बड़े और मोटे हो जाते हैं तब लग २ मालूम होने लगते हैं॥

बालक के शरीर में कौन वस्तु मातृज अर्थात् माता से और कौन वस्तु पितृज अर्थात् पिता से उत्पन्न है उसे

प्रकाश करते हैं॥

पितृज—गर्भस्थकेश्मश्रुलोमास्थि नखदन्तसिरास्नायुधमनीरेतःप्रभृतीनिस्थिराणिपितृजानि॥

मातृज—मांसशोणितमेदोमज्जाहृन्नाभियकृत् प्लीहान्त्रगुदप्रभृतीनिमृदूनिमातृजानि॥

पिता के अंश से बालक के शरीर में शिर के बाल, डाढ़ी, मूछ, रोम, नख, दांत, छोटे नस, बड़े नस, सबसे बड़े नस, और वीर्य यह उत्पन्न होते हैं। माता के अंश से गर्भ में बालक के मांस, वीर्य, रक्त, चरबी, मज्जा, हृदय, नाभी, पिलही, आंत और मलाशय आदि नरम पदार्थ उत्पन्न होते हैं॥

रसात्मजन्य पदार्थ॥

शरीरोपचयंवर्णः स्थितिर्हानिश्चरसजानि। इन्द्रियाणिज्ञानविज्ञानमायुः सुखदुःखादिकञ्चात्मजानि॥

रस की ताकत से गर्भगत बालक के शरीर की वृद्धि, बल, स्वरूप और स्थित अर्थात् गर्भ का ठहरजाना और हानि अर्थात् गर्भ का न ठहरना यह भी रसही से प्रगट होते हैं। तथा नेत्र कर्ण आदि इन्द्री, ज्ञान विज्ञान (सूक्ष्मपदार्थज्ञान) आयुः सुख दुख आदि यह सब आत्मा से उत्पन्न होते हैं।

पहिचान ॥

नि प्राक्पयोदर्शनंभवति दक्षिणाक्षिसह-
उत्कर्षति बाहुल्यात्त पुन्नामध्येयपुद्र
ति स्वप्नेपुपोपलभते पद्मोत्पलकुमुदाम्रा
व प्रसन्नमुखवर्णाचभवति तांब्रुयात् पु-
तद्विपर्य्ययेकन्याम् ॥

दहिने स्तनों में प्रथम दूध देख पड़े, तथा दा-
लूम हो, एवं दहना जांघ गर्भ के भार से कुछ
जितने पुरुष संज्ञक द्रव्य हैं-जैसे आम, केला, आ
ड़ा हाथी आदि जीवों में अभिलाष हो तथा
उ कमल, कुमोदनी और आवड़ा आदि पुल्लिङ्ग
ते एवं जिसका मुख सर्वदा प्रसन्न चमकीला रहे
दा करेगा और उपरोक्त बातें सब उलटी हों तो
गर्भ से कन्या उत्पन्न होगी । वाग्भट्ट जी इतना
ाश्वंचेष्टनी" और लक्षणों के अलावा जिस स्त्री
ी की सम्पूर्ण चेष्टा दक्षिण तर्फ रहै याने चले तो
, सोने में भी प्रायः दहने करवट सोवै । इससे
न्या जानना चाहिये ॥

ुन्सक गर्भके लक्षण ॥

न्नतं पुरस्तान्निर्गतमुदरं प्रागभिहितलक्ष-
ामितिविद्यात् ॥

ानों कोख ऊंचे से मालूम हों और आगे की ओर
ूर हो और जो ऊपर लड़की लड़का होने का ल

दहिना हाथ जमीन में टेक कर उठती है और चलने में भी अक्सर दहिना पैर उठता है। गर्भ में पुत्र के रहने से स्त्रियों के दहनी छाती कड़ी और कुछ सुर्ख हो जाती है। आंख की पुतली के नीचे जो सफेदी है उसमें जो डोरे रहते हैं दहिने तर्फ नीले हो जाते हैं और नसें देख पड़ने लगती हैं। कन्या गर्भ में रहने से उपरोक्त सब लक्षणों को उलटा समझना जैसे पेट का बायें तर्फ फूलना और अधिक फूला रहना और अक्सर बायां हाथ जमीन में टेक कर उठना, बांई छाती का कड़ा होना थोड़ी ललाई लिये नेत्र के डोरे बायें तर्फ नीले हो जाने इत्यादि॥

ग्रीस देश निवासी इरस्टाटल नामक फिलासफर कहते हैं कि यह बात हमने कई मरतबे आजमाया है और बहुत सत्य है। गर्भवती स्त्री के छाती से दूध निकाल पानी में डाल दे अगर दूध पानी के नीचे वैसाही बैठ जाय जरा भी न फैले तो जानना कि इसके पेट में लड़का है अगर यह दूध पानी पर उतराने लगे या पानी के ऊपर फैल जाय तो जानना कि गर्भमें कन्या है और यह बात तो प्रायः देखने में आई है कि लड़का पैदा होने में माता को क्लेश कम होता है लड़की में अधिक॥

गर्भवती स्त्री के त्याजकर्म॥

भावप्रकाश से॥

अतिव्यवायमायासं भारंप्रावरणंगुरु। अकालजागरस्वप्न कठिनोत्कटकासनम्॥ शोकक्रोधभयोद्वेग वेगश्रद्धाविधारणम्। उपवासाध्वतीक्ष्णोष्ण गुरुविष्टंभिभोजनम्॥ रक्तंनिवसनंश्वभ्रकूपेक्षांमद्यमामिषं। उत्तानशयनंयच्चस्त्रियोनेच्छन्तितत्यजेत्॥ तथारक्तस्रुतिंशुद्धिं वस्तिमामासतोऽष्टमात्। एभिर्गर्भःस्रवेदामः कुक्षौशुष्येन्म्रियेतवा॥

बहुत प्रसङ्ग करना, अधिक मेहनत करना, भारी बोझ का उठाना,

बहुत देर तक खड़े रहना, भारी बोझ उठाना, नाच करना, हमेशा हाथों के ध्यान में भारी चीजें उठाना, दिवा शयन करना और रात्रि को जागना, बहुत देर तक रोना, उपवास करना, और दूर तक पैदल चलना, तेल, मिर्चे, खटाई, अचार, सिरका, आदि तीक्ष्ण, दीर्घ गरम, और जल्द कहीं न पचे ऐसे पदार्थों का भोजन, लाल वस्त्रों का पहनना §, गड़ाह, खाई और कुवें का झांकना, शराब पीना, मांस खाना, हमेशा चित्त सोना, इत्यादि कुपथ्य गर्भिणी स्त्री को चाहिये कि त्याग करे क्योंकि इन कारणों से प्रायः गर्भ गिर जाता है । तथा फस्त खोलाना, जुलाब देना, दवा खा के वमन करना और आठवें महीने के भीतर वस्ति कर्म अर्थात् पिचकारी से गुद मार्ग द्वारा मलाशय में दवा पहुंचाना (आठवें महीने में वस्तिकर्म करना लिखा है) इसके अलावा भी जो स्त्री कई बार लड़का जन चुकी है और उसके जो अनुभव किये हुये पथ्य हैं उनको भी विशेष कर मानना गर्भिणियों के लिये हित है । ऊपर लिखे हुये कुपथ्यों के करने से गर्भ गिर जाता या गर्भ ही में बालक मरजाता है इसलिये गर्भिणियों को पथ्य से रहना चाहिये ॥

इस स्थल में स्त्रियों के कुछ उन रोगों का बयान करते हैं जिसके सबब से गर्भ नहीं रहता जैसे योनिरोग, प्रदररोग, आर्तवरोग आदि । जिनमें हम प्रथम योनिरोग को कहते हैं । स्त्रियों के योनि (भग) बीस प्रकार का रोग होता है ॥

---

* हमारे इस देश की मूर्खा स्त्रियां पूरे गर्भ को धारण किये दो दो चार चार कोस पैदल गङ्गा नहाने दौड़ी जाती हैं, गर्भावस्था को कौन कहे सोहर में भी एकादशी ऐतवार का व्रत करती हैं जब इन कुपथ्यों से गर्भ गिर जाता है अथवा बालक उत्पन्न हुआ मरगया तो घर की और मरे हुये पित्रों को दोष देती हैं ॥

§ -लाल वस्त्रों के ललाई की चमक नेत्रों के द्वारा भीतर जा के बालक के नेत्र को गरम करता है इसी लिये समस्त चमकीली चीजें गर्भिणी स्त्रियों को देखना मना किया है ॥

योनिरोग ॥

विंशतिर्योनिरोगास्युर्वातपित्तकफादपि । सन्निपातज
ताच्च लोहिताक्षयतस्तथा ॥ शुष्काचवामिनीचैव षण्ढीचां
मुखीतथा । सूचीमुखीविप्लुताच्च जातघ्नीचपरिप्लुता ॥ उपप्
प्राक्चरणा महायोनिकर्णिका । आनन्दाचातिचरणा यो
रोगइतीरिताः ॥

स्त्रियों के योनिमें बीस प्रकार का रोग होता है उनके नाम य
ातजा, पित्तजा, कफजा, सन्निपातजा, रक्तजा, लोहितक्षया, शुष्का, वा
षण्ढी, अन्तर्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातघ्नी, परिप्लुता, उपप्लुत
्चरणा, महायोनि, कर्णिका, नन्दा और अतिचरणा यही २० रोग

सुश्रुत आदि ग्रंथों के मत से भी योनिरोग लिखते हैं क्योंकि नाम के
ार में और अन्य ग्रंथों में कुछ भेद है। सुश्रुतादि में योनिरोग के नाम इस
। लिखते हैं कि उदावर्त्ता १ वंध्या २ विप्लुता ३ परिप्लुता और वात
ांचरोग वायु दोष से होते हैं। लोहिताक्षरा १ प्रस्रंसिनी २ वामिनी ३
ौर पित्तला यह पांच रोग पित्त दोष से होते हैं। अत्यानन्दा १ कर्णि
रणा ३ अतिचरणा ४ कफजा यह पांच कफ दोष से उत्पन्न होते हैं।
ण्डिनी २ महती ३ सूचिवक्त्रा ४ और त्रिदोषजा यह पांच सन्निपात
तीनों दोषों से हैं। इसके उत्पत्ति का कारण सुश्रुत में इस प्रकार लिखा

विंशतिर्व्यापदो योनि[illegible] । रोग संग्रहे ।
[illegible] गार्त्तवे न च ॥
॥ पृथक् ।

[illegible]
[illegible] है।

उदावृता—जिस स्त्री के मासिक धर्म बड़े कष्ट से हो, [illegible] इस का नाम [illegible] उदावृता है।

वन्ध्या—जिसका मासिक धर्म नष्ट और [illegible] गर्भाधान नहीं रहता।

विप्लुता—योनिरोग में, योनि के भीतर हमेशा एक प्रकार का दर्द रहता है।

परिप्लुता—योनिरोग में मैथुन के समय योनि के भीतर बड़ी पीड़ा होती है।

वातला—योनिरोग में मासिक रक्त रुक जाने से ऐसे [illegible] छिद्र किया हुआ हो। यद्यपि उपरोक्त सारे योनिरोगों में भी वायु का कोप है तथापि वातला योनिरोग में इसे अधिक होता है।

लोहिताक्षरा—जिस योनि से द्वारा गरम २ लोहू दाह सहित जाते हों उसे लोहिताक्षरा कहते हैं।

वामिनी—जिस स्त्री की योनि पुरुष के मैथुन के बाद पुरुष के लिंग द्वारा गिरा हुआ वीर्य और पात हुआ स्त्री की रज दोनों को बाहर निकाल दे उसे वामिनी योनिरोग कहते हैं।

स्रंसिनी—जिस स्त्री की योनि अधिक देर मैथुन के होने से, या लिंग की रगड़ से बाहर निकल आवे वह स्रंसिनी योनि है, ऐसी स्त्री के गर्भ रह जाने से सन्तान बड़े मुश्किल से होता है।

पुत्रघ्नी—(दूसरा नाम जातघ्नी) जिस स्त्री के मासिक रक्त गर्भ-धी के

योनि में शीतल उपचार न करके गरम उपचार करने से लाभ होता है जैसे पीपर, मिर्च, उरद, सौंफ, कूट और सेंधानोन इन सब औषधों को बूट पानी में पीस अंगुष्ट प्रमाण बत्ती बनाय छाया में सुखाय लेय। इस बत्ती को योनि में रखने से कफ सम्बन्धी योनिरोग अवश्य आराम होता है।

योनिरोग पर धातक्यादि तैल, चरक से।

धातक्यमलकी पत्र स्रोतोजमधुकोत्पलैः। जंव्वाम्र मध्य कासीस लोध्रकट्फलतिन्दुकैः॥ सौराष्ट्रि दाड़िमत्वग् उदुम्बर शलाटुभिः। अक्षमात्रैरजामूत्रे क्षीरे च द्विगुणं पचेत्॥ तैल प्रस्थंपिचुं तस्मात्योनौच प्रणयेत्ततः। कटीपृष्टत्रिकाभ्यंगस्नेहं वस्ति च दापयेत्॥ पिच्छल स्राविणी योनिर्विप्लुतोपप्लुता तथा। उत्ताना चोन्नता शूना सिदृध्येत्सस्फोट शूलिनी॥

धवपत्र, आंवले के पत्र, कमलपत्र, कालासुरमा, मुलेठी, जामुन और आम की गुठली, कासीस, लोध, कायफल, तेंदू का फल या छाल, फिटकिरी, अनार का छाल और गूलर के कच्चे फल इन दवाइयों को सवा २ तोला ले सब को कूट कर ऽ१॥ एक सेर अढ़ाई पाव बकरी के मूत में पीस लुगदी कर एक सेर काठेलिए का तेल कढ़ाई में डाल उसी में लुगदी और जितना बकरी का मूत है उतनाही गौका दूध भी उसी में डाल कर धीमी आंच से पकालेवै जब दूध वगैरह जल जाय तेल अकेला रह जाय अग्नि से उतार शीतल कर बोतल में भर के रख देवै। इस तेल का फोहा योनि में रखने से तथा पीठ, कमर, पीठ की रीढ़ में इस तेल के मालिश करने से और इसी की पिचकारी योनि में देने से पिच्छादि योनि से पीव का बहना, योनि का सूजन और घाव तथा विप्लुता, उपप्लुता, उत्ताना आदि योनिरोग अति दुष्ट कठिन भी आराम होता है। इस तेल के दवाइयों का मोल भाषा में श्लोक से कुछ बाकी है पाठक गण संदेह न करें।

चूहे का मांस तेल में पका के उसका फोहा योनि में धरने से अथवा सूमे के मांस के भरता में सेंधा नोन मिला के भग में रखने से निस्सन्देह योन्यर्श और योनिकन्द रोग आराम होता है लेकिन जब तक रोग समूल नष्ट न हो बराबर उसका फोहा रखता जावै ।

महता योनि की चिकित्सा ।

मदनफल मधूक कर्पूर प्रपूरितं कामिनी जनस्य ।
चिरगलित यौवनस्य च वरांगमति गाढ़सुकुमारं ॥

मैनफल, मुलेठी, और कपूर तीनों को महीन पीस तंजेव के कपड़े में पोटरी बनाय भग के भीतर रखने से अतिफैली तथा ढीली योनि संकुचित और सुकुमार हो जाती है ।

मासिक धर्म की चिकित्सा ।

यद्यपि इस रोग होने का कारण ऊपर लिख चुके हैं तथापि इस स्थल में इतना कहना जरूरी है कि स्त्रियों के माहवारी का बन्द होजाना और भी बहुत से कारण हैं—जैसे अत्यन्त गरम प्रकृति होने के सबब मासिक खून का सूखजाना उसका लक्षण यह होगा कि शरीर दुबला, शरीर में गरमी मालूम होना और भी जो खून कमी के लक्षण हैं वह भी पाये जाते हैं । चाहिये कि ऐसी अवस्था में पुष्ट और रक्त वर्द्धक औषधियां खिला के तब मासिक खोलने की चेष्टा करै । किसी को अति ठंढक पहुंच कर खून गाढ़ा होके जम जाता है इससे भी मासिक रुक जाता है, किसी के योनि में घाव होके मवाद मूख जाता है इससे या योनि के रगों के मुख बन्द हो जाने से भी मासिक धर्म्म का होना बन्द हो जाता है और किसी २ को अधिक मोटेपन से रुधिर निकलनेके रास्ते बंद हो जाते हैं । उक्त कारणों को और प्रकृति को अच्छी तरह देख भाल के चिकित्सा करना वैद्य को लाजमी है ।

इक्ष्वाकुबीजदन्ती चपलागुडमदनफली यावकयष्ट्या
मास्नुक्चीरैर्वर्त्तियोनिगता कुसुमसंजनी ॥

कडुई तूम्बी के बीज, जवाल गोटे के वृक्ष की जड़ की छाल, पीपर, पुराना गुड़, मैनफल, दारू का कीट (शराब खिंच जाने के बाद कीट नीचे हेग में जम जाता है) और मुलेठी इन सब चीजों को महीन थूहर के दूध में घोट अंगुलिया के बराबर बत्ती बना के छाया में सुखाय लेय। इस बत्ती को योनि में रखने से अनार्तवरोग अर्थात् मासिक धर्म का न होना आराम होके स्त्री महीने २ ऋतुमती होने लगती है।

मालकांगुनी, राई, बिजयसार लकड़ी, दुधिया बच, इन सब औषधों को कूट कपर छान कर तीन २ माशा की पुड़िया बना ले सांझ सबेरे। पुड़िया मुख में रख शीतल जल से उतार जावै इस प्रकार पांच सात दिन दवा खाने से मासिक धर्म होने लगता है। अगर इस चूर्ण को भी खिलावै और योनि में पूर्वोक्त बत्ती रक्खे तो बहुत शीघ्र फायदा होवै परन्तु यह चूर्ण गरम प्रकृति वाली को फायदा नहीं करता। गरम मिजाज वाली को खून बढ़ाने की चेष्टा करै और योनि में उक्त बत्ती को रक्खे। जिस स्त्री के मासिक धर्म नहीं होता उसे नित्य मछली कालातिल, उरद और सिरका आदि खाना फायदा करता है।

योनिसूल की दवा।

पिचुमन्दरसेनमिश्रितैः पिचुमन्दानिलभन्नुबीजकैः।
घटितांवटिकांभगान्तरे भगशूलप्रशमायधारयेत् ॥

नीम की निबोली और रेंड़ी को बीज दोनों को नीम के पत्तों के रसों में महीन घोट कर आंवला के समान गोली बनाय ले, इस गोली को योनि भीतर रखने से योनि का दर्द बहुत शीघ्र आराम होता है। इसी प्रकार ...रण को जड़ और सोंठ इन दोनों को खूब महीन-पीस बकरी की ...

घोट योनि में लेप करने से योनि का दर्द तत्काल जाता रहता है। परंतु जिस स्त्री के योनि में दर्द, गरमी सुजाक आदि के कारण से होगा उसमें फायदा नहीं करैगा।

वन्ध्याचिकित्सा ॥

ऊपर कहेहुये योनिरोग में, और सात प्रकारके योनिफूल में जो रोग होते हैं जिसके लक्षण आरोग्य दर्पण के दूसरे खण्ड में लिख चुके हैं उन रोगों में गर्भ नहीं रहता, तथा माता पिता के अत्यंत वीर्य्य कमजोर हो जानेसे भी गर्भ स्थित नहीं होता, इन सब बातों का विचार करके वन्ध्या की चिकित्सा करना उत्तम है क्योंकि जब तक योनिरोग आदि आराम न होगा गर्भस्थित होना अति दुस्तर है। रत्नावली में वन्ध्या की चिकित्सा इस प्रकार लिखी है॥

क्वाथेनहयगन्धायाःसाधितंसघृतंपयः। ऋतुस्नाताऽबलापित्वा गर्भंधत्तेनसंशयः॥ पिप्पलीशृङ्गवेरञ्च मरिचनागकेशरं। घृतेन सहपातव्यं वन्ध्यापिलभतेसुतम्॥

दो तोला नागौरी असगन्ध को गौके दूध में पीस लुगदी बनाय एक पाव गौ का दूध और एक तोला गौ के घृत में पकाय लेय बाद उस दूध को कपड़े में छान कर ऋतुस्नान करके चौथे दिन यदि स्त्री पिवै तो निश्चय गर्भ धारण करै। इसी प्रकार छोटी पीपर, सोंठ, मिरच और नागकेशर इनका ६ माशा चूर्ण घी के साथ ऋतुस्नान के चौथे दिन चाटने से वन्ध्या भी सन्तान उत्पन्न करै। गर्भस्थिति के लिये वैद्यक शास्त्र में और भी अनेक दवाइयां हैं जैसे सोमघृत, फलघृत आदि जिसका वर्णन आ० द० के दूसरे खण्ड में कर चुका हूं कि जो घृत, स्त्री पुरुष दोनों के दूषित वीर्य्य को शुद्ध करके निःसन्देह तथा बलवान गर्भ को प्राप्त करता है॥

रत्नावली में लिखा है कि तीन प्रकार की वन्ध्या होती है "जन्मवन्ध्या काकवन्ध्या मृतवत्सा च त्रिविधास्त्रियः" एक जन्मवन्ध्या जिस के कभी गर्भ स्थित न हुआ हो, दूसरी काकवन्ध्या जिसके एक सन्तान हो के फिर गर्भाधान न रहे, तीसरी मृतवन्ध्या अर्थात् लड़के हों और मर जाँय। और इसकी चिकित्सा भी अनेक प्रकार के लिखे हैं [illegible]

पुरुष समागम आदि से पहरेज करै जब देखै कि रज वीर्य दोनों खूब शुद्ध हैं पूर्वोक्त विधि के अनुसार गर्भाधान करै निस्सन्देह सन्तान उत्पन्न होगा।

प्रदर रोग का निदान ॥

स्त्रियों के योनि के द्वारा रक्त अथवा धात का आना प्रदर रोग कहाता है और प्रायः यह रोग ऐसे २ कुपथ्यों से होता है—जैसे प्रकृति के विरुद्ध अधिक रूखा गरम भोजन करना, शराब पीना, खाने पर तुरत फिर खाना, कच्चे गर्भ का गिरजाना, अति मैथुन करना, सवारी पर चढ़ के अथवा पैदल बहुत घूमना, अधिक शोच और उपवास अर्थात् व्रतों का रहना, अवहन बोझ का उठाना, अधिक चोट से पीड़ित होना इत्यादि कारणों से वातादि दोष करके चारप्रकारका प्रदर रोग होता है ॥

असृग्दरंभवेत्सर्वं सांगमर्दंसवेदनं । तस्यातिवृद्धौदौर्बल्यंभ्रमोमूर्छामदस्तृषा ॥ दाहःप्रलापःपांडुत्वं तंद्रारोगाश्चवातजा ॥

इसका सामान्य रूप यह है कि चारो प्रकार के प्रदर रोग में शरीर ऐंठता है और खफीफ पीड़ा होती है । प्रदर रोग के बहुत बढ़ जाने से शरीर दुबला हो जाता है, बिना मेहनत किये शरीर थकोंही मालूम हो यह मन हो कि लेटे रहो कुछ काम काज मत करो, सिर में घुमरी और नेत्र में गरमी मालूम होना, पियास की अधिकता शरीर में जलन, जी का घबड़ाना, शरीर की रंगत पीलाई और सफेदी मायल, नेत्रों पर झपकी और भी वायु के अनेक उपद्रव हो जाते हैं ॥

वातादि भेद से लक्षण ॥

आमंसपिच्छाप्रतिमंसपांडु पुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु । सपीतनीलासितरक्तमुष्णं पित्तार्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् ॥ रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पं वातार्तिवातात्पिशितोदकाभं । सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णंमज्जप्रकाशंकुणपंत्रिदोषं ॥ तच्चाप्यसाध्यंप्र-

के समय से नहीं लिखते हैं । लेकिन गर्भ का न रहना मुख्य वीर्यदोष है इसने कई बार स्त्री पुरुष के रज वीर्य की परीक्षा करके वीर्य शुद्ध कारी औषध खिलाया है गर्भ अवश्य रहा है और पूर्ण मास में सुन्दर सन्तान उत्पन्न हुआ है ।

पुरुष के वीर्य की परीक्षा इस प्रकार से करै एक फूल के कटोरे में कम उष्ण जल भरदेय और उसीमें पुरुष अपने वीर्यको डारै यदि वीर्य एकबारगी जल के भीतर चला जाय तो जानना कि यह वीर्य गर्भाधान कराने लायक है और वीर्य बूंद २ करके पानी पर उतराने लगै या पानी पर फैलजाय तो जानना कि यह वीर्य गर्भाधान नहीं कर सक्ता । यदि वीर्य न पानी के भीतरही जाय और न ऊपर उतरावै पानी के बीच में जाके ठहर जावै तो जानना कि इस वीर्य से गर्भाधान होगा परन्तु सन्तान नहीं जियेगा। इसी प्रकार रज की परीक्षा करै एक गमले में थोड़े से सोआ के वृक्ष लगा दे और स्त्री से उस वृक्ष की जड़ में पेशाब करावै यदि वृक्ष मुरझा जावै तो जानना कि इसका रज शुद्ध नहीं है और वृक्ष जस के तस बने रहैं तो जानना रज शुद्ध है ।

जब देखे कि पुरुष के वीर्य में दोष है तो नीचे लिखी हुई औषध खिलावै जब तक वीर्य शुद्ध न हो ।

सफेद मूसली बम्बई की, तालमखाना का बीज, बीजबन्द, गुलसकरी, कामराज, मखाना और सेमर का जड़ इन सातों चीजों को बराबर भाग ले कूट कपरछान कर छः २ मासा की पुड़िया बनाय लेय, सामसबेरे एक पुड़िया मुख में रख पाव भर गौ के दूध में २ तोला मिश्री और आधा तोला गौ का घी डाल के पी जावै इसी प्रकार जब तक उत्तम बलवान वीर्य न हो दवा बराबर खाता जावै और तेल मिर्चा खटाई शराब मांस स्त्री प्रसङ्ग आदि से परहेज करै ।

स्त्री के रज शुद्ध करने के लिये यह दवा खिलावै । नागौरी असगन्ध, पच्छाहीशतावर एक २ छटांक, बबूल का गोंद ३ तोला, छोटी लायची १ तोला सब चीजों की महीन पीस कपरछान करलेय इसका मात्रा ३ मासा से एक तोला तक है सांझ सबेरे दोनों समय गौ के दूध से दवा खावै जब तक रज शुद्ध न हो और मद्यमांसादि गरमभोजन, और शोक, क्रोध,

दुग्ध सागूदाना आदि से परहेज करें जब देखे कि रज वीर्य दोनों शु
हैं पूर्वोक्त विधि के अनुसार गर्भाधान करें निस्सन्देह सन्तान उत्पन्न ह

प्रदर रोग का निदान ॥

स्त्रियों के योनि के द्वारा रक्त अथवा धातु का जाना प्रदर रो
होता है और प्रायः यह रोग ऐसे २ कुपथ्यों से होता है--जैसे प्रक
विरुद्ध अधिक खट्टा गरम भोजन करना, शराब पीना, खाने पर
फिर खाना, वर्ष गर्भ का गिरजाना, अति मैथुन करना, सवारी प
के अथवा पैदल बहुत घूमना, अधिक शोक और उपवास अर्था
का रहना, अत्यन्त बोझ का उठाना, अधिक चोट से पीड़ित हो
त्यादि कारणों से वातादि दोष करके चारप्रकारका प्रदर रोग होता

असृग्दरंभवेत्सर्वं सांगमर्दंसवेदनं । तस्यातिवृद्धौदौर्बल्य
भ्रमोमूर्छामदस्तृषा ॥ दाहःप्रलापःपांडुत्वं तंद्रारोगाश्चवातज

इसका सामान्य रूप यह है कि चारो प्रकार के प्रदर रोग में
टूटता है और सफेद पीड़ा होती है । प्रदर रोग के बहुत बढ़
शरीर दुबला हो जाता है, बिना मेहनत किये शरीर थकासी माल
यह मन हो कि लेटे रहो कुछ काम काज मत करो, शिर में घुमरी
नेत्र में गरमी मालूम होना, पिपासा की अधिकता शरीर में जल
का घबड़ाना, शरीर की रंगत पीलाई और सफेदी मायल, नेत्रों
पकी और भी वायु के अनेक उपद्रव हो जाते हैं ॥

वातादि भेद से लक्षण ॥

आमंसपिच्छाप्रतिमंसपांडु पुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु
पीतासितनीलामितरक्तमुष्णं पित्तार्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् ॥ रू
क्षारुणंफेनिलमल्पमल्पं वातार्तिवातात्पिशितोदकाभं ।

माधोनिदान से वातादि भेदों करके लक्षण कहते हैं। जिस प्रदर रोग में कफ का कोप होता है उसमें योनि से, आंव की तरह अथवा भात के माड़ के समान पीला सफेद मिश्रित रंग का या कोंदव धान के धोवन सरीखा धात निकलता है। जिस प्रदर रोग में पित्त का कोप रहता है उसमें नीला, काला, पीला, लाल और अतिगरम पेट और पेड़ू में दर्द होके योनि द्वारा लोहू निकलता है। वायु दोष से प्रदर रोग में गुलाबी रंग का फेन सहित थोड़ा २ कमर और पेड़ू में पीड़ा हो के अथवा मांस के धोवन सरीखा योनि द्वारा धातु निकलता है और जिस प्रदर रोग में तीनों दोष मिले रहते हैं उसमें जैसे सहत और घी मिल जाने का रंग होता है उस रंग का या हरिताल के रंग के समान अथवा चरबी की भांति दुर्गंधि सहित योनि के द्वारा धात का मवाद निकलता है यह असाध्य है सैकड़ों बार औषध खिला के परीक्षा लिया है कुछ भी फायदा नहीं होता निस्सन्देह त्रिदोष युक्त प्रदर रोग वाली स्त्री मर जाती है इसलिये बुद्धिमान वैद्य उस प्रदर रोग की चिकित्सा न करै॥

सोमरोगका लक्षण॥

भाव प्रकाश से॥

स्त्रीणामतिप्रसङ्गेन शोकाच्चापिश्रमादपि। अतिसारकयोगाद्वागरयोगात्तथैव च॥ आपःसर्वशरीरस्थाः क्षुभ्यन्तिप्रस्रवंति च। तस्मास्ताःप्रच्युताः स्थानान्मूत्रमार्गंव्रजंतिहि॥ प्रसन्नाविमलाःशीता निर्गंधानीरुजाःसिताः। स्रवंतिचातिमात्रंताः सानशक्तोतिदुर्बला॥ वेगंधारयितुंतासां न सुखंविंदते क्वचित्। शिरःशिथिलतातस्या मुखंतालु च शुष्यति॥ मूर्छा जुंभाप्रलापश्च त्वक्रुक्षाचातिमात्रतः। भक्ष्यैर्भोज्यैश्चपेयैश्च न तृप्तिंलभतेसदा॥ सन्धारणाच्छरीरस्य तास्मापःसोम संज्ञिताः। ततःसोमक्षयात्स्त्रीणां सोमरोगइतिस्मृतः॥

जिस प्रकार पुरुष को बहुमूत्र रोग होता है, और अधिक मूत्र द्वा पात जाते २ मनुष्य मर जाता है । उसी तरह स्त्रियोंको सोम रोग हो है और यह भी ऐसा दुष्कर रोग है कि यदि प्रारम्भ में उपाय न कि जाय तो फिर आराम होना कठिन हो जाता है और कुछ दिनों में गलकर मर जाती है । यह रोग स्त्रियों के ही होता है और इसके हो का भी कुपथ्य वही है जो प्रदर रोग में लिख आये हैं जैसे—अति पुन, अति शोच, अधिक मेहनत आदि विशेष यह कि जुलाब के वि जाने और जहरीली वस्तु के खाने से सम्पूर्ण शरीर का रस रक्तादि पदार्थ और जल का अंश अपना २ स्थान छोड़ मूत्राशय में प्राप्त हो योनिमार्ग द्वारा अनियमित समय में भी निकला करताहै । यह जल समान साफ, रंग रहित, शीतल, जिसमें कुछ भी गंध नहीं न किसी प्रक का दर्द सर्वदा दिवा रात्रि निकला करता है । यही बिमारी जब अधि बढ़ जाती है तब स्त्री वेग को नहीं रोक सक्ती अर्थात् पेशाब लगने उठते २ कपड़े में भी हो जाता है इससे हर समय धोती भीजी रहती इस रोग वाली स्त्री को शिर में दर्द घुमरी, चक्कर, मुख का सूखना, ध कना, शरीर कमजोर, खाने पीने की चीजों से तृप्ति नहीं होना बना हता है । इस रोग में स्त्री का रज आदि सर पदार्थ पानी सरीखा ब करता है तथा उसके क्षीण होने से स्त्री के सोम रोग होता है ॥

मूत्रातिसार ॥

सोमरोगेचिरंजातेयदामूत्रमतिस्रवेत् । मूत्रातिसारंसंप्राहु बलविध्वंसनंपरं ॥

जब स्त्री को सोमरोग बहुत दिनों तक बना रहता है तो उसमें मूत्रातिसार होजाता है अर्थात् बारम्बार और अधिक मिकदार से पेश आने लगता है और रोकने से रुकता नहीं इसमें स्त्री का शीघ्रही नाश होजाता है और मर जाती है या कोई अति दुष्कर रोग उसके श में होजाता है ॥

मार, रक्त पित्त और रक्तज बवासीर के आराम करने वाली हैं ये चारो प्रकार के प्रदररोगों को आराम करती हैं ॥

परीक्षित औषधियां—दारु हरदी, रसवत, चिरायता, रूसा, नागरमोथा, बेल का गूदा और भेलावां इन सब औषधों को बराबर तौल दो तोला ले अधकचरा कर एक पाव जल में एक मृत्तिका पात्र में रातको भिजा देवे सवेरे जोश देवे जब एक छँटाक जल रहजाय तबतक शीतलकर के छान लेय और छः मासा मिश्री मिला के पी जावै, इसी प्रकार सबेरे भिजोवै तो शाम को पकाय कर पीवै । यह पूरा मात्राहै यदि रोगी कमजोर या उमर कम हो तो मात्रा भी कम करलेवे । भेलावां की टिपुनी काट करके फेंक देवै और उसे फाड़ कर बीज निकाल डाले । खानेको नहीं बीज न देवै ॥

चन्दनादिचूर्ण प्रदराधिकारे ॥

चन्दनंनलदंलोध्रमुशीरंपद्मकेशरं । नागपुष्पंचबिल्वंचभद्रमुस्तासशर्करा ॥ ह्रीवेरञ्चैवपाठाचकुटजस्यफलंत्वचं । शृङ्गवेरं सातिविषाधातकीचरसाञ्जनं ॥ आम्रास्थिजंबुमारास्थितथा मोचरसोद्भवः । नीलोत्पलंसमङ्गाचसूक्ष्मैलादाडिमोद्भवं ॥ चतुर्विंशतिमेतानिसमभागानिकारयेत् । तण्डुलोदकसंयुक्तंमधुनासहयोजयेत् । चतुःप्रकारंप्रदरंरक्तातिसारमुल्बणम् ॥ रक्तार्शांसिनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा । अश्विनोःसम्मतोयोगोरक्तपित्तनिबर्हणः ॥

यह नुसखा इस भैषज्य रत्नावली से लिखते हैं जिसे अनेक बार आजमाके देखा है जो निसन्देह प्रदररोग को आराम करता है । सफेद चन्दन जटामासी, लोध, खस, कमल के फूल के भीतर का केशर व जिसमें पराग मखमट्टे की गरी, बेल का गूदा, नागरमोथा, मिश्री, हाऊबेर, पाढ़ी, कुरैया की छाल, इन्द्रजव, सोंठ, अतीस, धवके फूल, रसवत, आम की गुठलीकी गरी, जामुनके गुठलीकी गरी, मोचरस, नीलकमल का पत्ता, व

ाने पर कमलगट्टे की गरी, मजीठ, छोटी लायची और अनारकाफूल, सब औषधियों औषधों को समान भाग ले कूट कपरछान कर किसी दार योमल में रखदे । इस चूर्ण का मात्रा ६ मासा से दो तोला प- त है, इस चूर्ण को चावल के धोवन और सहतके साथ कुछदिन खाने वारो प्रकार का प्रदररोग रक्तातिसार एवं रक्तज बावासीर निस्सन्देह राम होताहै जिसतरह सूर्यके प्रकाश से अन्धकारका नाशहोताहै उसी ार इस चूर्णके सेवनसे प्रदररोग का नाश होताहै इस चूर्णको अश्विनी ार ने प्रकाश किया है इससे रक्त पित्त का भी नाश होता है। चावल धोवन की क्रिया यह है कि आधी छँटाक पुराने चावल को थोड़ा कु ़ कर जिसमें दो तीन टुकड़े हो जांय १ पाव जल में भिजा दे घंटे दो ़ के याद खूब मलकर छान लेव और उसमें ३ मासा सहत मिलाके उक्त ़ो को मुखमें रख ऊपरसे चावल का धोवन पीजावे, अथवा चावल के ़वन में चूर्ण को घोट छानकर पीजावे इसतरह पीनेसे और भी जल्द ़ायदा करता है खानेमें गरम चीजों का पहरेज ॥

दो तोला अशोक वृक्ष की छाल को दूध में पका के मिश्री मिला के ़ोनों समय पीने से रक्त प्रदर आराम होता है उसी प्रकार पके गूलर फलों को सुखाय चूर्ण कर मिश्री मिलाय एक तोला के अंदाज दोनों मय दूध के साथ अथवा पानी के साथ खाने से रक्त प्रदर को फायदा ़रता है ॥

सफेद चन्दन १ तोला, खस १ तोला, कमलगट्टे की गरी १ तोला ़ीनों को आधसेर चावल के धोवन में खूब महीन घोंट छान कर दो ़ोला मिश्री मिला के दिन भर में कई मरतबा करके पीने से और केवल ़ूध चावल मिश्री के भोजन करने से योनि द्वारा लोहू का जाना बन्द होता है । इसी प्रकार पक्का केले की खीसी को दूध से कई मरतबां खाम कर खानेसे योनि द्वारा लोहू का जाना बंद होता है ॥

प्रदर रोग में पथ्याऽपथ्य॥

साठी के धान का अथवा पुराने चावल का भात, मूंग मसूर चना का दाल, गेहूं या जव की रोटी, गौ या बकरी का दूध, भैंस का कटहर, केला, चौलाई, परवर, पुराना कुम्हड़ा, कमल का नाल लौकी की तरकारी। चिरौंजी, अदरख, ताड़ का फल, अनार दोनों प्रकार के, छुहारा, सिंघाड़ा, आमला, नारियल, कसेरू, कैथा, ठण्ढा जल आदि जितने प्रकार के शीतल पदार्थ हैं सब फायदा करते हैं (अपथ्य) बहुत मेहनत करना, रास्ता चलना, धूप और आगके सामने बैठना, दिशा पेशाब का रोकना, तमाकूपीना, मद्य मांस खाना, शोच और गुस्सा करना, गुड़ भांटा, तिल, उरद, मरसें, दही, सिरका, अचार, लहसुन आदि जितने गरम और क्षार द्रव्य हैं सब नुकसान करते हैं॥

सोम और मूत्रातिसार की चिकित्सा॥

भिंडीकीजड़, भूम्याविंदारू, मूलाआमला, बिदारीकंद यहसब चारतोला बरदका चूर्ण, और मुलेठी दो २ तोला सबको महीन पीस छः २ मासा की पुड़िया बनालेय साम सबेरे एक पुड़िया मुखमें रख पावभर गौ के दूध में मिश्री मिलाके ऊपर से पीनेसे सोमरोग आराम होताहै अथवा कुछ दिन बराबर दूधके साथ पत्वाड़ी शतावर पीनेसे भी रोग आराम और ऊपर लिखेहुये चन्दनादि चूर्ण से भी सोमरोग आराम होता है। मूत्रातिसार के लिये यह दवा परीक्षित है ताड़ वृक्ष की जड़, खजूरकी जड़, मुलेठी और बिलाईकन्द सबको समभाग ले चूर्ण कर छः मासा अन्दाज गौ के दूध अथवा चावलके धोवनके साथ दोनों समय कुछ दिन बराबर सेवन करनेसे मूत्रातिसार रोग आराम होताहै, इसरोगमें भी वही पथ्य है जो प्रदररोगके लिये कहा गयाहै। स्त्रियोंके और रोगोंका वर्णन आरोग्यदर्पण के चतुर्थ खण्ड अथवा पञ्चम खण्ड में लिखा जायगा॥

परीक्षित औषधियां।

वैद्यक के ग्रंथों में अभ्रक की उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि जब वृत्रा
र के मारने के लिये इन्द्र ने वज्र उठाया तब उसमें से चिनगारियां
नकल आकाश में फैल कर पर्वतों के शिखरों पर गिरीं उनसे अभ्रक उ-
त्न हुआ सो जहां का पत्थल जिस रंग था वहां उसी रंग का अब तक
भ्रक मिलता है परन्तु विशेष कर उत्तर के पर्वतों में उत्पन्न अभ्रक में
हुसत्व और सबों में अधिक गुणवान है॥

अथ अभ्रक के शोधन मारण की विधि।

अभ्रक के दो भेद हैं स्वेताभ्रक और कृष्णाभ्रक, सो रस बनाने के काम
ं काला अभ्रक लिया जाता है क्योंकि काले अभ्रक मे पारद है और सफेद
भ्रक में पारा नही है। यह काला अभ्रक चार प्रकार का है पिनाक-
दर्दुर–नाग और–वज्र (लक्षण) पिनाक को आग में डालने से पत्रे खिल
जाते हैं, दर्दुर आगमें डालनेसे मेढ़क के समान शब्द होता है, और नाग
को आग में डालनेसे फुफकार देता है ये तीनों अभ्रक खानेसे मृत्यु को देता
है और वज्र नामक अभ्रक आग में डालने से कुछ रूपान्तर अथवा शब्दादि
नही होता किञ्चिन्मात्र फूल जाता है यही अभ्रक खाने के योग्य है
इसका भस्म बुढ़ापा तथा मृत्यु का हरने वाला है॥

अशुद्ध अभ्रक कोढ़, क्षयी, पांडु, हृदय पीड़ा, पसुरी में दर्द, देह का
जकड़ना और अग्नि को मंद करता है। इस लिये पहले अभ्रक को इस
प्रकार शोध लेना चाहिये अभ्रक के खंड को ले कोयले के आंच में खूब
लाल करै तब देखे कि अभ्रक सुर्ख हो गया है गौ के दूध में बुझाय लेय
और बाद इसके चौलाई के साग का रस ३ भाग नींबू का रस १ भाग
दोनों रसों को एक पत्थल के पात्र में भर उसी में अभ्रक को एक दिन
रात भिजा रक्खे दूसरे दिन जल में धोय हाथ से तोड़ मरोड़ कर उसके
पत्रों को भिन्न २ कर देवे तब उसे धान्याभ्रक करे॥

प्रदर रोग में पथ्याऽपथ्य ॥

साठी के धान का अथवा पुराने चावल का भात, मूंग मसूर और चना का दाल, गेहूं या जव की रोटी, गौ या बकरी का दूध, भैस का दूध, कटहर, केला, चौलाई, परवर, पुराना कुम्हड़ा, कमल का नाल और लौकी की तरकारी । चिरौंजी, शहद, ताड़ का फल, अनार दोनों प्रकार के, छुहारा, सिंघाड़ा, आमला, नारियल, कसेरू, पैया, ठण्डा पानी आदि जितने प्रकार के शीतल पदार्थ हैं सब फायदा करते हैं (अपथ्य) बहुत मेहनत करना, रास्ता चलना, धूप और आगके सामने बैठना, दिशा पेशाब का रोकना, तमाकूपीना, मद्य मांस खाना, शोच और गुस्सा करना, गुड़ आंटा, तिल, उरद, सरसों, दही, सिरका, अचार, लहसुन आदि जितने गरम और क्षार द्रव्य हैं सब नुकसान करते हैं ॥

सोम और मूत्रातिसार की चिकित्सा ॥

भिंडीकीजड़, सूखाचिंहारू, सूखाआमला, बिदारीकंद यहसब चारचारतोला उरदका चूर्ण, और मुलेठी दो २ तोला सबको महीन पीस छः २ मासा की पुड़िया बनालेय साम सबेरे एक पुड़िया मुखमें रख पावभर गौ के दूध में मिश्री मिलाके ऊपर से पीनेसे सोमरोग आराम होताहै अथवा कुछ दिन बराबर दूधके साथ पच्छाहीं शतावर पीनेसे भी रोग आराम होता है और ऊपर लिखेहुये चन्दनादि चूर्ण से भी सोमरोग आराम होताहै । मूत्रातिसार के लिये यह दवा परीक्षित है ताड़ वृक्ष की जड़, खजूरकी जड़, मुलेठी और बिदारीकन्द सबको समभाग ले चूर्ण कर छ मासा के अन्दाज गौ के दूध अथवा चावलके धोवनके साथ दोनों समय कुछ दिन बराबर सेवन करनेसे मूत्रातिसार रोग आराम होताहै, इसरोगमें भी पथ्यहै जो प्रदररोगके लिये कहा गयाहै । स्त्रियोंके और रोगों आरोग्यदर्पण के चतुर्थ खण्ड अथवा पञ्चम खण्ड में लिखा

हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठं प्लीहोदरंग्रंथिविषंक्रमींश्च॥ रोगान्हन्यात्दृढ़यति वपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्ते। तारुण्याढ्यंरमयति शतं योषितांनित्यमेव॥ दीर्घायुष्कान्जनयति सुतान्सिंहतुल्यप्रभावान्। मृत्योर्भीतिंहरतिसुतरां सेव्यमानंमृताभ्रं॥ १॥

यह गुण अभ्रक भस्म के अनेक ग्रन्थों में लिखे हैं। अभ्रक भस्म कषैला, मधुर, शीतल, आयुष्य का बढ़ाने वाला और धातु बर्द्धक है सन्निपात, फोड़ा, धातु रोग, कोढ़, पिलही, मांसग्रंथि, विष दोष, एवं कृमि रोग को नाश करता है, उक्त रोगों के नाश के बाद शरीर को पुष्ट करता है और वीर्य को ऐसा बढ़ाता है कि नित्य सैकड़ों स्त्रियों का संभोग करने को समर्थ होता है और जिनके सिंह के समान बलवान तथा दीर्घायु पुत्र उत्पन्न करने की ताकत देता है एवं मृत्यु के भी भय से बचाता है। परन्तु यह नहीं लिखा कि कितने दिन के सेवन से उपरोक्त गुण लाभ होते हैं॥

स्वेत प्रदर की औषध।

औरतों को चार प्रकार का प्रदर रोग होता है जिसमें स्वेत प्रदर अति कठिन रोग है इसमें योनि से कभी २ या सर्वदा निरन्तर गाढ़ा या पानी निकलता रहता है। एक हलवाइन जिसकी अवस्था २८ वर्ष की थी बहुत दिनों से उक्त रोग में पीड़ित थी प्रयाग में उसने प्रायः छोटे बड़े सभी हकीम वैद्यों की दवा की, परन्तु किसी से कुछ भी फायदा न हुआ अन्त को हमारे औषधालय में आई हमने भी अनेक प्रसिद्ध २ औषधियां खिलाई लेकिन फायदा न हुआ तब एक साधारण औषध बना के १ माष दोनों समय खिलाने से रोग समूल नष्ट हो गया तत्पश्चात् इसी औषध से कई एक रोगियों को आराम हुआ सो लिखते हैं॥

भिंडी (प्रसिद्ध तरकारी) की जड़ सुखा के पाव भर। सिंहाड़ (सुखो भी कहते हैं) सूखा हुआ पाव भर दोनों को कपड़ छान कर ८:८: माशा

धान्याभ्रक की विधि ।

उपरोक्त प्रकार से शुद्ध किया हुआ अभ्रक को धाममें सुखाय खरल में महीन कूट लेय जितना कुटा भया अभ्रक हो उसका चौथाई समूचे धान ले दोनों को एक कम्मल में बांध तीन दिन रात पानी में डुबो रक्खे तीन दिन के बाद उसे हाथों से खूब मर्दन करै जिससे कि अभ्रक सब उन के पानी में निकल जावै और अभ्रक में जो कंकड़ पत्थल रहता है वह धान के साथ कम्मल के पोटरी के भीतर रह जावै । जो अभ्रक उन के पानी में आ गया है उसे थीर करके जल बहाय देवै और अभ्रक को धाम में सुखाय लेय यही अभ्रक मारण प्रकार में श्रेष्ट होता है ॥

मारण विधि ।

धान्याभ्रक को मदार (कही २ इसे आक और अकौवा भी बोलते हैं) के दूधमें घोंट टिकरी बनाय सुखायलेय बाद उसे मदार पत्रमें लपेट कपर कपरौटी कर गजपुट में फूंक देवै इसी प्रकार सात दफे मदार के दूध में घोट और पत्र लपेट सम्पुट कर गजपुट में फूंके बाद उसी तरह बरगद के जटा के काढ़े में घोट टिकरी बांध सुखाय बाद ऊपर से कपरौटी कर गजपुटमें फूंक देवै फिर कुमारीकंद (घीकुमार) रससे खरलमें घोट आंच देवै इसी प्रकार १०० गजपुट का आंच देवै यह सौ पुट का अभ्रक अन्य विधि अभ्रक भस्मों से अति उत्तम बल वीर्य वृद्धि कारक है तथा सब से उत्तम अभ्रक भस्म एक हजार आंच का होता है वैद्यक के अनेक ग्रन्थों में अभ्रक फूकने की अनेक विधि लिखी हैं परन्तु उक्त विधि सब से उत्तम और सरल है (अमृती करण) जितना अभ्रक भस्म हो उतनाही गो घृत ले दोनों काल चूल्हे पर रख इतना आंच देवै कि पात्र के अति उष्ण होने से घृत बल उठे जब घृत जल के शांति हो जाय तो अभ्रक निकाल काम में लावै ॥

मारितस्य अभ्रकस्य गुणः ।

धभ्रमप्यापायमधुरं सुशीतमायुष्करं धातुविवर्द्धनं च ।

स्न्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठं प्लीहोदरंग्रंथिविषंकृमींश्च॥ रोगान्ह
न्यात्दृढयति वपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्ते। तारुण्याढ्यंरमयति शतं
योषितांनित्यमेव॥ दीर्घायुष्कान्जनयति सुतान्सिंहतुल्य
प्रभावान्। मृत्योर्भीतिंहरतिसुतरां सेव्यमानंमृताभ्रं॥ १॥

यह गुण अभ्रक भस्म के अनेक ग्रन्थों में लिखे हैं। अभ्रक भस्म कषैला, मधुर, शीतल, आयुष्य का बढ़ाने वाला और धातु बर्द्धक है सन्निपात, फोड़ा, धातु रोग, कोढ़, पिलही, मांसग्रंथि, विष दोष, एवं कृमि रोग को नाश करता है, उक्त रोगों के नाश के बाद शरीर को पुष्ट करता है और वीर्य को ऐसा बढ़ाता है कि नित्य सैकड़ों स्त्रियों का संभोग करने को समर्थ होता है और जिनके सिंह के समान बलवान तथा दीर्घायु पुत्र उत्पन्न करने की ताकत देता है एवं मृत्यु के भी भय से बचाता है। परन्तु यह नहीं लिखा कि कितने दिन के सेवन से उपरोक्त गुण लाभ होते हैं॥

स्वेत प्रदर की औषध।

औरतों को चार प्रकार का प्रदर रोग होता है तिसमें स्वेत प्रदर अति कठिन रोग है इसमे योनि से कभी २ या सर्वदा निरन्तर गाढ़ा या पानी निकलता रहता है। एक इसलाइन जिसकी अवस्था २८ वर्ष की थी बहुत दिनों से उक्त रोग में पीड़ित थी प्रयाग में उसने प्रायः छोटे बड़े सभी हकीम वैद्यों की दवा की, परन्तु किसी से कुछ भी फायदा न हुआ अन्त को हमारे औषधालय में आई हमने भी अनेक प्रसिद्ध २ औषधियां खिलाई लेकिन फायदा न हुआ तब एक साधारण औषध बना के १ मास दोनों समय खिलाने से रोग समूल नष्ट हो गया तत्पश्चात् इसी औषध से कई एक रोगियों को आराम हुआ सो लिखते हैं॥

भिंडी (प्रसिद्ध तरकारी) की जड़ सूखा ले पाव भर। दिहाक (सुपनी भी कहते हैं) सूखा हुआ पाव भर दोनों को कपर छान कर ८:८: माशा

की मात्रा बना ले, पाव भर गौ के दूध में एक तोला चीनी मिला के एक पुड़िया मुख में रख उसी दूध से उतार जावे ऐसा ही शाम को खावे, दूध न मिले तो दवा में ज़रासा मिश्री मिला के पानी से उतार जावे तेल मिर्चा खटाई आदि गर्म चीज़ों से परहेज़ करे ॥

डाक्टरी मत से सर्प विष की चिकित्सा ।

एनीमेल पाईज़न (जीवविष) अर्थात् सर्पादि जीवों के काटने से विष से पीड़ित होना । अगर पागल कुत्ता, स्यार प्रभृति सर्पादि जहरीले जीव शरीर में जिस स्थान में काटे बहुत शीघ्र उसी स्थान के कुछ ऊर्द्ध भाग में कपड़ा या डोरी से खूब कस कर बांध देवे, बांधने के बाद देखे कि काटे हुये स्थान में आसार बोध होता है कि नहीं और उसी स्थान का बाल उखाड़ने से फुस २ बाल उखड़ आता है कि नहीं अर्थात् लोम उखाड़ने से न उखड़े और दंशित स्थान में चुटकी काटने से बोध होय तो जानना की रोगी आराम हो जायगा (धागा बांधने से तात्पर्य यह है कि जो रक्त रगों के द्वारा चारों तर्फ घूम रहा है वह रक्त विष के साथ मिल कर शीघ्रही हृदय में न जाय मिले) तो बहुत जल्द दंशित स्थान को नश्तर अथवा छूरी से छेदन कर कुछ रक्त निकाल डाले और घाव को गरम जल से धोके जहां तक जल्दी हो सके उसी घाव पर कास्टिक घिस देवे और एक लोहा गरम करके घाव को दाग देवे लेकिन लोहा ऐसा लाल करे कि छत स्थान का चमड़ा चुर चुराय जाय बाद निम्न लिखित औषध को पिलावे ॥

लायकार एमोनिया १ । २ ड्राम । ब्रांडी १ । २ औंस । टिंचर ओपियाई १ ड्राम । कैम्फर वाटर ६ औंस । इन सब औषधियों को एकत्रित कर एक शीशी में भर १२ चिन्ह लगा दे

आधे घंटे पर या आवश्यक जानने पर दश २ मिनिट के अन्तर पिलावै, और रोगी को बैठने किम्वा प्रथम २४ घंटा पर्य्यन्त सोने न देवै दोमनुष्य रोगीके वगलके भीतर हाथदेके इधरउधर टहलावै और सर्प का भय रोगी के चित्त से समझा बूझा कर हटावे पश्चात् नीचे लिखे अनुसार ऐमोनिया लिनीमेंट तैय्यार करके घाव पर लगावै॥

लायकर एमोनिया ४ ड्राम। टिंचर ओपियाई ४ ड्राम। ओलिभ अऐल ४ ड्राम सब को एक में मिला घाव पर और घाव के चारो ओर मर्दन करे। यह मालिस विच्छू बर्रै आदि से काटे हुये स्थान में भी फायदा करता है। परन्तु पागल सियार या कुत्ता काटने में पूर्वोक्त चिकित्सा अवश्य करना उचित है यद्यपि कूकुर काटने का ज़हर जल्दी असर नही करता, एक सप्ताह से लेकर ६ सप्ताह अथवा ७ सप्ताह में अथवा ३ मास से ६ मास के मध्य में ही रोगी अकस्मात् जलाशय देख के डर जाता है और पानी पीने की शक्ति विनष्ट हो जाती है और कुत्ते के समान भूकने लगता है इस रोग को अङ्गरेज़ीमें (हाईड्रो फोबिया) कहतेहैं। यद्यपि हम इस्का वर्णन कुत्ता काटने के स्थल में करेंगे तथापि हमें इस समय इतना कहना बहुत ज़रूरी है कि स्याव और स्यार दंशित रोगी को पहले खूब तेज़ जुलाब कराके अल्प परिमाण अफीम खिलाना आरंभ करा देना सब से उत्तम है एवं प्रति दिन शिर से स्नान और शरीर मे दलाधान करना उचित है॥

मनुष्य सृष्टि की विनाश करने की सामर्थ्य अनेक कीटादि पदार्थों में देखा जाता है सिंह व्याघ्रादि मनुष्य को मार खाते हैं सर्पादि दंशन तथा मादक द्रव्य के खाने से। बहुत से हष्ट

ऐसेहैं जिन्मेंसे वायु निकलकर शरीरमें लगनेसे मनुष्य मरजाता परन्तु और जीवों को कम हानि पहुंचती है अन्यर जीवोंमें आश्चर्यित गुण देखनेमें आतेहैं जैसे सर्पके काटने से बीछू नहीं मरता और बीछू के डंक मारने से सर्प तत्क्षण तड़फड़ा कर मर जाता है। कम मात्रा अफीम के देने से कुक्कुर नहीं मरते परंतु अल्पमात्री मात्रा कुचला खिला देने से कुत्ते भूंक २ कर मर जाते हैं बंदर को किसी किस्म का विष कैसाहू वस्तु के साथ मिला के देखो कभी न खांयगे इत्यादि अनेक तिलिस्म हैं न मालूम परमात्मा ने किस २ अभिप्राय से ऐसे पदार्थों को उत्पन्न किया है ॥

आयुर्वेद में भी विष का दो भेद कहा है, स्थावर और जंगम। वृक्षादि से उत्पन्न विष को स्थावर और सर्पादि जनित विष को जंगम विष कहते हैं उसमें प्रथम सर्प विषकी चिकित्सा और निदान लिखा है। सर्पों की अनेक जाति है तिस में मुख्य नव जाति है उस में भी तीन भेद है (भोगी) फण वाले सर्प वे वातात्मक होते हैं इनके काटने में वात को कोप करके विष चढ़ता है (मंडली) जिनके शरीर पर गोल २ चट्टे होते हैं पित्तात्मक हैं इनका विष पित्तात्मक हैं इनका विष पित्त विकार कारक होता है (राजिल) उसे कहते हैं जिनके शरीर पर रेखा होती है कफात्मक होते हैं कफ विकार सहित इनका काटा हुआ विष चढ़ता है। इसके अतिरिक्त और भी चिन्ह युक्त अनेक सर्प होते हैं ॥

सर्प दंश विष देशकाल भेद से असाध्य ।

पीपल वृक्ष के नीचे, देवालय में, वांबी में, सन्ध्या समय और चौराहे पर काटने से तथा नस और मर्म स्थान में डँसा गया

मनुष्य शीघ्र मर जाता है। अजीर्ण, प्रमेही कुष्टी घाव वाला अति गरम मिजाजवाला बालक वृद्ध और अति दुर्वल को सर्प दंशन करे तो असाध्य जानना। ज्योतिष में लिखा है कि भरणी, मघा, आद्रा अश्लेखा मूल, कृत्तिका यह नक्षत्र और पञ्चमी तिथि में सर्प से काटा भया मनुष्य असाध्य होता है ॥

सर्प से काटे हुये विष में आठ वेग (लहर) आता है प्रथम में संताप, २ मे देह कांपना, ३ में दाह, चौथे मे विहोश हो के गिरना, ५ में मुह से फेन निकलना, ६ मे स्कंध टूटना, ७ में जड़ीभृत होना और ८ में मृत्यु ॥ प्राय: देखने में आया है कि सर्प दंशित मनुष्य के चाबने से निंब पत्र की तिक्तता नहीं वोध होती है ॥

आयुर्वेदीय मतसे सर्प विष की चिकित्सा ।

हाथ पैर वगैरह किसी स्थान में सर्प काटे तो अति शीघ्र उस के किंचित ऊर्ह में खूब कसके डोरी बांध देय और सलाका से दागदे जहां बांधने को जगह न हो तो दंशित स्थान को छूरीसे छीले, लोहे की शलाका खूब लाल करके दाग देय और तूंबी आदि से हवा खींचे। एक स्थल में यह लिखा है कि जो सर्प काटे उस सर्प को तुरन्त पकड़ के दांत से काटना अथवा एक मट्टी के ढेले को दांत से काटने से जहर नहीं चढ़ता ॥

जब देखे कि जहर समस्त शरीर में फैल गया है तो हाथ पाद और शिर का शिरा वेधन करना कारण यह कि रक्त के निकलने से विष निकल जाता है ॥

या दंशन के चारो ओर तूंबी लगाय के कफ़रक्त निकालना

बगायर वमन कराने से भी फायदा देखा गया है। जो फणवाले बड़े विषधर सर्प काटा हो तो जो आठ वेग पूर्व में हम कह आये हैं पहले वेगमें उपरोक्त चिकित्सा कर फस्त देना, दूसरेमें विषघ्न औषधों को घी दूध और कुछ सहत में मिला के पिलाना तीसरे में विष नाशक नश्य और अंजन लगाना, चौथे में दूध पानी पिला के औषध से वमन कराना, पांचवें और छठवे वेग में शीतल उपचार करना या पिचकारी द्वारा कड़ा जुलाब देना और सातवें वेग में तेज नाश और अंजन तथा नश्तर से मस्तक में काकपद करके रक्त रहित मांस छीलना। गर्भिणी बालक और वृद्ध इनके सर्प काटा हो तो फस्त न देके मृदु उपाय से विष दूर करना। बकरा आदि जानवरों के सर्प काटे होय तो मनुष्य के समान रक्त निकालना, बैल और घोड़े के दूना, भैंसे और ऊंट के तिगुना और हाथी के चौगुना रक्त काढ़ना चाहिये। जिन मनुष्यों की प्रकृत अति गर्म हो रक्त न निकाल के शीतल उपचार करना॥

रत्नावली ग्रंथ में लिखा है कि मेष की संक्रान्ति के आरंभ में एक मसूर और दो नींब के पत्र खा लेय तो वर्ष भर उसे विष का भय न हो॥

कुछ दिन हुये कि मेरे मकान में एक ब्राह्मणी टिकी थी एक दिन उसे प्रातःकाल दक्षिण हस्ताङ्गुली में सर्प ने काटा और चलदिया, परीक्षा के लिये निंब पत्र दिया गया आध पाव खा गई मुख कड़ु न हुआ तब मालूम किया कि बड़ा जहरीला सर्प था खैर, चिकित्सा होना आरंभ हुआ कुछ फायदा न हुआ अंत में बेहोश हो गई ओंठ और नख काले पड़ गये मुख से फेन बहने लगा और मुख जकड़ गया लोगों की यह राय हुई

कि रोगी दरवाजे पर लिटाय दी जाय और चारों तर्फ गुल कर दिया जाय कि सर्प के झाड़ने एवं दवा जानने वाले आवें वैसा ही किया गया बड़ी भीड़ लगी कितने झाड़ने फूकने वाले आये कोई कान में मन्त्र पढ़के चिल्लाता है कोई जल के छिंटे मारता है इतने में पुलीस के दूत, दरोगा साहिब भी आ पहुंचे कहा कि इसे अस्पताल भेजो। उन्हें समझा दिया गया वे भी बैठ गये, एक मुसलमान जात का कसाई भी खड़ा सब चरित्र देख रहा था उसने कहा भाई अन्त है अपना २ करतब कर ली तो हम भी कुछ यत्न करें यह कोई न कहे कि हम यत्न नहीं करने पाये, सब लोगों ने कहा कि भाई सब उपाय हो चुके तुम से भी जो कुछ करते बने करो उसने कहा अच्छा हम आते हैं एक बनिये के दूकान में कुछ सौदा लिया हाथ में मलते हुये आया और कहा कि दो आदमी इसका हाथ थांभो और दो आदमी पैर थांभो, कुछ बुकनी दिया कि उसे पानी में घोल कर पिला देवो, कहने के मुताबिक पिला दिया गया पांच मिनट के बाद कुछ हांथ में लिये था रोगी के नाक में डाल नाक थांभ लिया, रोगी पांच मिनट तक कुछ नहीं समझा बाद तड़फड़ाने लगी मियां ने कहा खबरदार छोड़ना नहीं, चार मिनट के बाद मियां ने कहा बस अब छोड़ दो और मियांने भी नाक छोड़ दिया, औरत उठ बैठी और कहा अब हम अच्छी हैं मियां ने कहा इसे पाव आधपाव घी पिलाओ आराम होगई, सब लोग चले गये॥

हम को अत्यन्त लालसा हुई कि यह औषध इससे जान कर लोकोप कारार्थ प्रकाश करें। यह तो हम को विदित हो गया था कि यह मुसलमान बनिये के दूकान से सौदा मोल लिया था परन्तु कहने और किस चीज का मेल किया था मालूम नहीं। एक दिन उस मुसल्मान को

बुलाया उस से पूछा प्रथम तो उस ने बहुत कुछ इनकार किया परन्तु
न्त में कहा अच्छा हम बताये देते हैं इस में कुछ है नहीं तिनका सं
पहाड़ है । कहा कि ३ माशा नौसादर प्रथम पानी में घोल कर पि
दे और पांच मिनट के बाद चूना और नौसादर दोनों बराबर वज़न में
छः छः माशा ले दोनों को एक में मिला पोटरी बना सुंघावै द
ज़रा २ सा दोनों नाक में डाल नाक बांध लेय पांच मिनट में रोगी
उठ खड़ा होगा । पाठक गण जब से इस महौषधि को सुना है कोई दं
दंशित मनुष्य नहीं मिला कि सत्या ऽसत्य की परीक्षा करैं लेकिन निश्च
होता है कि यह औषध अवश्य सत्य है क्योंकि विष रोग पर डाक्टरी में
अमोनिया (चूना नौसादर) प्रधान औषध लिखा है ॥

एक प्रतिष्ठित विद्वान् महाशय ने कहा है कि यह मेरी परीक्षित
तमाल पत्र को पानी में भिजा दे और दो तीन घंटे बाद खूब मल
रस निचोड़ ले वही रस हाथ में लगा के मनुष्य सर्प को पकड़ सक्ता है सर्प
के मुख में यही रस लगा देने से काटने की शक्ति बिनष्ट हो जाती है
परन्तु पुनः उसी के मुख में घी लगा देने से तमाल रस का असर जाता
रहता है ॥

दुधिया बच को अग्नि पर रख धुआं देने से सांप भाग जाते हैं अर्थात
जहां तक धुवां जायगा तहां तक सर्प नहीं रहैंगे ॥

सर्प की उत्पत्ति ।

आषाढ़ के महीने में जब मेघ की गर्जना आरम्भ होती है तब सर्पों
की मद उत्पत्ति होता है तभी वे मैथुन करते हैं,—ऐसे गुप्त स्थान में इ-
नका समागम होता है कि जीव मात्र नहीं देख पाते । सर्पिणी वर्षा ऋतु
के चार महीने गर्भवती रहती है कार्तिक में २४० अण्डे देती है कोई २
कम ज्यादा भी देती हैं और जब वे अण्डे पकने लगते हैं तो उन
आपही खाने लगती हैं परन्तु अन्त में दयार्द्र हो कुछ छोड़ देती
उन्हें ६ मास तक सेती हैं तब फूट कर उनसे बच्चे निकलते हैं ॥

जो अण्डे पीले चमकीले होते हैं उनमें से पुरुष बच्चा निकलता है, बकाइन के फल सदृश लम्बी रेखायें युक्त अण्डों से स्त्री और शिरीष पुष्प रंग वाले अण्डों से नपुंसक बच्चे निकलते हैं॥

अंडे से बाहर निकलने से सात दिन में उन बच्चों का रङ्ग माता पिता के वर्ण के समान हो जाता है। सर्प की आयु १२० वर्ष की है और किसी किसी पुराणों के ग्रन्थों में १००० वर्ष भी लिखा है, सर्पों की प्रायः अकाल मृत्यु होती है जैसे गिद्ध मयूर और चकोर उन्हें खा लेते हैं, नकुल काट डालते हैं, बिल्ली बन्दर शूकर और बीछीसे भी मृत्यु होती है और गौआदि पशुके खुरसे कुचलकर भी मरजाते हैं, सात दिनके बाद दांत निकलता है और इक्कीस दिन में तालू में विष आजाता है, काटनेके समय विष त्याग देता है परन्तु फिर उसी थैली में विष एकत्रित हो जाता है पचीस दिन का बच्चा सर्प जहरीला हो जाता है और ६ महीने में कंचुक त्यागता है॥

दो सौ बीस पैर सर्पों के होते हैं परन्तु ऐसे सूक्ष्म बाल सदृश होते हैं कि देख नहीं पड़ते चलने के समय निकल आते हैं नहीं तो भीतर पेट में छिपे रहते हैं, इनके शरीर में पसुली और सन्धि (जोड़) यह भी २२० होती हैं : जो सर्प बे समय पैदा होते हैं उनमें कम विष होता है और वे सत्तर वर्ष से अधिक जीते भी नहीं, जिन सर्पों के दांत लाल पीले नीले होते हैं उनमें भी विष बहुत कम होता है और वे डर पोकने होते हैं॥

सर्पों के एक मुख दो जीभ बत्तीस दांत और विष से भरी चार दाढ़ होतीहैं उनके नाम मकरी, कराली, कालरात्रि, और यम दूती है। मकरी दाढ़ का चिन्ह अति सूक्ष्म मच्छर सा, कराली काक पादनख समान, कालिरात्रि टकार अक्षर सदृश और यम दूती कुछ गहिराव लिये और सब दाढ़ों से छोटी होती है, इस से जिस को सर्प काटता है वह तत्क्षण मर जाता है तंत्र मंत्र औषध आदि कुछ काम नहीं करता। सर्पों की दाढ़ों में सदा विष नहीं रहता विष के रहने का स्थान सर्प के दहिने नेत्र के समीप है सर्प जब क्रोध करता है तब विष नाड़ियों के द्वारा दाढ़

ताम्र का बुरादा ए सब औषध दो २ तोला ले पीली सरसों का तेल
पाव, एक ताम्र पात्र में उपरोक्त दवाइयों के चूर्ण और तेल डाल ६ [illegible]
तक घाम में रख छोड़े । इस तेल के लगाने से कफ विकार से दाद, खा
जालमंडल, नसूर और विचर्चिका रोग नाश होता है ॥

निम्बाद्यं चूर्णम् विषमज्वराधिकारे ॥

निम्बपत्र (नींब के सूखे पत्ते) १० तोला, त्रिफला (हड़बहेड़ा आंवला)
३ तोला, त्रिकुटु (शोठ पीपर मिर्च) ३ तोला, अजवाइन ५ तोला, लवण
त्रय (कालानोन सेंधानोन विड़नोन) ३ तोला और जवाखार २ तोला
इन सब दवाइयों को कूट कपरि छान कर चूर्ण बना ले । इसका मात्र
आधे मासा से तीन मासा पर्य्यन्त हैं । उक्त चूर्ण को प्रातः काल औ
संध्या समय सेवन करने से एकाहिक अंतरा तिजारी और चौथिया ज्व
छूट जाता है ऐसा कई बार देखा गया है । पथ्य मूंग की दाल पुराने
चावल का भात गेहूं की रोटी और दूध मिश्री ॥

नारायण तैलं ॥

काले तिल का तेल १६ सेर । बेल वृक्ष की छाल, अंगेथ (इसी को
अग्निमंथि गनियारी या कहीं २ अरनी कहते हैं) की छाल, (श्योनाक)
सोनापाढ़ी (पांडर) नीम की छाल, गंध प्रसारिणी, असगंध, छोटी भट
कटैया, बड़ी भटकटैया, (वन भांटा) बरियारा की जड़, अतिबला, (कंघी)
गोखुरू और गदापूर्णा की जड़ यह सब दवाइयां दश २ पल अर्थात् प्रत्येक
औषध डेढ़ २ पाव तीन २ तोला चार २ मासा हुआ । सब दवाइयों को
अधकचरा करके ६ मन १६ सेर पानी में रात को भिजा दे सबेरे आग दे
जब ६४ सेर जल रह जाय मलकर छान ले तेल को कड़ाही में डाल चूल्हे
पर चढ़ाय मंदाग्नि आंच दे उसमें थोड़ा २ काढ़ा दे के पकावे । जब दो
सेर पानी जरने को रह जाय तब यह इन औषधों का कल्क बना के इसी
में डाल दे सौंफ, देवदारु काष्ट, जटामासी, छरीला, दुधिया बच, लाल

चन्दन, तगर, कूट, छोटीइलायची, पर्णी चतुष्ठय अर्थात् शालिपन, पिथिवन, बनमूँगी और बन मूंग, रासन, असगंध, सेंधानोन, और गदापूर्णा की जड़ यह सब दवा आठ २ तोला महीन कूट पानी डाल सिलपर पीस लुगदी बना तेल में छोड़दे और ऊपर से १६ सेर शतावरका रस पचावै, यदि ताजा शतावर मिले तो कुचल कर रस निकाल डाले सूखी हो तो आठसेर शतावर को कुचल कर चौंसठ सेर पानी में पकावे जब १६ सेर जल रह जाय मल कर छान उसे तेल में डाल पचावे जब थोड़ा जल रह जाय तब गौ अथवा बकरी का दूध चौंसठ सेर उसीमें पचावे जब दूध बिलकुल जल जाय केवल तेल मात्र रह गया हो तो उतार ले बोतल में भर काग लगा देय। इस तेल के पीने से पिचकारी से और मर्दन करने से लुंज सर्वांङ्ग वायु घोड़ा हाथी और मनुष्यका भी रोग आराम होता है। इससे अतिरिक्त गिल्मिनत्व, ठोढ़ी जकड़ जाना, दन्त रोग, गले का दर्द, लम्ब जिह्वा, अङ्ग का सूखना, पुराने ज्वर से दुर्बल, धातु की क्षीणता, वातज अण्ड वृद्धि, और आंत वृद्धि, इस तेल के मर्दन से निश्चय आराम होता है। हमारी राय में इस तैल को पीना उचित नहीं है॥

हिमसागर तैलं॥

काळेतिळ का तैल ४ सेर, सतावर का रस ४ सेर, पताल कुस्माण्ड का रस ४ सेर, आंवले का रस ४ सेर, सेमर के जड़ का रस ४ सेर, बड़े गोपुरू का रस ४ सेर, नारियल का जल ४ सेर, और केले के वृक्ष का रस ४ सेर, गौ का दूध १६ सेर (कल्कार्थ द्रव्य) लाल चन्दन, सफेद चन्दन, तगर, कूट, मंजीठ, अगर, जटामासी, छरीला, मुलेठी, देवदारू, नख, हर्रै, बरियारा, छोंप, मोथा, दालचीनी, छोटीइलायची, तेजपात, नागकेसर, लौंग, जावित्री, कपूर, पोई का फल, हरदी यह सब दो दो तोला लेकर पानी में पीस कल्क बनाय ले प्रथम तेल को आंच पर चढ़ाय तब कल्क डाल ऊपर से थोड़ा २ सतावर आदि का रस डालता जाय जब सब अर्क जल जाय सिर्फ तेल मात्र रह जाय सो उतार लेय यह तैल उष्णवायुसे जितने

रोग हैं जैसे अंग दाह अंग सूखना शरीर से चिनगी का उड़ना हाथ
गठियां आदि अनेक रोग आराम होते हैं यह अजमूदा है ॥

अन्तर्दाह पर धान्यक हिम ॥

प्रातःपर्युषितंधान्यंसलिलंसितयायुतं । अंतर्दाहंहरेत्पीतं
दुःखंदुर्गार्चनंयथा ॥

रात में भिजाया धनिया प्रातः उसी जल में चिनी मिला कर पी
अन्तर दाह ऐसा नाश होता है जैसे भगवती के पूजन से दुःख नाश हो
है (विधिः) दो तोले धनियें को साफ कर पावभर जल में एक मृत्ति
पात्र में रात में भिजा एक महीन वस्त्र से पात्र का मुख ढाप ओसमें र
देवे और सवेरे मल कर छान ले २ तोला चिनी मिला के पी जाने से दे
का जलन कलेजा धक २ करना शिर की घुमरी आदि आराम होते हैं।
इसी प्रकार २ तोला त्रिफला भिजा सवेरे चिनी डाल के पीने से शरी
जलन पेट का हर समय घुड़ २ करना कब्ज और नेत्र व्यथा आदि विका
शान्ति होता है और आधपाव त्रिफला डेढ़ सेर जल में रातको भिगा
सवेरे उसके जल से प्रत्यह नेत्र मुख और शिर धोने से समलवायु तिमि
धुंधरी नेत्र का जलन बालों का असमय पकना और बालों का मूल नाश
यह सब आराम होते हैं और इससे नेत्र और शिर सम्बन्धी रोग कभी नहीं
हो सकता परन्तु त्रिफला में तीनों चीजों को बराबर न लेना चाहिये। एक
भाग हड़, दो भाग बहेरा और चार भाग आंवला त्रिफला कहाता है॥

परीक्षित मसौदा जल ॥

प्रत्येक बार पसमार्थं [illegible] दिया गया है पाठ्य फायदा पाता है
यह [illegible] के [illegible] गुण है [illegible] जिस प्रकार [illegible]
[illegible] बनाया जाता है [illegible] को [illegible] प्रभाव देन [illegible]
देने को [illegible] पूरा नहीं है [illegible]

के रात न होने पावे। यदि उस कोयले को ले एक पानी से साफ क घड़े में भर दे और घड़े के पेंदी में एक छेद कर कपड़े की बत्ती भी में डाल दे, दो घड़े खाली और भी ले एक के पेंदी में छेद कर ना के डाल दे जिस प्रकार गरम दिनों में शिव जी के ऊपर जल ने को घड़ा बनाया जाता है वैसाही दो घड़ा बना ले और तीनों ो रखने के लिये लकड़ी का फ्रामे (जैसा कि अंगरेज लोग पानी के लिये बनाये रहते हैं) बनवाय लेव, उसके ऊपर वाले घड़े में बीच वाले घड़े में कोयला और सब के नीचे घड़ा खाली रहे। के घड़े से पानी कोयले वाले घड़े में आवैगा और कोयले वाले तो पानी टपक कर नीचे गिरेगा वही पानी पीने लायक है। जब लगे वही पानी पिवे और चौथे आठवें दिन कोयला बदल दिया करे नी से दैवाहू पुरानी खांसी वा दमे का रोग दूर आराम होता है, कास श्वास रोग में जो पथ्यापथ्य है उसीपर चलना उत्तम होगा॥

फले के स्वरस में थोड़ी हरदी का रस अथवा नीम्ब का रस और डाल कर पीने से कफज रोग नाश होता है॥

म्ब पत्र स्वरस–नीव के पत्ते का स्वरस १ तोला सहत ३ मासा दोनों ला कर पीने से अनेक प्रकार के चर्म सम्बन्धी रोग आराम होते नेम्बपत्र रस दो तीन बिन्दु नेत्र में टपकाने से नेत्र की सुरखी : पुरानी हो और जाला माड़ा कट जाता है॥

लसी के पत्तो का स्वरस ६ मासा मिर्च का चूर्ण ४ रत्ती दोनों को त कर पीने से विषमज्वर (जो ज्वर जाड़ा देके आता है) आराम है, यदि एक समय के पीने में लाभ न दीख पड़े तो दिन में तीन र्वोक्त प्रकार तुलसी पत्र स्वरस पीने से निस्सन्देह विषमज्वर छुट- है॥

क्तर लोग भी निम्ब को ज्वराधिकार में प्रायः देते हैं डाक्टरी में छाल पत्र और तेल भी काम में लाते हैं। क्रिया, यह वृद्धिक, कृमिनाशक और ज्वरमें विलक्षण उपकार करता

है । डाक्तर कर्णिस साहब ने इसे सिनकोना बार्क और आर्सेनिक के साथ परीक्षा करके देखा है वे अपने किताब में लिखते हैं कि हमने ६० ज्वरार्त रोगी को सिनकोना प्रयोग करके छः दिन के मध्य में ४६ जन को आराम किया और ३८ रोगी को आर्सेनिक प्रयोग से छः दिन में २८ जन को आरोग्य लाभ पहुंचाया, परन्तु १३४ रोगी को निम्ब छाल प्रयोग से छः दिन के मध्य में १०८ जन आराम हुये, इसके अतिरिक्त रोगान्त दुर्बलता में बलकारक हो उपकार करता है । अब देशी औषध का गुण डाक्टरी औषध से अवश्य अधिक है इसमें सन्देह नहीं रहा ॥

टिंचर आफ निम्ब के बनाने की विधि ॥

निम्ब की भीतरी छाल	२॥० औंस (१॥ छटांक)
परीक्षित सुरा (स्प्रिट वाईन)	१ पैंट (आध सेर)

निम्ब छाल को कुचल कर वाईन में डाल बोतल का मुख बन्द कर तीन दिन रख छोड़े, बाद ब्लाटिङ्ग पेपरसे छान दूसरे बोतलमें रख दे। इसकी मात्रा आधे ड्राम से २ ड्राम पर्य्यन्त है । रोगी की अवस्थानुसार मात्रा बना ले जब तक रोगी निर्मूल न हो दिन में ६ बार पिलावे ॥

तिला ॥

यह विषय याद रखने योग्य है कि जहां अल्प वीर्य्य शुक्रक्षय निर्बल होनेसे अथवा प्रमेहादि के कारण क्लीवत्व (सुस्ती) होगया हो उसके लिये तिला नहीं है वीर्य्य को सुधारने ही से क्लीवत्व नाश होता है । हस्त मैथुन गुदा मैथुन अति मैथुन से, प्रसङ्ग करने बाद लिङ्ग उसी समय शीतल जलसे धोने से, बहुत कसकर सर्वदा लङ्गोट बांधने से, आठ दश वर्ष पर्य्यन्त स्त्री प्रसङ्ग न करना, इत्यादि कारणों से प्रायः क्लीवत्व धर्म आ जाता है ॥

पाठक गण ! शायद आपको आश्चर्य्य होगा कि हमारे आयुर्वेदोक्त ग्रन्थों में तिला का प्रयोग मुतलक नहीं है तब हम क्या यह नहीं कहेंगे कि उक्त कुसंस्कार यवनोंके संसर्गसे लाभ हुआहै । इस समय इसीं वस्तुका

देना नहीं है इतनाही कह कर समाप्त करते हैं कि भूतपूर्व आर्य्य सन्तान गण वीर्य्य रक्षा को मुख्य कर्तव्य समझते थे। स्वर्गवासी श्रीमान् दयानन्द जी प्रायः कहा करते थे कि मनुष्य संसार में यदि कोई उत्तम कार्य्य करना चाहे तो वीर्य्य की रक्षा करे। आज कल के लोग एक रात्रि में तीन चार बार प्रसङ्ग करना परम पुरुषार्थ साधन और स्वर्ग का निचोड़ हुए समझते हैं, खैर समय तो है। लीजिये फलिपत यह अजमूदा तिले का नुसखा बत लाये देते हैं॥

बीरबहोटी (वर्षारंभ में होती हैं) मूसा केचुआ, मालकगुनी, अकर करहा, सोंठ खैतरा, जावित्री, कुचला, जायफल, लोहबान, कौड़िया, हींग, सींगिया, हरताल तबकी, पारा, बुरादा हाथी दांत, आंवलासार गन्धक, छोटे कटेर का फल, सफेद घुङ्घची, सफेद कनेर के जड़ की छाल, प्याजका बीज, श्वेत रंगकी मछुिया, एरण्ड बीज और कालाजीरा, यह सब औषध ६,६, मासा। तजकलमी, जँबालगोटा और खुरासानी अजवाइन, यह सब चार२ मासा। मुर्ग के अण्डों की जर्दी ५ तोला, शेर की चर्बी ५तोला, बन सूकर की चर्बी ५तोला, रोगन चमेली खालीस ४ तोला, रोगन बादाम २ तोला। उपरोक्त सब औषधों को खूब महीन कर एक उत्तम पत्थर के खरल में रोगन वगैरह सब दवा डाल ४पहर घोंटे, जब एक दिल होजाय आतशी शीशी में भर पाताल यन्त्र से तेल खींच लेय और किसी काग दार शीशी में भर कर रख दे (पताल यन्त्र से खींचने की विधि मत कहू में लिख चुके हैं) यह तिला लिंगेन्द्रिय के रगों का जल्म निकाल देता है और ढीले रगों को चुस्त करता है। लगाने की तरकीब यह है दश पन्द्रह बूंद तेल को किसी कटोरी में निकाल सुपारी और नीचे का सीवन छोड़ और चारों तर्फ आहिस्ते २ मर्दन कर ऊपर से बहुला पान या भोजपत्र सेंक कर बांध देय और ८ घंटे के बाद खोल दे शीतल जल अथवा ठण्डी हवा न लगने पावे, इसी प्रकार रोज लगावे। अगर इसमें आबले या छोटी २ फुन्सियां पड़ जाय या बहुत जलन होने लगे तो तिला लगाना बन्द करे। सिर्फ दोनो समय रोगन बादाम लगा दिया करे। यदि छाला वगैरह न पड़ें तो चालीस दिन बराबर लगावे और निम्नलिखित औषध

को भी ४० दिन सेवन करै तो २० वर्ष की भी पुन्सत्व हानि आराम होती है ॥

जङ्गली किमाछ का बीज २ सेर ऊपर का छिलका दूर कर मैदा कर लेय और उसे बरगद के दूध में पीठी कर लेय और बनसूकर की चर्बी में दो दो तोले की टिकिया बना के तल लेय और जिस प्रकार सहत में डूबे रहे एक बरतन में सहत भर कर उसीमें डुबोय देय और शाम सबेरे एक टिकिया खा कर ऊपर से पाव आध पाव गौ के दूध में एक तोला बताशा डाल कर पिये । तेल खटाई मिर्चा आदि गर्म खाना, क्रोध शोक अत्यन्त श्रमादि त्याग करे ॥

वङ्गेश्वर ॥

(रांगे का भस्म) यदि उत्तम रीति से तैयार किया जाय तो बहुत अधिक फायदा करता है । रांगा (वङ्ग) दो प्रकार का होता है एक खुरक जिसे हिरमखुरी कहते हैं । दूसरा मिश्रक । जो रांगा सफेद नरम चिकना जल्दी गल जाय और मोड़ने पर शब्द न हो वह खुरकहै, इसके अतिरिक्त लक्षण युक्त रांगा मिश्रक है । भस्म करने में खुरक रांगा उत्तम होता है।

शोधन विधि——रांगा को गलाय २ कडूतैल में मठा में कांजी में गो मूत्र में कुरथी क्वाथ में हल्दी क्वाथ में और मदार के दूध में तीन २ बार बुझावे । बुझाने की रीति यह है कि एक पात्र में गो मूत्र आदि जिसमें बुझाना हो भर देय और एक परयल वजनी जिसके बीच में छिद्र हो उसे पात्र पर रख देय और रांगे को एक लोहे के कलछे में गलाय आहस्ते से उसी छिद्र के रास्ते डाल दे तो रांगा उड़ेगा नहीं । उसी प्रकार हर एक चीजों में तीन २ बार बुझाने से रांगा शुद्ध होता है ॥

मारणविधि ॥

शोधा हुआ रांगा आधपाव ले एक मिट्टी की खपरी में डाल कर गलावै जब पिघल जाय तब उस पर २ तोला कलमी शोरा डाल लोहे की

करछी से रगड़े जब रांगा और शोरा दोनों मिल के कॉच सा हो जाय तब फिर २ तोला शोरा और डाल दे और लोहे की करछी से बराबर रगड़ता जावै उसी प्रकार जब काँच सा हो जाय २ तोला शोरा डाल दे और करछी से घोंटना बन्द न हो। वैसाही छः बार शोरा डारै छटी दफे काँच सा हो जाय तब शोरा फिर न डारै नीचे अग्नि तेज कर देय जब खपरी के ऊपर अग्नि बल उठै और बर कर शांति हो जाय तब चूल्हे से उतार लेय। खपरी में रांगा मट्टी से मपट जाता है छूरी से सब खुरच लेय बाद उसे सिल पर महीन पीस एक प्याले में पानी भर उसी में खूब घोल देय और थोड़ी देर रहने दे जब रांगा नीचे को बैठ जाय तब ऊपर का नीर पानी निकाल डारै इस प्रकार तीन बार धोवै जब शोरा की खार दूर हो जाय रांगा मात्र की सफेद भस्म रहिजाय उसे सुखाय लेय। यह रांगे का कच्चा भस्म है, अब यह फूकने लायक हुआ है॥

शोरा का मारा रांगा आध पाव और शुद्ध तबकी हरताल आध पाव दोनों को खरलमें डाल कागदी नीबूके रसमें एक पहर घोंट गोला बनाय शराब सम्पुट में बन्द कर गज पुट में फूंक देय, जब शीतल हो बाद गोले को निकाल एक तोला फिर शुद्ध तबकी हरताल दे कागदी के रस में एक पहर घोंट पूर्वोक्त प्रकार सम्पुट बनाय गजपुट में फूंक देवै। इसी तरह प्रत्येक बार एक २ तोला हरताल दे नींबू के रस में घोंट १० गजपुट की आंच देने से निरुत्थ भस्म होगा। निरुत्थ भस्म उसे कहते हैं जो मित्र पञ्चक से भी न जीवै॥

मित्र पञ्चक— घृत महत गूगल घुंघची और सुहागा इनको मित्र पञ्चक कहते हैं जिस धातु की कच्ची या पक्की की परीक्षा करनी हो उसकी भस्म में उक्त पांचो वस्तु मिलाय घरिया में धर कर गलाने से कच्ची धातु जी उठती है और जो निरुत्थ भस्म है कभी नहीं जीती। जो धातु मित्र पञ्चक से जी उठे उसमें शुद्ध आंवला सार गन्धक समान भाग देकर घीकुआर के रस में एक दिन खूब घोंटे और संपुट में बन्दकर गजपुट से फूंक दे तो निरुत्थ भस्म हो॥

पूर्वोक्त प्रकार से भस्म किया हुआ सोना पथ्य सहित कुछ दिन सेवन करने से संपूर्ण प्रमेह आदि रोग नाश होता है। यह अपनी शक्ति से शीघ्र धातु प्रमेह रक्तपित्त को नाश कर बुद्धि पराक्रम और कांति को प्रगट करता है। इसकी मात्रा दो चावल से ३ रत्ती तक है, यह भी स्मरण रहना चाहिये कि शहत के साथ चाट कर ऊपर से गौ का दूध मलाई डाल के पीवै।

सौभाग्य शुण्ठीपाक ॥

इसे सुहाग सोंठ भी कहते हैं, यह पाक प्रसूता स्त्रियों के लिये अति लाभकारी है। चाहिये कि बच्चा जनने के बाद स्त्रियों को अजवाइन सोंठ गुड़ आदि न खिलाय इसी को बनाके खिलावे तो बालक भी आरोग्य रहे और माता के शरीर में किसी प्रकार का रोग भी न हो॥

सोंठ पिसा	१॥ पाव	बरियारा की जड़	२ तोला
बकरी का दूध	५ सेर	पिपरामूल	१ तोला
घी गौ का	१ पाव	चाब	१ तोला
मिश्री	२॥ सेर	चीता	१ तोला
दालचिनी	१॥ तोला	मोथा	१॥ तोला
तेजपात	१ तोला	खस	१॥ तोला
छोटी लायची	२ तोला	नागौरी असगन्ध	२ तोला
नागकेशर	१॥ तोला	सफेद चन्दन	१ तोला
धनियां	१॥ तोला	काला अगर	१ तोला
सफेद जीरा	१॥ तोला	लौंग	१॥ तोला
स्याह जीरा	१ तोला	शतावर	२ तोला
सौंफ	१।तोला	सफेद मूसली	२ तोला
अकरकरहा	१॥ तोला	सोंठ	२ तोला
जावित्री	१ तोला	पीपर	१ तोला
विधारा	१। तोला	मिर्च	१॥ तोला
कमलगट्टे की गरी	१॥ तोला	जायफल	१। तोला
त्रिफला	२ तोला	सिंघाड़ा	२ तोला

लौंग	१॥ तोला	अरारोट	२ छँटाक
कलमीशोरा	१ तोला	बदाम	१ पाव
मुनक्का	१ छँटाक	पिस्ता	१ पाव
किशमिश	२ छँटाक		

सब से प्रथम सोंठ को कूट कपरछान करले और दूध को कड़ाई में औटावे जब आधा दूध जल जावे उसी में सुकी हुई सोंठ डाल देवे और करछलीसे बराबर चलाता जावे जिसमे दूध जले न। जब दूध का खोवा हो जावे कड़ाई चूल्हे से उतार लेवे और खोवा अलग कर फिर कड़ाई चूल्हे पर चढ़ाय घी डाल दे। जब घी खूब गरम होजाय उसीमें खोवे को खूब भूंज लेवे, बाद साफ कड़ाई में मिश्री डाल चासनी बना ले और समस्त दवाइयों को कूट कपड़छान कर और मेवाओं को साफ कतर कर सबको खोवा की चासनीमें मिलाय आधीरछँटाक के लड्डू बनाय लेय, सबेरे अपने बल के अनुसार लड्डू खा कर ऊपर से दूध मिश्री पीने से क्षई पांडु ज्वर खांसी मन्दाग्नि रक्त गुल्म प्रदर सोम रोग आदि आराम होते हैं॥

स्त्रीणांमतिहितंनात्रपथ्याऽपथ्यविचारिणा। अश्विभ्यांपूर्वमुदितःशस्तोयेगोयमुत्तमः॥

यह पाक स्त्रियों के लिये अति लाभकारी है इसमें पथ्याऽपथ्य का कुछ विचार नहीं है यह उत्तम योग अश्वनीकुमार ने प्रथमही कहा है॥

कुष्टाधिकारे॥

अमृतभल्लातक पाक॥

वृक्ष से पक कर गिरा हुआ भेलांवे का फल एक सेर लेकर ईंटा के चूर्ण में खूब रगड़े और उसके नीचे की टिपुली काट कर फेक दे, बाद पानी में मल कर धो डाले और उसे सुखाय लेय फिर उसका दो फांक कर चौगुने जल में पकावे जब चौथाई जल रह जाय तो खूब मल कर छान लेवे और वही पानी दूने गौ के दूध में मिला के कड़ाही में डाल धीमी आंच में पकावे और करछी से चलाता जाय जब दूध का खोवा हो जाय

चूल्हे से उतार शीतल कर ले, फिर कढ़ाही में एक पाव गौ का घी दे के खोया को भून लेवे और दो सेर मिश्री की चासनी बना खोया और नीचे लिखी हुई दवाइयों को कूट कपड़छान कर उसी चासनीमें मिलाय एक तोले की गोली बनाय लेवे ॥

सोंठ	१ तोला	कंकोल	२ तोला
पीपर	१ तोला	मूर्वा	१ तोला
मिर्च	२ तोला	अजवाइन	६ माशा
त्रिफला	२ तोला	अजमोदा	६ माशा
तज	१॥ तोला	खस	१॥ तोला
तेजपात	१ तोला	कसेरू	२ तोला
छोटी लायची	३ तोला	गज पीपर	१ तोला
रूसा	२ तोला	बिलाई कन्द	३ तोला
सेर	४ तोला	जायफल	१॥ तोला
गुर्च का सत्त	५ तोला	जावित्री	१। तोला
सफेद चन्दन	१॥ तोला	अगर	१॥ तोला
लौंग	१॥ तोला	समुद्र शोख	२ तोला
सफेद मूसली	२ तोला	मुलेठी	२ तोला
स्याह मूसली	२ तोला	केशर	१ तोला

अगर पारे का उत्तम भस्म मिले तो छः माशा मिला देवे, और घृत भांड़ में भर मुख बन्द कर सात दिन रात को ओस में दिन को शीतल जगह में रक्खे, सात दिन के बाद यह पाक अपने अग्नि बल के समान दोनों समय खाने से और जो कुष्टाधिकार में पथ्यापथ्य है तदनुसार चलनेसे ॥

सर्वविकाररोगनिवर्हणश्चकुष्ठान् दृष्टिप्रदंदीप्तबलंकरोति।
दन्तादिशीर्णदंष्ट्रतां प्रयातिविशीर्णकर्णाङ्गुलिनासिकापि॥

सब प्रकार का कुष्ठ आराम होता है नेत्र में ज्योति और बल बढ़ता है, दांत हिल गये हों तो जम जांय और नाक कान तथा अङ्गुलियों का खराब हो जाना आराम होता है ॥

यह केशर का अवलेह दुर्बलों को बल देने वाला जिन मनुष्यों की इन्द्रियां कमज़ोर धातु क्षीण वा शरीर दुर्बल और बल हीन हों या वा रति शक्ति रहित हो गया हो उन्हें आरोग्य करता है परन्तु उष्ण प्रकृति वालों के लिये लाभ दायक नहीं होगा ॥

मेरी प्रतिज्ञा पाठकगण को अवश्य स्मरण होगा, ग्रन्थ का नाम सिर्फ प्रमाण के लिये दिया जाता है, विषय चाहे जिस ग्रन्थ का हो बिना टीका के नहीं लिखा जाता ॥

जामुन, आंम और आंवला इन तीनों वृक्षों के पत्तियों का रस दो तोला सहत चार मासा मिला कर दोनों समय पीने से बहुत दिनों का आंव लोहू का बहना शीघ्र आराम होता है । वैसाही बबूल के छाल का स्वरस सहत मिला के पीने से पतला दस्त गाढ़ा होता है ॥

आर्द्रकस्वरसःक्षौद्रयुक्तोह्यपगवातनुत् । श्वासकासाऽरुचि ईन्तिप्रतिश्यायंव्यपोहति ॥

आदी को कुचल कर उसका रस निकाल दो तोले रस में तीन मासा सहत मिला कर पीने से शीत सम्बन्धी फोते (आंडवनज़ूल) का सूजन दर्द दमा खांसी नाक का बहना आराम होता है आदी और सोंठ इन द्रव्यों का व्यवहार जैसा भारतवर्ष में है अन्य द्वीपों में नहीं ॥

आर्यावर्त में आने जाने के कारण कुछ विलायत में भी शुष्क आर्द्रक (शोंठ) का प्रचार हो चला है पर बहुत कम और इसके गुण में लिख भी दिया है जिसे नीचे प्रकाश करैंगे पाठकगण को यह भली भांति मालूम होगा कि आदी और सोंठ यह दोनों एकही वस्तु है गीले कन्द को आदी बोलते हैं सूखे को सोंठ, इसी हेत से, निघंटु में लिख भी दिया है ॥

येगुणाःकथिताःशुण्ठ्या स्तेऽपिसन्त्याऽर्द्रकेखिलाः ॥

जो जो गुण सोंठ के कहे हैं वेही सब आदी में भी जानना ॥

आदी का गुण गर्म तीक्ष्ण कटु और पचने पर कुछ मीठा रूक्ष तथा वात कफ, का नाशक और क्षुधाकर है ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यलवणार्द्रकभक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्य जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥

भोजन के पहले आदी नोन का खाना अग्निदीपक भोजन में रुचि जीभ और गले में लपटा हुआ कफ साफ होता है । परन्तु निम्नलिखित रोग तथा समय में आर्द्रक सेवन भावप्रकाश में निषेध किया है ॥

कुष्ठपाण्डवामयकृच्छ्ररक्तपित्तव्रणज्वरे । दाहेनिदाघशरदो र्नैवपूजितमार्द्रकम् ॥

कोढ़ पांडु मूत्राक प्रमेह रक्तपित्त फोड़ा घाव ज्वर और दाह इन रोगों में तथा गरमी और शरद ऋतुओं में आदी न खाना चाहिये ॥

मेटिरिया मेडिका से शुंठी का गुण ।

अँगरेजी में सोंठ को जिंजर कहते हैं । क्रिया, उत्तेजक [illegible] और वायुनाशक । अधिक मात्रा सेवन से पाकाशय में जलन बोध करता है । चबाने से लाल निस्सरण अर्थात् लाल का बहना और बाह्य प्रयोग में चर्म में लपना(?) प्राप्त होती है । डाक्टर [illegible] का वाक्य है कि [illegible] नेत्र रोग में सोंठ स्थानिक प्रयोग अति लाभदायक होता है । इसका तेल टिंचर [illegible] सोंठ का चूर्ण एक भाग और स्पिरिटवाइन दो भाग दोनों को एकत्रित कर कपाल में मालिश करें तो इससे [illegible] होने से उपकार होता है । पेट फूलना या उदर [illegible] दर्द में सोंठ का टिंचर पिलाने से फायदा करता है और [illegible] औषध की [illegible] हनन के लिये प्रायः सोंठ मिला देते हैं ॥

डाक्टर [illegible] कहता है कि सर दर्द में सुंठी का [illegible] लगाने से बहुत फायदा होता है दांत के दर्द में सोंठ [illegible] चबाने से [illegible] कर दर्द कम होजाता है । [illegible] को यह गुण बहुत भाती है कि [illegible] क्योंकि "[illegible]" [illegible] औषध [illegible] है [illegible] होता. बहुत [illegible] औषध है [illegible]

को समन करै। शुण्ठी पित्तरक्त प्रकृति वाले को लाभकारी कदापि नहीं हो सक्ती॥

खड्गादिछिन्नगात्रस्यतत्कालंपूरितोव्रणः। गाङ्गेरुकीमूलरसै र्जायतेगतवेदनः॥

शस्त्र आदि से कटे हुये घाव में यदि उसी समय आर्द्र गुलसकरी के जड़ का रस निकाल कर भरे तो शीघ्रही दर्द जाता रहै। और कोई टीका कार ने इसी श्लोक का अर्थ इस प्रकार किया है। शस्त्र के घाव में यदि बरियारा के जड़ का रस डाले तो शीघ्रही घाव शुद्ध हो जाय, परन्तु यह ठीक नहीं है। दर्द निस्सन्देह जाता रहता है॥

पुटपाकविधिः, शार्ङ्गधर से॥

पुटपाकस्यपाकोयंलेपस्याङ्गारवर्णता। लेपंचद्व्यंगुलंस्थूलं कुर्य्याद्व्यंगुलंमानकं॥ काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैरावेष्ट्ययत्नतः। पलमात्रोरसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत्॥ यात्कचूर्णद्रवाद्याश्च देयाःकोलमितावुधैः।

रोग नाशक ताजी औषधी ले उसे सिल पर पीस गोला बना ले फिर पर खम्भारी, बरगद जामुन इन तीनों वृक्षों में से किसी वृक्ष का पत्र की न दो लपेट डोरे से बांध एक कपरौटी कर ऊपर दो अंगुल की मुटाई माटी लपेट घोड़े के छोटे कण्डों के बीच में धर कर फूंक देय जब ऊपर की मृत्तिका पक जाय * अग्नि से निकाल कुछ शीतल कर गोला तोड़

---

* यहां "पर लेपस्याङ्गार वर्णता" का ऊपर का मृत्तिका [illegible] लाल हो जाय तब तोड़े और निकाले [illegible] यह उत्तम नहीं है [illegible] [illegible] जाता है इसी लिये [illegible] का [illegible] कर देना चाहिये॥

भीतर की लुगदी ले मोटे कपड़े में धर खूब मल कर रस निचोरि ले उ
उसी को पुटपाक कहते हैं। पुटपाक के रस का मात्रा अढ़ तोले से तीं
तोला पर्य्यन्त है और उसमें सहत डालने की मात्रा १० मासा है य
कोई चूर्ण कल्क अर्क आदि मिलाने की क्रिया लिखी होतो आधा तो
डाले ॥

कुरैयापुटपाक सर्वातिसार पर ॥

कुरैया एक वृक्ष का नाम है जिसकी छीमी में इन्द्रजव होता है।
रैया की ताजी आधपाव छाल ले शिल पर रख चावल के धोवन में पी
कर गोला बना ले और उसपर जामुन का पत्र लपेट सूत्र से बांध f
गेहूं का आटा सान के लपेट बाद दो अङ्गुल माटी लपेटै और बि
कडे की आंच में पका ले तत्पश्चात् अग्नि से बाहर कर गोला फोड़
तोला सहत डाल दोनो समय पीने से बहुत दिनों का कठिन भी अत
सार रोग आराम होता है। चार तोला रस की मात्रा बड़े जवान
लिये है ॥

उसी प्रकार ताजे बेल का पुटपाक तैयार कर ३ मासा मोच रस
चूर्ण मिलाय सात दिन दोनों समय खाने से कष्ट साध्य अतीसार आर
होता है ॥

पके अनार को पुटपाक से भी अतीसार आराम होता है।

हृदय शूल पर हिरन शृङ्ग पुटपाक।

हिरन के सींग को महीन २ टुकड़े कर शराब सम्पुट (दो प्याली
बन्दकर) में धर ऊपर से तीन कपरौटी कर घाम में सुखाय १० सेर
के बीच में रख फूंक देय जब शीतल हो जाय सम्पुट से भस्म ले काग
सीसी में रख दे इसका मात्रा आधा मासा से तीन मासा पर्य्यन्त है।
तोला गाय के घी के साथ उक्त भस्म दोनों समय पीने से हृदय शूल ए

निश्चय आराम होता है इस अपूर्व औषध से हमने अनेक रोगियों को आराम किया है ॥

तडुलं जल (चावल का धोवन) विधिः।

कंडिततंडुलपलं जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् । भावयित्वाजलं याह्य देयंसर्वत्रकर्मसु ॥

तीन तोला साफ पुराने चावल को अधकचरा कर (चूर्ण न होने पावै) सवापाव पानी में मृत्तिका पात्र में रात को भिजा दे सवेरे मलकर छान लेय । आवश्यक कार्य्य में एकही घंटे भिजाकर जल लेलेना कोई अनुचित न होगा । यही जल सर्वत्र कर्म्मों में दिया जाता है ॥

इन्फ़्लुएंज़ा

अङ्गरेजी बुखार।

सुन्ते हैं इस ज्वर का जन्म इटाली में हुआ है इटाली से रूस, रूस से इङ्गलैंड, विलायत से आर्य्यावर्त्त में आगमन हुआ है । भारत में कोई भी ऐसा मनुष्य है जिसे यह ज्वर न हुआ हो । यह एक प्रकार का सार्वदेशिक सर्दी मूलकज्वर है, सर्दी मूलक से शीतज्वर न समझना, पित्त सम्बन्धी भीतरी गर्मी और ऊपरी सर्दी के संयोग से यह ज्वर आता है बल्कि न्यूनाधिक तीनों दोष के लक्षण मिलते हैं ॥

कोई का मत है कि यह रोग विशेषकर विष दूषित वायु शरीर में प्रविष्ट होने से यह रोग उत्पन्न होता है । कोई कहते हैं कि (ब्याकटेरिया) नामक एक उद्भिज्जाणु के शरीर में प्रवेश करने से यह रोग होता है । कोई इस रोग को (स्पर्शा क्रामक अर्थात् छुतहा रोग कहते हैं और कोई कहते हैं कि यह म्यलेरिया से जन्म ग्रहण करता है जो हो चाहै जहां से आया हो अब तो समस्त भारत में धमगजरी मचा रहा है बालक वृद्ध युवा किसी को नहीं छोड़ता, जिसको जहांही पाया धर पटका ।

किसी को दोही चार दिन में छोड़ दिया, किसी को महीनों भुगाया, अगर कोई ज़रा भी चूं किया तो फिर क्या यमालय को न भेजा तो मंजनू तो उसे अवश्यही बना दिया ॥

इन् फ्लिउञ्जा ज्वर का लक्षण ।

इसका आगमन एक समान नहीं है। यह प्रकृति अवस्था बलाबल पर निर्भर है देखने से जाना गया है कि पहले थोड़ी हरारत मालूम हुई बाद हड्डियों में दर्द शिर भारी हाथ पांव में ऐंठन, कुछ वमनेच्छा हो फिर ज्वर तेज हो जाता है। कभी सारे बदन में दर्द जुखाम जारी होके तब ज्वर आया है ॥

विशेष लक्षण ।

तीव्रज्वर, हाड़ों जोड़ों और शिर में दर्द, हाथ पैर में फाटन बिच-मिया (जी मचलाना) नाड़ी वेगवान त्वचा में जलन और जिह्वा शुष्क होती है, कोष्ठबद्ध, या दस्त पतला, नाक बहना, खांसी, आंख लाल, नींद का न आना, अधिक पिपासा, पेट में दाह इत्यादि लक्षण होते हैं इसके अतिरिक्त प्रलापादि और भी अनेक उपद्रव होते हैं ॥

चिकित्सा ।

प्रथम बलानुसार एक दो अथवा तीन दिन उपवास करना, तीन दिन से अधिक उपवास बल हानि कारक होगा और तीन दिन तक कोई औषध न खावे बाद तीन दिन के निम्नलिखित क्वाथ को दोनों समय पीवै ॥

धनिया	२ तोला	मुलेठी	१ तोला
पद्माख	२ तोला	उन्नाब	१० दाना
लाल चन्दन	२ तोला	मुनक्का	१२ दाना
गुल बनफ्सा	२ तोला	गुर्च	२ तोला
हंस राज	२ तोला	निम्ब छाल	२ तोला

उक्त सब औषधियों को ले अधकचरा कर ८ मात्रा बना ले, मृत्तिका पात्र में एक मात्रा दवा को पाव भर जल में डाल मंदाग्नि में पकावै जब आध पाव से कुछ अधिक जल बच जाय अग्नि पर से उतार शीतल कर ६ माशा मिश्री डाल के पिला देवै इसी प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावै और जब तक भूख लगे खाने को न देवै। भूख लगने पर प्रथम साबूदाना पानी में पका मिश्री मिला के खिलावै, या मूंग की जूस देवै क्योंकि एकबारगी पेट भर खा लेने से दुबारा ज्वर हो जाता है। उपरोक्त क्वाथ को पांच छ दिन बराबर पीने से निस्सन्देह ज्वर शिर दर्द निद्रा नाश अङ्ग वेदना वमन आदि आराम होता है॥

इन्फ्लुउञ्जा से बचनेकी उपाय॥

इसमें सन्देह नहीं कि यह ज्वर ऋतु के परिवर्तन में सर्वदा हुआ करता है इसी से इस ज्वर को ऋतु पर्वर्तनीय या कुआर कार्तिक मास में होने से शारदीय ज्वर कहा जाता है रहा कि, अब की यह अधिक जोर से सब देशों में एकबारगी फैल गया और यूरोपीय चिकित्सकों ने इसका नाम इन्फ्लुउञ्जा रक्खा। उर्दू (डिकशनरी) में इन्फ्लुउञ्जा के माने लिखा ओबा है हिन्दी में महामारी की बिमारी कहते हैं॥

इससे बचने की सहज उपाय यह है कि जिस समय ज्वर का आगमन देश में आरंभ हो निम्नलिखित नियमों को शीघ्रही धारण करने से इन्फ्लुउञ्जा के बाप को भी शक्ति नहीं है कि जो उसका एक बाल भी बांका कर सके॥

सब से प्रथम यह है कि जल बहुत बिचार के साथ पिये। जैसे अनेक कूपों का जल पीना, तीन चार दिन का रक्खा हुआ जल, खाली पेट या सोते से शीघ्रही उठ कर या फल फलहरी खाके जल पी लेना। कहीं से थका हुआ आके जल पीना-इत्यादि त्याग करे। एक कूप या नदी का जल छान के या जल को एक उबाल गर्म करके छान ले उस जल को भोजनान्त में या आश्य में थोड़ा २ पिये। भोजन सबेरे नौबजे के भीतर

प्रकृत भेद से अफीम के गुण भी भिन्न देखा जाता है जैसे किसी को अफीम से उत्तेजन क्रिया अधिक हो, किसी को मादकता अधिक हो किसी को कोष्ठबद्ध किसी का कोष्ठ परिस्कार हो, कम उमरवाले को अफीम अधिक नशा करता है, रोग विशेष खासकर दर्द रोग में कम नशा होता है, मस्तिष्क मृत्यु अवस्था में अल्प मात्रा भी अफीम शीघ्र मृत्यु कारक होता है। इपेकाकुआना के साथ अफीम पसीना लानेवाला और क्लोमिल संघटित कोष्ठबद्ध का नाशक होता है॥

अफीम सेवन का अभ्यास करने में यदि मात्रा वृद्धि न हो तो शारीरिक अथवा मानसिक कोई विशेष हानि नहीं किन्तु अफीम की यह मोहनी शक्ति है कि प्रथम नियमित मात्रा किसी प्रकार रह नहीं सक्ता क्रमशः अवश्यही बढ़ता जायगा इसी से अफीम खानेवाला अन्त होने से आलस्य ग्लानि उदासीनता नेत्रस्राव और जँभुआई आने लगती है जब तक अफीम न खावै ऐसाही दशा रहती है॥ शेषमग्रे

हरिद्रा ॥

संसार में जितनी बातें प्रचलित हैं और जो जो वस्तु अथवा द्रव्य दिन रात हम अपने काम में वर्त रहे हैं खा पी रहे हैं वे सब किसी न किसी ऋषियों का अनुमूदा है पृथ्वी भर में ऐसाही कोई देश बचा होगा जहां हरदी काम में न आती हो हमलोग पाक समय तरकारी दाल और मांस में हरदी डालते हैं यह तो साधारण हरिद्रा का व्यवहार है परन्तु हरदी को महत उपकारी वस्तु जानना चाहिये। वैद्यक में हरदी को रजनी, गौरी, वरवर्णिनी, वर्णवती, निशा और वर्णविलासिनी कहते हैं। गुण में कड़वी, तेज, रूखी और गर्म है त्रिदोषनाशक त्वचारोग प्रमेह शूजन पांडुरोग फोड़े फुन्सी को नाश करती है। राजवल्लभ ग्रन्थ में शोथरोग पर हरिद्रा को पानी में घिस कर लेप करनेसे शोथरोग नाशहोना लिखा है। डाक्टर लोग भी आजकल शोथरोगमें हरिद्राका व्यवहार करतेहैं। इस में कृमि नाश करनेकी एक आश्चर्य शक्ति है कि जिसे प्रायः ग्रामीण जन

भी जानते हैं बालक के कृम होनेसे स्त्रियां अक्सर कच्ची हरदी को गुड़ के साथ खिला देती हैं बँगला में अनेक स्त्री पुरुष साबुन के तरह समस्त शरीर में लेपन करके स्नान करते हैं इस प्रान्त में भी, विवाह के पूर्व लड़कों को हरदी तेल लगाते हैं इसमें सन्देह नहीं कि तेल के साथ अथवा कोई लेपन वस्तु के साथ हरदी को शरीर में लगाके स्नान करने से शरीर का वर्ण उज्वल सुन्दर शोभायमान होता है ईसी से हरदी का नाम ऋषियों ने वर्णवती वर्णविलासिनी लिखा है ॥

डाक्टरी किताबों को देखिये तो उसमें भी हरिद्रा के अनेकांश गुण लिखे हैं डाक्टर मफिस साहब अपनी किताब में चर्मरोग पर हरदी को उत्कृष्ट महौषध लिखा है और किसी के मत में बहुमूत्र रोग में हरिद्रा अति उपकारी लिखा है ॥

विलायत के वैज्ञानिक डाक्टर लोगों ने हरिद्रा के सहायता से एक प्र योजनीक विषय परीक्षा करने के लिये उपाय निकाला है (टारमेरिक) नामक एक विलायती कागज है उसे हरदी में तर करलेव अर्थात हरदी को पानी में खूब महीन पीस कागज़ के चारों तरफ लेपन कर छाया में वायु द्वारा सुखालेव । उस कागज़ को किसी वस्तु में डालने से यदि वह कागज़ लाल वर्ण होजाय तो जानना कि उसमें क्षार पदार्थ है । डाक्टर लोग प्रायः इसी उपाय से औषध अथवा कोई खाने की वस्तु है, मल और मूत्रको परिक्षा करलेते हैं कि इसमें क्षार पदार्थहै कि नहीं विलायत डाक्टर रसेल साहब ने भी हरदी का बहुत कुछ गुण लिखा है हकीमों ने भी हरदी का गुण पीड़ा शान्तिकारक और प्रमेह रोग का नाश औषध लिखा है ॥

वैद्यक में लिखा है कि हरदी के चूर्ण को कच्चे आंवले के रस के साथ खाने से प्रमेह रोग नाश होता है । यह तो प्रसिद्ध है जिस स्थान में चोट लगी हो हरदी को चूने के साथ आगमें पीस गरम कर लेप करने से दर्द और शोथ आराम होता है । कुछ ओरतें उपयोगी नहीं है

सौंफ को शीत कारक समझ कर केवल भांग और मिर्च ही घोंट कर पीते हैं सो उनकी भूल है इसे भांग प्रकर्ण में लिखेंगे ॥

पाचन ॥

आंव को पाचन करैं और अग्नि वृद्धि न करैं उसे पाचन कहते हैं जैसे (नागकेशर) यह प्रधान गुण है परन्तु नागकेशर खाज, वमन शरीर की दुर्गंधि और अधिक पसीना आना इन रोगों को नाश करता है ॥

और किसी दवा में दीपन पाचन दोनों गुण रहते हैं जैसे (चीता) यह गर्म है कटु है शोथ, कृमि रोग और बादी बवासीर को नाश करता है ॥

समन ॥

जो औषध पेट शुद्ध करै और पतले मल को बांध न सके परंतु बढ़े हुये दोषों को समन करै उसे समन कहते हैं जैसे (गुरच) भारत के सभी स्थानों में गुड़ूची मिलसक्ती है और प्रसिद्ध नाम इसका गुर्च या गिलोय है। यह गर्म और स्वाद में कटु है ज्वर, सन्निपात, प्रमेह, वात रक्त, कोढ़ और पांडुरोग नाशक है बलकर तथा रसायन है। कोई रोग क्यों न हो गुर्च सब को समन करती है यही कारण है जो वैद्य लोग अक्सर गुर्च के स्वरस में औषध देते हैं। इसीको अमृता भी कहते हैं वैद्यक में इसकी उत्पत्ति यों लिखी है कि जब वानरों की सेना सहित श्री रामचन्द्र जी ने रण में रावण को मारा तब राक्षसों के हाथ से मारे हुये वानरों पर इन्द्र ने अमृत की वर्षा की तो अमृत के प्रभाव से सब वानर उठ खड़े हुये उससे अतिरिक्त जो पृथ्वी में अमृत की बूंदें गिरीं तिनसे गिलोय उत्पन्न हुई इसी से इसका नाम अमृत पड़ा है ॥

अनुलोमन ॥

जो औषध अजीर्ण मल को पचावै और बंधेहुये मल को तोड़कै अपने मार्ग से नीचे गिरावै वह अनुलोमन कहाता है जैसे (हड़ या हर्रे) इसकी

उत्पत्ति वैद्यक शास्त्र में दो प्रकार से लिखी है धन्वन्तरि आदि निघण्टों में तो यह लिखा है कि धन्वन्तरि महाराज हाथ में हर्रें लिये हुये समुद्र से निकले हैं और हरीतक्यादि निघण्ट में लिखा है कि एक समय इन्द्र स्वर्ग में अमृत पान करते थे उसमें कुछ बून्द पृथ्वी में गिरा उसी से हरीतकी उत्पन्न हुई जिसके पृथक् नाम सात प्रकार हैं जैसे विजया, १ रोहणी, २ पूतना, ३ अमृता, ४ अभया, ५ जीवन्ती, ६ चेतकी, ७ (लक्षण) ॥

(१) जिस्का तूंबी के समान गोल आकार होता है वह विजया कहाती है सब प्रकार की हर्रों में विजया नाम हड़ अति श्रेष्ठ है किसी औषध के प्रकर्ण में किसी हड़ का नाम खोल के न लिखा हो सिर्फ हरीतकी या हड़ लिखा हो तो इसी को लेवें क्योंकि ग्रन्थों में इस हड़ को सब रोगों में देना लिखा है ॥

(२) जो बिल्कुल न गोलहो वह रोहणीहै. फोड़ा फुन्सी और घाव में फायदा करती है इसी से इसे व्रणरोपिणी भी कहते हैं ॥

(३) जिसके भीतर गुठलीहो लेकिन बहुत मोटी गुठली न हो(छोटी हर्रें) वह पूतना है इसको प्रलेप आदि में योजन करना उचित है ॥

(४) जिस्में बहुत गूदा हो वह अमृता कहलातीहै दस्तावर है रेचन कर्म में इसी को लेना उचित है ॥

(५) जिस्में पांच लकीरें हों वह अभया है नेत्ररोगमें अंजनार्थ इसी को लेना चाहिये ॥

(६) पीले रंग की जीवंती होती है नास लेने के तेल आदि में अधिक गुण दायक है ॥

(७) जिस्में तीन लकीरें हों वह चेतकी दो प्रकार की होतीहै। एक ब ... से कम मिलती है किसी किसी को उस ... है दूसरी १ अंगुल की लम्बी काली

(उत्तम हड़ की पहचान)—जो हड़ नवीन चिकना गोल भारी जल में डालने से डूब जाय वह बहुत गुणदायक होती है। (अन्यच्च) जो हर्रे का फल तौल में १ तोला ८ मासा हो उसे भी अति गुण दायक समझना (हरीतकी का साधारण गुण) हर्रें को चबाकर खाने से अग्निवृद्धि होती है पीसकर खाने से मल शुद्ध होता है, अर्क खींचकर पीने से मोटी शरीर दुबली होती है (परन्तु जिसे धातु की बिमारी न हो) और भून कर खाने से त्रिदोष का नाश होता है (अन्य प्रकार) हरीतकी भोजन के साथ खाने से बुद्धिबल और इन्द्रियों को चैतन्य करती है। भोजन के पीछे खाने से अन्न तथा पानी के दोषों का दूर करती है (अनुपान भेद से गुण) सेंधव अथवा सांभर लवण के साथ खाने से कफ दूर करती है, मिश्री के साथ पित्त को और गुड़ के साथ बात को नाश करती है॥

बाजे बाजे लोग हर्रें को बारों महीना खाते हैं उन्हें नीचे लिखित प्रकार पर खाने से अतिलाभ होगा जैसे, वर्षाऋतु में सेंधव लवण के साथ, शरद् ऋतु में मिश्री के साथ, हेमन्त ऋतु में सोंठ के साथ, बसन्त में छोटी पीपल के साथ, ग्रीष्म में शहद के सङ्ग, और प्रावृट् ऋतु में गुड़ के साथ॥

निषेध—मार्ग से अति थकित, अति दुर्बल, रूखा, कमजोर, पित्तरोग युक्त, गर्भवती; उपवासी और जिसके शरीरसे रक्त निकलाहो इतने प्रकार के मनुष्य हड़ न खांय॥

हरीतकी कल्प में हड़ का बहुत कुछ माहात्म्य लिखा है परन्तु संक्षेप रूप से यह वाक्य प्रसिद्ध है॥

श्लोक—यस्यमाताग्रहेनास्ति तस्यमाताहरीतकी। कदाचित्कुपितामाता नोदरस्थाहरीतकी॥ १॥

अर्थात् जिसकी माता घर में नहीं है उसकी माता हड़ है कदाचित माता खफा हो जाय पर पेट में पड़ी हुई हड़ कभी कोप को नहीं प्राप्त होती अर्थात् विकार नहीं उपजाती॥

श्रंसन और भेदन ॥

जो भोजन किया हुआ पदार्थ अनपच होकर कोठे में लपट के रह गया हो (जिसे हिकमत में गोंटे पर जाना कहते हैं) उसे फोड़ कर जो औषध नीचे गिरावे उसे श्रंसन कहतेहैं, जैसे अमलतासका गूदा । यद्यपि अमलतास के गूदेमें कुछ की पचाना गुण है परन्तु मल फोड़ कर नीचे गिराने में प्रधान औषध है जो मल वातादि दोष से बँधा हो या न बँधा या मूल गया हो उसे फोड़ के जो अधोमार्ग से गिरावे उसे भेदन क-ते हैं जैसे (कुटकी) यह प्रसिद्ध औषध है, गुण में शीतल तीखी कडुई नकी भेदनी कफ पित्तज्वर प्रमेह स्वांस कुष्ठ और कृमि रोग नाशक हैं र मुख का तीतापन नाश करने में भी कुटकी एकही है। प्रायः २ र रोग वाले का मुख बहुत दिन तक कटु बना रहता है यह कडुवाई टकी क्वाथ से जाती रहती है जैसा कि लोलिंबराज कवि ने परिहास कं कडुवाई पन की चिकित्सा बतलाई है और एक श्लोक भी कहा है ॥

समद्वयं विस्मय मातनोति तिक्ताख्यपायो मुखतिक्ततान्नः ।
निपीड़ते राजसरोजकोषा योषाप्रमोदं प्रचुरंप्रयाति ॥

लोलिम्बराज कवि कहते हैं कि मुझे दो विस्मय होते हैं एक यह कि जसका नाम तिक्ता अर्थात् कुटकी है उसके क्वाथसे मुखकी कडुआहट दूर हो जाती है दूसरे स्त्री लोगों के कमल के समान कोमल स्तनों के मर्दन करनेसे उन्हें बहुत अधिक हर्ष होताहै । इसमें विस्मय की बात यहहै कि ति तीता तिक्ता सो तीतापन का नाश करे और अङ्ग विशेष के पीड़न रने से प्रमोद की अधिकता हो इसका कारण " विषस्य विषमौषधम " दिखलाया है ॥

रेचन (जुलाब)

मल दोषों से विशेष पक्क हुआ हो या न पका होय या कुछ दिन का धिक हो जो औषध उसे अपने प्रभाव से [illegible]

के नीचे बहावे उसे रेचन कहते हैं जैसे (निशोथ) इस औषध पर पाठक गण को अधिक ध्यान रखना चाहिये क्योंकि रेचन कर्म में निशोथ अत्यंत गुणकारी औषध है सुश्रुत में इसकी बहुत कुछ प्रशंसा लिखी है॥

सुश्रुत सूत्र स्थान ४४ वां अध्याय—विरेचन औषधों में जड़ विश्वित छालमयं निशोत का (निशोत के जड़ का छाल) छालोंमें (छोटीलोधका) फलों में (हड़) तेलों में (ऐरण्ड तेल) दूधों में थूहरका दूध इस जाति में श्रेष्ठ हैं। निशोत का मात्रा १ एक मासा से एक तोला पर्यन्त है, निशोत सैंधानोन सोंठ आदि के संग सेवन करने से वायु का, ऊख के रस या मीठे अनार के रस अथवा दूध के संग पीने से पित्त का और गुरुच त्रिफला आदि औषधों के संग खाने से कफ रोग को नाश करता है॥ ३॥

वमन ॥

कच्चा पित्त और कच्चा कफ (जो कफ पित्त पक जाते हैं वे आपे निकल जाते हैं) को जो औषध अपने बल से ऊर्द्ध मार्ग अर्थात् कै कराने के द्वारा बाहर निकाले उसे वमन कहते हैं। जैसे (मैनफल) यह औषध कै कराने के लिये अति उत्तम है। मैनफल गुण में उष्ण रूखा हलका कै लाने वाला, पीनस और फोड़ा फुन्सी रोग का नाशक है॥

शरीर शोधन ॥

जो औषध अपने बल से कुपति मल, पित्त और कफ को कुपितस्थान से छुटाय के उसे ऊर्द्ध मार्ग या अधो मार्ग से गिरावे उसे शरीर शोधन कहते हैं। जैसे (देवदाली) इसको कहीं २ घघरबेलि, या सोनैयाबेलि, बंदाली और बंदाल भी कहते हैं। वैद्यक में इसने नाम है। ककोटी, गरागरी, देवताड़ी, कृतकोध और जीमूत। यह एक प्रकार की लता है, तिलसा के समान फल होता है उसमें भी दो भेद हैं, एक चिकना दूसरा पीतवर्ण और खरखरा होता है किसी २ वैद्यक ग्रन्थ के टीकाकारों ने इसे धनतुरई करके लिखा है देवदाली स्वाद में तीखी चरपरी है वमन कराते

वाली दफ, बवासीर, शोथ, पांडु; श्रम और ज्वर को
इसके फल का गुण—उपरोक्त रोग नाशक अंजन है
पतला करके बहानेवाला है। दूसरा फल जो पीत वर्ण
उपरोक्त गुण के अतिरिक्त विष का नाशक है। इस फ
इसने और लिया है, शिर में बलगम जम गया हो औ
कफ न निकलता हो इसे पानी में भिजोय निचोड़ कर
देने से सब कफ पानी होकर बह निकलता है लेकिन
होना चाहिये कि बलगम शिर में जमा है। पित्त कामल
में भी इसके द्वारा पीले रंग का दूषित पानी नाशिका
जाता है॥

छेदन॥

जो औषध बधे हुये कफ आदि के दोषों को अपन
कर बाहर निकाले उसे छेदन कहते हैं। जैसे जवार
और मीवर॥

लेखन॥

रस रक्त मांस आदि धातु और मल मूत्रादि, जो
के शरीर को दुर्बल करे उसे लेखन कहते हैं। जैसे–मधु
यव। यही कारण है जो गर्म मिजाजवाले को बहुत
सेवन निषेध किया है परन्तु पाठकगण को इस बात
कि यव धातु शोषक है तो दाह रोग में यवमंथ (
को क्यों लिखा है? इसका कारण यह है कि समस्त
गुणकारी होते हैं जैसे वीर्य विपाक और शक्ति आदि,
से कोई वीर्य से और कोई विपाक में गुण करते हैं जै

हैं। जैसे–सोंठ स्वेत जीरा और गजपीपर। इन तीनों औषधों योग कफ, अतीसार और ग्रहणी आदि रोगों में करना उचित है।

तंभन—जो औषधी रूपी और प्रकृत में शीतल तथा कषायल हो पाचन शक्ति जिसमें बहुत कम हो परन्तु वातकृत अर्थात् वातकारी से स्तंभन कहते हैं। जैसे कुरैया का छाल और शोहनपत्र। इस शब्द को धातु स्तंभन में न समझना यह मल स्तंभन है बहते हुये अतीसार) को जो बांधे उसे स्तंभन कहते हैं। कुरैया को वैद्यक में कहते हैं कुटज वृक्ष दक्षिण में बहुत होते हैं इस वृक्ष में लम्बी निकलती है उसके भीतर के बीज को इन्द्रजव कहते हैं। कुटज सार रोग में प्रधान औषध है। डाक्टरी में भी इस औषध का प्र- है ल्याटिन में (राईटिया एंटिन्डिसेन्टेरिका करटेक्स) और अङ्गरेजी नेसाई बार्क) कहते हैं॥

सायन—जो औषध मनुष्य को शीघ्र वृद्ध होने न देय अर्थात् जिस य को नित्यशः सेवन करने से जल्दी बुढ़ापा न होय उसे रसायन हैं। जैसे—गुर्च; रुद्रवंती, गूगुल, और हरीतकी॥

वाजीकरण—जिस औषध के सेवन से स्त्रियों के साथ मैथुनमें अधिक उत्पन्न हो तिसे वाजीकरण कहते हैं। जैसे—बरियारा का जड़ गुल और केवाच बीज वीर्य्य में हर्षोत्पन्न करने में यह तीनों प्रधान ध हैं॥

शुक्रल—जो औषध धातुको बढ़ावे उसे शुक्रल कहते हैं। जैसे अस- दोनों मूसली और सतावर, यह औषध वीर्य्य को वृद्ध और पुष्ट भी हैं परन्तु असगन्ध विशेष कर स्त्रियों के रज को अधिक बढ़ाता है। उर्द और आंवला ये भी धातु को बढ़ाते हैं उसी से रेतजन्य कहे हैं॥

ही भटकटैया का फल स्त्रियों के धातु को रेचन करता है, जायफल स्तम्भक है, धीर्य्य शोषक बड़ाहड़ और लवङ्ग है, विशेष हाल आगे न होगा॥

सूक्ष्म—शरीर के महीन रोम मार्ग कूपों के द्वारा, सेंधवनोन, महत निम्ब और एरण्ड तैल देह में पैठते हैं इससे वे सूक्ष्म कहाते हैं, यही कारण है जो उक्त चारों औषध वातरोगाधिकार में श्रेष्ठ कहे गये हैं॥

व्यवायि—जो द्रव्य पहिले समस्त शरीर के नाड़ियों में प्राप्त हो, तब उसका परिपाक होवे तिसे व्यवायि कहते हैं जैसे भांग और अफीम॥

विकाशि—उस द्रव्य को कहते हैं जो शरीर के बन्धन को ढीले करै और रसादिक धातु और शुक्र को क्षीण करैं जैसे सुपारी और कोदों का चावल॥

मादक—द्रव्य वह है जो बुद्धि को लोप करै और तमोगुण प्रधान हो जैसे—मद्य आदि॥

विष—व्यवायि और विकाशि हो छोटे २ नसों के द्वारा मद उत्पन्न अग्नि बर्द्धन (समस्त शरीर में व्याप्त: करदे) मृत्यु कारक यह गुण द्रव्य जिस औषध में (योगवाहि) संग पावै सगुण करै, जैसे संखिया और सींगिया आदि॥

प्रमाथी—वे द्रव्य कहलाते हैं जो अपने से संचित दोषों को स्रोतों से निकाल डालें जैसे मरिच और वच॥

अभिष्यन्दी—जो द्रव्य अपनी पिच्छिलता गुण करके रस बाहिनी नाड़ियों को निरोध कर शरीर को जड़ करै उसे अभिष्यन्दी कहते हैं। जैसे (दही) यद्यपि क्षीर भेद से दही है गुरु और रूपान्तर होने से प्रकृति औरही हो जाती है तथापि दही अपने साधारण गुण से रहित प्रकृति वाले को दुर्गुणदायी है इसी से सुश्रुत में रात को दधि खाना निषेध किया है "रात को दही न खाना और न बिना घी के खावै"॥

[illegible] ॥

हैं कि जिसका कुछ कथन नहीं है । अभिनिवेश चित्त से ध्यान देकर
रते हैं तो भूत पूर्व ऋषियों के कहे हमलोगों के लिये यावत् आचा
वे निश्चय आयु इच्छित सन्तान और धन वृद्धि करने वाले हैं इसमें
न्देह नहीं वेद के न जानने से आचार के छोड़ने से,. आलस्य से
आर्यों को मारने की इच्छा करती है । कारण यह कि आचार न प
से मनुष्य अल्पायु होताहै, सर्वदा रोग ग्रस्त रहताहै मन दौर्बल्य
और शोकयुत रहता है इस लिये शारीरक स्वास्थ्य लाभार्थ आ
पालन करना सबको उचित है ॥

वसिष्ठः, आचारःपरमोधर्मःसर्वेषामितिनिश्चियः ।

वसिष्ठ जी कहते हैं कि आचार यह परम धर्म ऋषियों का मत

पराशरःदक्षः ॥

चतुर्णामपिवर्णानांआचारोधर्मपालनम् । आचारभ्रष्टदेह
नांभवेद्धर्मपराङ्मुखः॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिंदित
दुःखभागीचसततंरोगीचाल्पायुषोभवेत् ॥

पराशर और दक्ष कहते हैं कि चारो वर्णों को आचार से रहना
है आचार से भ्रष्ट मनुष्य धर्म से वञ्चित रहते हैं, दुराचारी पुरुष लोग
निन्दित हमेशा दुख का भोगने वाला और शीघ्र मृत्युको प्राप्त होता
है कोट पतलून धारी होटल में महाप्रसाद खानेवाले इधर देखो तुम
भूत पूर्व आर्यगण क्या कहते हैं ॥

प्रातरुत्थानकालः ॥

वेद से लेकर पुरान तक मे यही वचन मिलेंगे मनुष्य को उचित
कि ब्राह्म मुहूर्त (चारघड़ी के तड़के) में उठकर प्रातः स्मरण करे । वि
पुराण में प्रातःकाल का प्रमाण लिखा है ॥

पञ्चपञ्चउषःकालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्टपञ्चभवेत्प्रात
स्ततःसूर्योदयःस्मृतः ॥

सूर्योदय से ५५ घड़ी पर ऊषः काल (कितनो के मत से यही ब्राह्म-मुहूर्त है और बहुतों के मत में ऊषःकाल से एक घड़ी पूर्व ब्राह्ममुहूर्त कहाता है अर्थात् ३ घड़ी सूर्योदय होने को रहे उसे ब्राह्ममुहूर्त कहते हैं) ५७ घड़ी पर अरुणोदय और ५८ घड़ी पर प्रातःकाल होता है। सब वर्णोंको चाहिये कि ब्राह्ममुहूर्त में ईश्वर का स्मर्ण कर अपने कृतकार्य को विचार कर तब शौच को जावें॥

"ब्राह्मेमुहूर्ते यानिद्रासा बलक्षयकारिणी" ब्राह्ममुहूर्त की निद्रा बल के नाश करनेवाली है इसलिये स्वास्थ्य के चाहनेवाले जन अवश्य उक्त समय में उठने का अभ्यास करें॥

स्वकरतलाद्यव लोकनम्॥

आचारप्रदीपे—कराग्रेवसतेलक्ष्मी प्रभातेकारदर्शनम्। च-न्यच्च—भारद्वाजमयूराणांचापस्यनकुलस्यच। प्रभातेदर्शनं श्रेष्टं वामपृष्ठविशेषतः॥ श्रोत्रियंसुभगांगांच अग्निमग्निचितिं तथा। प्रातरुत्थाययःपश्येदापद्भ्यः सप्रमुच्यते॥

हस्त के अग्रभाग में लक्ष्मी का वास है इसी प्रातःकाल उठ हाथ देखे, भारद्वाज (खंजरीट) मोर, टिटहरी, और नेवरा, इन्हे प्रातःकाल देखना शुभ है वामभाग और पीठ पीछे देखे तो अधिक शुभ हो। जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर यज्ञ कराने वाले, सुन्दर गौ यज्ञ के अग्नि का दर्शन करते हैं वह अनेक आपत्ति से छुट जाता है॥

नागदेव जी कहते हैं प्रातःकाल पापी, दरिद्र अन्धा नकटा नग्न मेलावाफल, बहेरा कौवा बिल्ली मूस नपुंसक और गदहा इन्हे न देखे यदि अकस्मात देख पड़े तो पुनः आंख बंद करले॥

ब्राह्ममुहूर्त में उठ पूर्वोक्त पदार्थों को देख जल से तीन कुल्ली कर नेत्र औा मुख धो पवित्र होके परमात्मा का ध्यान करे तब निम्नलिखित श्लोक का पढ़ के पृथ्वी में पाद धरे॥

दिशा फिर के बारह दफे, मूत्र करने के बाद चार चार और भो में सोलह बार कुल्ली करना चाहिये । प्रयोग पारिजात में लिखा है अपने सामने कुल्ली करने से देवतों पर, दक्षिण ओर पितरों पर और पीछे ऋषियों पर पड़ता है इस लिये वाम भाग के ओर कुल्ली करना चाहिये । यह वचन वैद्यक मत से अग्राह्य है क्योंकि कुल्ली करना सामनेही लाभदायक है ॥

ग्रन्थान्तरे—मेढ्ंप्रक्षाल्यसलिलैर्मूत्रोत्सर्गादनन्तरम् । गण्डूषत्रितयंकृत्वातेनशुद्धोभवेद्द्विजः ॥ मुक्तकच्छस्तुयोविप्रो धरण्यांपादतश्चरेत् । पदेपदेसुरापानंप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥

ब्राह्मणादि पेशाब करने के बाद लिङ्ग को पानी से धो डालें । तीन कुल्ली करें तब शुद्ध हो । एतद्देशीय बड़े बड़े पोथा धारी ब्राह्मण भी मूत्र त्यागानन्तर लिङ्ग को नहीं धोते मूत्र विन्दु धोती में टपका करता है । लिखा है ब्राह्मण बिना काछ खोले मूत्र त्याग न करै इसका कारण यह जान पड़ता है कि प्रायः लोगोंका मूत्र त्याग करते समय वायु अधोरेचन होता है उससे धोती अशुद्ध हो जाता है । दिशा फिरने के बाद ब्राह्मण काछ खुला पृथ्वी पर चलता है सो पद पद पर मद्य पान करता और उसके प्रायश्चित का विधान नहीं है । यथार्थ है कि दिशा फिर चलनेमें मल विन्दु से अवश्य जंघादि अंग अशुद्ध हो जाते होंगे । इस देश में बड़े बड़े सरयूपारी ब्राह्मण (जो अब तक अपने को गौतम के ब्राह्मण बने बैठे हैं) दिशाफिर के सैकड़ों कदम पर जाके जल छूते हैं ॥

दन्तधावन ॥

रातको सोनेके ऐसे प्रातःकाल मनुष्योंका मुखकोका जिह्वा स्वाद रहित हो जाती है इस लिये दतूनि करने की जरूरत है यही सब ऋषियों और वैद्योंका मत भी है । आ० द० के १ खण्ड प्रथमअङ्कमें जो जो विधि दन्तधावन करने के वैद्यक मत से लिख आयेहैं वही वाक्य सब ऋषियों के मत

में पाये जातेहैं विशेष फर्क सिर्फ इतनाहीहै जैसा विष्णुपुराणमें लिखा है, प्राङ्मुखस्य धृतिःसौख्यं इत्यादि पूर्व मुख दन्त धावन करने से वृद्धि सुख और शरीर आरोग्य, दक्षिण मुख कष्ट, पश्चिम मुख हारि, उत्तर मुख गौ स्त्री और कुटुम्बों का नाश होता है इससे स्पष्ट हुआ की पूर्वही मुख बैठ के दतून करना श्रेष्ट है। व्यासजी के मत से प्रतिपदा अमावश्या षष्ठी नवमी और रविवार के दिन दतून करनेवाला सप्तकुल को दहन करने वाला होता है। शुष्क काष्ठ की दतूनि करना ऋषियों ने निषेध किया है॥

स्नान॥

स्नान करने की विधि तथा स्नान के द्वारा आरोग्यता प्राप्ति मानसिक उन्नतिकरना जैसा आर्य्यावर्तमें है अन्यदीपोंमें नहींहै। वैद्यक मतसे स्नान करनेका लाभालाभ प्रथम खण्ड में दिया है अब जो कुछ ऋषियों की राय स्नान करनेके विषयमें है उसे भी प्रकाश करतेहैं। इसमें सक् नहीं कि जो स्नान और निर्मल वस्त्रादि से अपने शरीरको पवित्र नही रखते वे सर्वदा मन मलीन दुःखी विचार हीन आलसी और रोगार्त बने रहते हैं और उनसे शारीरक तथा मानसिक परिश्रम कभी नहीं हो सकेगा॥

स्नानात्पूर्वं भक्षणयोग्याः पदार्थाः चतुर्विंशतिमते॥

इक्षुरापःफलंमूलं पयस्तांबूलमौषधम्। भक्षयित्वापिकर्तव्या स्नानदानादिकाःक्रियाः॥

सब ऋषियों का मत है कि (इक्षु) ऊख या पौंढा जल फल कन्द दूध तांबूल और औषध इन्हे भोजन करके भी मनुष्य स्नान दानादिक क्रिया कर सक्ता है परन्तु स्नान करके भक्षण करना अति उत्तम है॥

स्नानकालः॥

हैमाद्री—चक्रवकिरणयुक्तां प्राचींदिश मवलोक्यस्नायादिति॥

याज्ञवल्क्यः—अत्यन्तमलिनःकायो नवछिद्र समन्वितः। स्रवत्येवदिवारात्रौ प्रातःस्नानंविशोधनम् ॥ १ ॥

किञ्चित् सूर्योदय देख स्नान करना उत्तम है । याज्ञवल्क्य का वचन कि नवछिद्र सहित अत्यन्त मैली यह शरीर है दिन रात रस आदि धातुओं का मल बहता रहताहै उसके शुद्धके लिये प्रातःकाल में स्नानकरना उचित है ॥

गुणादशस्नानपरस्यसाधो रूपंचतेजश्चबलंचशौचम्। आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च यशश्चमेधा ॥

ऋषियों ने स्नान का दश गुण लिखा है । रूप तेज और बलकी वृद्धि पवित्रता आयु तथा आरोग्य लाभ एवं (मल) शरीरकी मलीनता और दुःस्वप्न का नाश और बुद्धिवर्द्धक है ॥

स्नानार्थेउक्तं जलम्—वाप्यांकूपे तडागे वा नद्यांवाचोष्ण वारिणा । प्रातःस्नानं सदाकुर्यादुष्णो नैवसदातुरः ॥

ब्रह्ममनुः—संक्रान्त्यांरविवारे च सप्तम्यांराहुदर्शने । आरोग्येपुत्रमित्रार्थी न स्नायादुष्ण वारिणा ॥

बांवली कुआँ तालाब और नदी में अथवा गरमजलसे हमेशा सबेरे स्नान करना उत्तम है परंतु गरम जल सिर्फ रोगियों को लिखा है अर्थात् जिन्हें अति ठंढे दिनों में शीतल जल से स्नान करनेसे शरीर में दर्द आदि वायु का विकार होजाता है उन्हें गरम जल से स्नान करना निषेध नहीं है। मनु महराज कहते हैं आरोग्यता पुत्र मित्र और धन के चाहने वाले संक्रान्ति एतवार सप्तमी और ग्रहण में गरम जल से स्नान न करें । लेकिन वामदेव ने कहा है (असामर्थ्याच्छरीरस्य) निर्बल मनुष्य देश काल देख मंत्र स्नानादि जो सात विधि स्नान क[illegible] है सो स्नान करै । मूल पूर्व

ऋषियों ने मुख्य गौण भेद से द्विविधि स्नान कहा है उसमें भी मुख्य ४ और गौण ६ प्रकार का लिखा है लेख बढ़ जाने के कारण नहीं लिखा ॥

वाचस्पति का वचन है, स्नान आचमन दान देवता पितृ के तर्पण के लिये शूद्र के हाथ का जल न लेना अगर ब्राह्मण शूद्र का छुआ जल पीलेय तो तीन दिन बिल्व पत्र भोजन कर व्रत करनेसे शुद्ध होताहै (इस स्थल में शूद्र म्लेछ तथा चाण्डालादिको जानना) और दो मास अर्थात् श्रावण और भाद्र में गङ्गा आदि नदियों में भी स्नान करना ऋषियों ने मना किया है ॥

वाचस्पतिः एवं धन्वन्तारिः ॥

तृणपर्णोत्कटयुतं कलुषंविषसंयुतम् । योऽवगाहेत वर्षासु पिबेद्वापिनवंजलम् ॥ सबाह्याभ्यन्तरांरोगान् प्राप्नुयात्क्षिप्रमेवहि ।

वाचस्पति और धन्वन्तरि महाराज कहतेहैं कि वर्षामें समस्त नदियों का जल घास पात तथा कीटों के संयोग से विष समान होजाता है इसमें जो मनुष्य वर्षा जल युक्त नदियों में स्नान करता है अथवा जल को पीता है उसके शीघ्रही बाहर और भीतर रोग हो जायगा । यही कारण है जो ऋषियों ने वर्षा में नदियों को रजस्वला कहा है ॥

तीर्थस्नान ॥

युक्त नहीं है मानो हिन्दू शास्त्र हैं क्या श्रुति स्मृति और पुराण आदि ग्रन्थों में कुछ न कुछ तीर्थ का वर्णन अवश्यही है परन्तु आज कल ऐसा लोगों ने अविद्या के कारण तीर्थ नाम रक्खे हैं और कल्पित ..... ने

जाके पितृ पितामहों के सञ्चित द्रव्यों का व्यर्थ नाश कर अन्त में आप भी पृथ्वी जल वायु के दोष से रोग ग्रस्त हो भाग्यमान हो जाते हैं जैसे काशी में मणिकर्णिका कुंड जिसमें एक डुबी लगाने में नव दिन शरीर से गन्ध नहीं जाती तो कहिये इस कदर दुर्गंधित जल को प्रत्यह नियम पूर्वक हजारों मनुष्य आचमन करते हैं रोग ग्रस्त न होते होंगे? प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्रति वर्ष काशी में हैजे से असंख्य मनुष्य मरते हैं यहां प्रायः देखने में आया है कि लोग बद्रीनारायण यात्रा करके जैसाही आये कि अतीसार की बिमारी हुई और मर गये। ऋषियों का मत यह नहीं है, ऋषिगण यह तीर्थ माना है ॥

सत्यंतीर्थंक्षमातीर्थंतीर्थमिन्द्रियनिग्रहः। सर्वभूतदयातीर्थं सर्वत्रार्जवमेवच ॥ दानंतीर्थंदमस्तीर्थंसन्तोषस्तीर्थमुच्यते। ब्रह्मचर्यंपरंतीर्थंतीर्थञ्चप्रियवादिता ॥ ज्ञानंतीर्थंधृतिस्तीर्थंपुण्यंतीर्थमुदाहृतम्। तीर्थानामपिशततंविशुद्धिर्मनसःपरा ॥

भावार्थः (सत्य) जो कुछ देखा, सुना और जानता हो वैसाही कहना किसी प्रकार की बातें अपने मन से बना के न कहना तीर्थ है। (क्षमा) सामर्थ्य होने पर भी सहनशील होना क्षमा तीर्थ है। पञ्च कर्मेन्द्रिय और पञ्च ज्ञानेन्द्रिय दशों को विषयों से रोकना तथा आत्मवत् सर्व जीवों पर दया करना तीर्थ कहाता है (दान) पुस्तकालय विद्यालय अनाथालय विद्वान और विद्यार्थियों की सहायता करना तीर्थ है। (दम) सुख दुःख समान जानना (सन्तोष) सत्कर्म द्वारा यत्किंचित द्रव्योपार्जन हो उसी में निर्वाह करना तीर्थ कहा जाता है और वेश्यादि गमन द्वारा वृथा वीर्यनष्ट न कर निरन्तर रक्षाकरना ऋषियों ने परम तीर्थ कहा है। (ज्ञान) सत्यासत्य वस्तुओं को जानना (धृतिः) धर्णंधृतिः प्रतिज्ञाओं का न भूलना। (पुण्य) जो ब्राह्मणादि देशोन्नति के बाधक नहीं है और न देशोन्नति कर सक्ते हैं उन्हें अन्न जल से तृप्ति करना पुण्य तीर्थ है

और मन को शुद्ध रखना (मनस्सत्येनशुद्धयति, मन सत्य बोलने से शुद्ध होता है) तीर्थों का भी तीर्थ कहा जाता है ॥

मनोविशुद्धंपुरुषस्यतीर्थंवाचांयमस्त्विन्द्रियनिग्रहस्तपः। एतानितीर्थानिशरीरजानिस्वर्गस्यमार्गंप्रतिबोधयन्ति ॥

भावार्थः—मन की शुद्धता पुरुषों का तीर्थ सत्य वचन और इन्द्रियों का अवरोध तप है यह सब शरीर से उत्पन्न तीर्थ स्वर्ग के मार्ग को दिखलाते हैं ॥

चित्तमन्तर्गतंदुष्टंतीर्थस्नानान्नशुद्ध्यति। शतशोथजलैर्धौतं सुराभाण्डमिवाशुचि ॥

भावार्थः—जिन लोगों का अन्तःकरण दुष्कर्मों से दूषित है वे तीर्थस्नान से भी नहीं शुद्ध होते जैसे मद्य पात्र सैकड़ों घड़े गंगाजल के धोने से भी नहीं शुद्ध होता ॥ शेष आरोग्यदर्पण के चतुर्थखंड में लिखेंगे—

—:०§०§०§०:—

विशेष विज्ञप्ति ॥

आरोग्य दर्पण के तृतीय खण्ड के लेख को अब हम यहीं समाप्त करते हैं। आरोग्य दर्पण के चतुर्थ खण्ड में प्रथम ज्वर चिकित्सा लिखेंगे जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि देशीय रीत्यानुसार ज्वरचिकित्सा न जानने के कारण तथा अँगरेजी दवाइयां खा खा के असंख्य प्राणी अकाल कालग्रास होते जाते हैं। वह ज्वरचिकित्सा परीक्षित प्रणाली हम ऐसी सुगमता से लिखेंगे कि सर्वसाधारण जन ज्वर रोग से स्वयं बचेंगे और अनेक ज्वरार्तियों को आरोग्य कर सकेंगे। उस रीति का ज्वर चिकित्सा नामक अपूर्व ग्रन्थ आजतक देखनेमें न आया होगा। पश्चात् योग विद्या (आध्यात्मिकशक्ति बढ़ोपाय) का आद्योपान्त वर्णन करेंगे कि जिसके द्वारा अनेक जन अनेक प्रकारके अपूर्व लाभ उठा सकें जो बड़े २ महात्माओं को दुर्लभ है। तत्पश्चात् भूत पूर्व महर्षियों के अनुमान किये हुये दिनचर्य्या का बयान करेंगे। इस स्थल में "भारतोन्नति का वैद्यक प्रथम अङ्ग है" लिखकर हम आयुर्वेदोक्त औषधालय में जो परीक्षित औषधियां हैं उनके सूचीपत्र लिखते हैं॥

आप लोगोंका शुभचिन्तक
जगन्नाथ शर्म्मा राजवैद्य
जानसेनगञ्ज
इलाहाबाद

भारत के उन्नति का वैद्यक प्रथम अंग है।

इस विषय में हमें बहुत लंबा चौड़ा लेख देना अभीष्ट नहीं है क्या पाठकगण नहीं जानते जैसा कि ऊपर लिखा हुआ है "धर्मार्थकाम मोक्षाणामारोग्यं मूलकारणं" फिर यह भी प्रधान२ ज्ञाताओं को विदित है कि प्रतिदिन भारत का द्रव्य विलायत (इङ्गलिस्तान) को आकर्षण रूपी नदी की अनेक धाराओं से बहा चला जाता है, उन्हीं में से अधिकांश धन वाहिनी धारा वही है जो अङ्गरेजी दवाइयों के मूल्य के द्वारा संचित हो कर समुद्र पार की राह लेती है प्रायः देश हितैषी विज्ञ लोग उसी द्रव्य के लिये छटपटाय २ हारे और अनेक कानफरंस (जातीय समाज) और भांति २ की कमेटियां कर रहे हैं, उपाय सोच रहे हैं, देशी तिजारत शिल्प विद्या आदि का प्रचार कर रहे हैं तो बताइये बड़े २ भारद्वाजादि महर्षियों की उपार्जित वैद्यकविद्या आदि की ओर देशी औषधी जो लोगों के प्रकृति के अनुकूल गुण को देने वाली, पवित्र धर्म रखने वाली, अति सस्ती सर्वत्र सुलभ सहज में बनने वाली, आपका क्या बिगाड़े है जिसको आप लोग दिन प्रति छोड़ते जाते हो, यह नहीं सोचते कि उसके छोड़ने के साथ ही साथ हमारे अर्थ धर्म काम मोक्ष भी छूटते जाते हैं। अर्थ के माने धन हैं सो वह धन जैसा कुछ डाक्टरी औषधों में लगता है उसे वही खूब जानता है जिस को उन से काम पड़ता है। वह धन इस प्रकारपर विदा हुआ जिसके साथ ही साथ पवित्रता भी जो धर्म का प्रधान अङ्ग है नष्ट हो जाती है, क्योंकि शूकरादि अनेक मलिन और अखाद्य जन्तुओं की चर्बी और भांति २ के घृणित पदार्थ रचित मदिरा और आसव और अनेक सजल निर्जल रूप उन लोगों की बनाई हुई कि जिनके खान पान व्यवहार को स्मरण कर सच्चे धर्मशील को वमन को इच्छा आ जाती है। यह

कौन नहीं जानता कि दूषित द्रव्य संयोजित मद्य से बनी हुई अंगरेजी औषधियां होती हैं जो पहले कहीं स्वप्न में भी नहीं दिखलाई देती थीं और डाक्टरों का कहीं नाम निशान भी नहीं था, तो क्या हम लोग रोग में मरते जाते थे? कभी नहीं। कितने यह कहते हैं "निर्बीजा पृथिवी निरौषध रसाः" यहां की पृथिवी निर्बीज होगई और औषधियोंका रस जाता रहा हम कहते हैं जरा आंख खोल कर मेटीरिया मेडीका को देखो, आधी औषधियां भारतवर्ष की हैं और शारीरक विद्या और अस्त्र चिकित्सा के भी मूल सूत्र इसी भारतवर्ष से लिये गये हैं। यह यूरोप के प्राचीन इतिहासोंमें स्पष्टरूपसे लिखे हुयेहैं इन्हीं सब बातोंको खूब फैला के अंगरेजों ने परीक्षा पूर्वक प्रकाशित की है और अब उसी के द्वारा लाखों रुपये घर बैठे भारत से खींचे लेते हैं; क्या उक्त श्लोक हम लोगों के लिये चरितार्थ नहीं हो सक्ता? उक्त श्लोक का अभिप्राय यह है कि पृथवी निर्बल होजायगी अर्थात् जहां बड़े २ बलवान् शूर वीर पैदा होते थे वहां निर्बल कायर कुपूत उत्पन्न होंगे क्योंकि पांच तत्वों में से पृथवी तत्व विशेष प्रधान है और अन्न का कारण भूत है और "निरौषधिरसाः निर्गता औषधि रसाः येभ्यः" अर्थात् अच्छी संजीवनी औषधियों का रस जाता रहेगा लोग आसुरी चिकित्सा और अपर प्रिय पदार्थ के लोलुप हो जायगें क्योंकि "नीचामहलगता" यदि कोई यह कहे कि यहां के वैद्य लोग मूर्ख हैं दो चार भाषा की किताब देख लिया वैद्य बन गये, रोगी जहन्नम में जाय अपनी हथ पलौती से चार पैसा पैदा कर लेना उनका मुख्य कर्तव्य है। तो हम कहते हैं कि इसमें विद्या और औषध का क्या दोष है राजा विदेशी ठहरा वह इस पर क्यों ध्यान देने लगे और न भारत में कोई ऐसा आयुर्वेद कालिज है कि जहां विद्यार्थी लोग पूर्ण रूप से विद्या पावें। अगर यह कहा जाय कि यथा राजा तथा प्रजा, मुसलमानों के राज होने से हकीमी की तरक्की हुई अंगरेजी राज में डाक्टरी की

चौथे—अङ्गरेजी दवाइयों का दाम बहुत अधिक है जहां तक लिखे लेते बन पड़े चाहे उस में दमड़ी की भी लागत न हो अच्छी शीशी और अच्छे २ टिकट चिपका देने से और आतुरता की तारतम्य से दाम वेही हिसाब बढ़ सक्ता है॥

पांचवें—प्रायः अङ्गरेजी औषधों में ज़हर का मेल रहता है कि धोखे में ज़रा भी अधिक पी जाय तो रोगी को यमालय पहुंचना दूर नहीं है और ऐसा प्रायः देखने में आता भी है। अभी इलाहाबाद में एक बड़े भारी ओहदेदार का प्राण सङ्कट में लग गया उसी रंगी चुंगी शीशी के धोखे में—

छठे—यह हिंद ग्रीष्म प्रान्तीय उष्ण प्रधान देश है और अनेक देशान्तरीय लोगों के यहां आने से इतना गर्म हो गया है कि शीत ऋतुओं में भी बिना कुछ ठंढी चीज खाये उदर दाह शांत नहीं होता। अङ्गरेजी दवा और व्यवहारों से यहां के लोगों का बल बुद्धि पराक्रम इतना कमजोर हो गया है कि जिसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति शिर की शून्यता से स्वयं सिद्ध हो रहा है वर्णन की कुछ भी आवश्यकता नहीं है॥

सातवें—यह बात तो प्रायः सभी जानते हैं तथा पुराणों के देखने से भी जाना जाता है कि भूत पूर्व आर्य सन्तान गण विषयी कम होते थे इसी से वे लोग बलवान् पुरुषार्थी अधिक होते थे जब से मुसलमानों का राज्य हुआ संस्कृत विद्या का सूर्य अस्त हो गया हिन्दू मुसलमानों में मेल मुलाकात अधिक बढ़ जाने के कारण देखा देखी एतद्देशीय लोग भी इतने विषयी हो गये कि आज के समय में वीर्य सम्पन्न बलवान विरले पुरुष पाये जांयगे॥

जो रहा सहा सो भी इंगरेजों की सङ्गति और मेल मुलाकात से पूरा एकसा बन बैठे गर्म दिनों में भी काले बनात का कोट पतलून से और होटल का मद्य प्रसाद इतना हमलो गों के वीर्य क्षीण कर दिया है कि जिस का कुछ ठिकाना नहीं उसी पर जहां अति तीक्ष्ण ज़िंदेली अङ्गरेजी दवा सेवन हुआ कि पचीसवीं तीस वर्ष की अवस्था में यमपुर वास करने का अवसर मिल जाता है॥

विलायतकी औषधियां बेचतेहैं याद उन्हीं से और छोटे मोटे दुकानदार लोग मँगाते हैं डाक्टरों के मेल और आजिज़से यथा २ हिक्मत करते हैं । पाठकगण देखें कि विलायत से आर्य्यावर्त्त में आनेसे कितना खर्च पड़ताहै मसलन जहाजका किराया § चुङ्गी; फिर थोकवाले दुकान का किराया, नौकर, तेलबत्ती आदि खर्च जोड़के चारआना रुपया से कया कम लेते होंगे वैसाही उनसे मँगाने वाले को जानिये रेलका भाड़ा चुङ्गी दुकान आदि खर्च के अतिरिक्त जो कुछ मुनाफा लेते हों देखनेसे जाना जाता है कि छोटी सी छोटी भी दुकानों में निम्नलिखित व्यय रहता है जैसे मकानका केराया३०) दो कम्पौंडर ४०) ३ कहार १५) दो चपरासी १०) एक राइटर २०) तेल बत्ती आदि दोसौ माहवारी से कम न समझना चाहिये इसके अतिरिक्त मालिक का मुनाफा और २५) सैकड़ा डाक्टरों का कमीशन पूर्वोक्त सब मिलाके एकत्रित करिये टका की मुर्गी नौ टका मिकिवाई हुआ या नहीं, फिर आपको यह मजाल नहींहै कि गुण न करनेसे दवा वापस कर औषध का दाम फेर लेओ। डाक्टर बाबू ने कहीं देखा कि रोगी मालवर है प्रिस्क्रिप्शन (नुसखा) को ऐसा चिन्हित कर देंगे कि इसमें या चौथे चार्य्य देतेही बनेगा, विलायत से भी अँगरेजी आप पढ़ आये परन्तु डाक्टरों के प्रिस्क्रिप्शन को न पढ़ सकोगे इत्यादि और भी भीतरी अनेक काररवाइयां होती हैं जिन्हें पूर्ण रूप से मैं प्रकाश नहीं कर सक्ता परन्तु यह बात मुझे दिखलाना अत्यावश्य है कि भारत से इङ्गलैंड को सिर्फ औषध के मूल्य किस कदर जाता है । इसे तो पाठक गण जानते ही होंगे कि जितने हासपिटेल (अस्पताल) आर्य्यावर्त्त में हैं सबों का खर्च भारत से लिया जाता है और भारत में जितने अस्पताल हैं हम नहीं कह सक्ते फिर आज भारत में ऐसे कोई राजा महाराजा न देख पड़ेंगे जो अंगरेजी औषधों का व्यवहार और एक दो डाक्टर पास में न र-

§ चोर माल को जैसे अंगरेजी दवाइयें, [illegible] में निकल जैसा पड़ता है।

रतेहैं वल्कि खैराती अंगरेजी दवाई बटवाया भी करते हैं * फिर कौन ऐसा शहर है जहां दसबीस डाक्टर और दो चार अङ्गरेजी दवाईखाना न हो, बस इसी से जान लीजिये कि आर्य्यावर्त्त में कैसा कुछ अंगरेजी दवाइयों का प्रचार है । इस समय २० कोटि भारतवर्ष निवासिनी प्रजा है जिसमें ५ कोटि हकीमी और ३ कोटि वैद्यक की औषध खानेवाले होंगे १२ करोड़ अंगरेजी दवा के खानेवाले जानिये । हम कहते हैं २० करोड़ में सिर्फ एक करोड़ ऐसे मनुष्य हैं जो प्रायः अंगरेजीही दवा खाते हैं यदि येत पूर्वापर मिला के प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक मास में सिर्फ दो रुपये के औषध खाते होंगे तो एक रुपिया प्रत्येक व्यक्ति का विलायत जाता है इस हिसाब से एक करोड़ रुपया महीना और १२ करोड़ रुपिया साल हुआ अर्थात प्रति वर्ष कम से कम भारत से अंगरेजी दवाइयों का दाम १२ करोड़ रुपया विलायत जाता है ॥

हे भारत देशहितैषियो भारत दुर्दशा प्रवर्त्तको भारत के सिर्फ आर्य्यसमाजियो ब्रह्मसमाजियो और हिन्दूसमाजियो क्यों आप लोग घोर निद्रा में सो रहे हो ? आप लोगों की इस पर दृष्टि क्यों नहीं पड़ती - इसका आन्दोलन और

* काशी में सरकारी हास्पिटल के अतिरिक्त कई महाराजाओं के तर्फ से भी अङ्गरेजी दवाइयां बटती हैं जिन्हें इसी विषयमें थे कुछ दिन हुए कि हमने [illegible] स्वामी (जो काशीमें एक प्रसिद्ध सन्यासी हैं जिन्हें भारत के प्रायः सभी जानते हैं) से कहा कि यह काशी परम पुण्यमई नगरी में प्राय धार्मिक लोग दान करते हैं [illegible]

नाईन व्यवहार के कर मात्र अधिक हुए हम जानते हैं? इसमें कोई सन्देह नहीं कि कूईनाईन ज्वर दमन करने में एक अपूर्व औषध है परन्तु इस पर आर्य्य सन्तान गणको आश्चर्यित न होना चाहिये, यह तो आयुर्वेद ही कहता है "तिक्तद्रव्यंज्वराञ्जयेत्" अर्थात् कटु चीज ज्वरको जीतता है सो कूईनाईनके सेवनसे ज्वर छुटही गया तो कौन आश्चर्य्य हुआ लेकिन ज्वरादि कोई रोग क्यों न हो अधिक तिक्त औषध का सेवन करना आयुर्वेद विरुद्ध है और कूईनाईन के सेवन से भारत की कैसी दशा होरहीहै और इससे फलकी अपेक्षा अफल क्या है कोई भी दृष्टि नहीं देता है॥

अति तिक्त द्रव्य के अधिक मात्रा व्यवहार से निम्नलिखित रोग हो जाते हैं॥

चरक सूत्र स्थान अध्याय २६ में लिखा है। अधिक तिक्त औषध के खानेसे यहतिक्त अपने रूक्षादिस्वभाव से रस रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा और शुक्र में रूक्षता और शिरासमूहों में खरता उपस्थित करता है, शारीरक

भन मुख शुष्कता एव अनेक वात रोग उत्पादन करता है॥

यही दोष भावप्रकाशके पूर्व खण्ड और सुश्रुतादि ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं। अगर कोई कहे कि शुक्र तारल्य धातु की दौर्बल्यता आदि रोग भारतवासियोंको कूईनाईन के खाने से हुआ है इस्का पुष्ट प्रमाण उपरोक्त ग्रन्थों से कैसे हो सक्ता है? क्योंकि हिन्दुस्तानी लोग लाल मिर्चादि तीती वस्तु बहुत खाते हैं उससे भी यही दोष होना सम्भव है? हम कहते हैं उसे न मानिये अधिक कूईनाईन सेवन से यही सकल कुफल सम्बन्ध में विलायत और अमेरिका के प्रसिद्ध २ डाक्टरों ने जो अपनी किताबों में परीक्षा पूर्वक लिखा है जिसे मैं संक्षेप से नीचे लिखता हूं उसे तो मानोगे॥

ए० बी० गारड एम० डि० एफ० एस ने अपने पुस्तक के द्वादश संस्करण २६ पृष्ट में लिखा है कि अधिक मात्रा कूईनाईन का सेवन हृदय सम्बन्धी क्रियाको जड़ता भाव करता है जिससे रक्त का गमना गमन अर्थात् दम होनेमें आक्षेप रोग मृत्यु पर्य्यन्त हो सक्ता है॥

शौचं दयाधर्मी न विद्यते ॥ नयोगीनैवसिद्धो वा नयतिर्न-दृढ़व्रत:। नब्रह्माचारीसंन्यासी नाचार्यो न पुरोहित:। परोपकारी सद्वेत्ता न कश्चिज्जातिवत्सल: ॥

इत्यादि वाक्यों से ज्ञात होता है कि दुराचार की नदियों और अनाचार सिंधु की बाढ़ के आरंभही में महात्माओं ने गुग चर्चा लिख दी है उसी का यह फल है कि जान बूझ कर लोग राक्षसी क्रिया में प्रवृत्त हो ते जाते हैं जिन कुलीन और सत्पुरुष आर्य्य गुण धारियों से वन बड़े वोज रक्षा की भांति आयुर्वेदोक्त कर्म शुद्धा चार काम, पर उपयोगी जान कर व-नाये रहे हैं यह आयुर्वेदोक्त विद्या सब ऋषीश्वरों के कहने पर महर्षि वर भारद्वाज जी इंद्रलोक से लाये हैं और अपने समर्थ शिष्यों को पढ़ा कर प्रच-लित किया सो अब सेंत मेंत हाथ से जाया चाहता है जैसे किसी के पुरषी नाना परिश्रम और यत्न से अनेक मणि रत्न मुक्ता जमा कर जाय और। उनके कुपुत्र लोग उनका गुण न जान कर कौड़ी और हाड़ों को हुरिया ढूंढते फिरें नीतिकारों ने ठीक कहा है ॥

नवेत्तियोयस्यगुणप्रकर्षं स-दास्यनिन्दां नितरां करोति॥ यथा किराती करिकुंभजाता मुक्तापरित्यज्य बिभर्तिगुंजां।

अब इस विषय पर अब अधिक बढ़ा देना अभीष्ट नहीं है सभी जानते हैं "एक तनदुरुस्ती लाख नियामत" और इस बात को भली भांति दिखला दिया है कि अंगरेज़ी दवाइयों के सेवन से हम तनदुरुस्त कभी नहीं रह सक्ते हैं हमारे लिये यही देशीय जड़ी बूटी श्रेयस्कर है, जो हमारे प्रकृति के अनुकूल हैं। मनुष्य का जन्म पंच विकार से होता है जिस देश की जैसी हवा जल पृथ्वी आदि के गुण हैं उन्ही के अनुसार मनुष्य का रंग अंग प्रकृति इन्द्रिय बोल चाल होता है (जैसे विलायत और काश्मीर के मनुष्य गोरे, मदरास के काले, नैपाल के चपटे मुख वाले उत्तरीय पहाड़ों के अस्वमुखवाले होते हैं और वहीं के मिट्टी में जो धान्यादि उत्पन्न होते हैं उन्हीं को खाकर वे लोग जीवन काटते हैं और बिमार होने पर वहीं देशीय जड़ी बूटीके सेवनसे तनदुरुस्त हो जाते हैं। इसलिये पश्चिम के लोग प्रायः उष्ण को दाम खाते हैं उनको कोढ़ महादि आदि विकार उत्पन्न नहीं

होता है पूर्व वाले एक दिन भी खावें तो बिमार हो जाते हैं परन्तु चावल रोज़ खाते हैं और पश्चिम के लोग चावल बहुत कम खाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है पश्चिम में चावल की उत्पत्ति कम है पूर्व में बहुत होता है वैसाही औषधों को भी जानिये। ईश्वर ने जिस देश में जिसे उत्पन्न किया है उसके शरीर रक्षा के अर्थ समस्त पदार्थों को भी वहीं उत्पन्न कर दिया है तो फिर हम लोग जान बूझ कर अपने धन धर्म का नाश करते हैं तो सिवाय मूर्खता के और क्या है॥

अंगरेज़ी दवाइयों के खाने से धर्म नाश होने के अतिरिक्त एक बड़ीभारी हानि और भी है कि जिसपर किसी देशीय चिकित्सक ने अब तक ध्यान नहीं दिया वह यह है कि अंगरेज़ी दवाइयों में अधिकांश औषध खट्टी- (सलफ्युरिक् एसिड् टारटरिक् एसिड् और नाइट्रिक एसिड् वगैरह) क्षारद्रव्य (कार्बोनेट औफ सोडा आदि) निमक

मारन मे
बनाने हो
याने चम
धातु को
कर उरा
या मूत
हो का
लोग आ
ही करो
पर कई
अवश्य ह
गया इन
हमको
या नहीं

आयुर्वेद

विदेश
और प
वटी आ

के स्थान में अमरतोसम त्रिवेणी जी के धारा का गंगाजल डाला जाता है॥

जिन रोगियों को डाक्टर हकीमों की दवा माफ़िक न करती हो या उनके रोग का पता न लगता हो कि यह कौन रोग है वे लोग अवश्य हमें लिखें या हमारे पास आवें हम उनके रोग का नाम, दवा क्यों फायदा नहीं करता कौन दवा से यह रोग कितने दिनों में आराम होगा रोग साध्य है व असाध्य अर्थात् अच्छा होगा वा नहीं हम सब बतलाय देंगे। परन्तु चिट्ठी में इतनी बातें अवश्य लिखें कि रोगी स्त्री है वा पुरुष और कितने दिन से रोग है शरीर का रंग कैसा है शरीर मोटी है या दुबली चलने फिरने की ताकत कैसी है खाना किस क़िस्म का माफ़िक करता है दिशा पेशाब कैसा और किस रंग का होता है, पेशाब के साथ धात का जाना या जल के पेशाब होना इत्यादि अगर क़ारूरा देख के लिखें तो और भी उत्तम हो। पेट में कड़ापन सिर में घुमरी जी मचलाना पेट में जलन कलेजा धक २ करना इत्यादि और भी जो प्रत्यक्ष लक्षण हो लिखें इसके अतिरिक्त और अनेक शरीर सम्बन्धी प्रश्न पत्र द्वारा पूंछ सक्ते हैं। जवाबी कार्ड या जवाब के लिये ।॥ टीकट रख देवें नहीं तो जवाब बैरंग दिया जायगा॥

भूमिका॥

प्रायः लोगों के मुख से शिकायत सुनने में आती थी कि वैद्यक मत की औषधियां उत्तम और ताज़ी कहीं नहीं मिलतीं और यह तो सभी जानते हैं, बनियों की दुकानों में तो अक्सर सड़ी घुनी दवाइयां मिलती हैं इस अभाव को दूर करने के अर्थ यद्यपि यह दुकान बीस वर्ष से जारी है परन्तु संपूर्ण कार्य लोगों की रुचि पर निर्भर है, जब लोगों के चित्त में यह असर पैदा हुआ कि इस देश के स्वभाव पर इसी देश की औषध अधिक गुणकारी है क्योंकि जिस देश में जो रोग उत्पन्न होता है उसी देश में उस रोग की औषधियां भी उत्पन्न हुआ करती हैं और अंगरेज़ी दवाइयां सिर्फ़ [illegible] प्रकृति विरुद्ध हैं और भारत से प्रतिवर्ष जो (२०००००००) रुपिया अंगरेज़ी औषधों के मूल्य में [illegible] जाता है वही [illegible] हमारे प्रकृति के अनुकूल [illegible] मौजूद है। [illegible] दवाइयां [illegible] और [illegible] में [illegible] पड़ता है और [illegible]

दवाखानों की श्रेणी में छपा दिया जायगा । क्योंकि यह औषधालय देशोद्धार के लिये जारी हुआ है ॥

जगद्विख्यात नारायणतैल ।

इस तेल के मर्दन से या नास देने से या गुदा में पिचकारी देने से लकवा आदि सब प्रकार के वायु रोग आराम होते हैं एक पाव का दाम १॥) डाकव्यय ।॥)

विषगर्भतैल-शीत वायुरोगके लिये इससे बढ़कर अन्य तैल नहीं है यह तैल बहुत गर्म है जिसको अति शीत से गठिया आदि वात रोग हुआ हो या जोड़ों में दर्द या सूजन आ गया हो इस तेल के लगाने से बहुत जल्द आराम होता है पाव भर का दाम १) डाकव्यय ।॥)

मासादि तैल—रक्त विकार से हो या शीत से हो दोनों प्रकार के वायु रोग गठिया आदि आराम होते हैं और जिसका शरीर सूख गया हो या सूखा जाता हो थोड़े ही दिन इस तैल के लगाने से मोटा हो जाता है और लड़कों का सिटया रोगभी छुट जाता है। पाव भर का दाम १) डाकव्यय ।॥) आना ॥

लाक्षादि तैल—इस तेल के लगाने से कैसाहू पुरानी खांसी बुखार क्यों न हो बहुत जल्द आराम होता है पावभरका दाम १) डाकव्यय।॥)

कामलाक्षादि तैल—इस तैल के लगाने से शरीर में ताकत और धातु बढ़ता है और बदन का पीलापन जाता रहता है पावभर तेल का दाम २) डाकव्यय ।॥)

चन्दनादि तैल—इस तेल के लगाने से शरीर में सुरखी आती है बल बढ़ता है शिर की गरमी हाथ पैर का जलना उन्माद इत्यादि दूर जाते हैं पावभर तेल का दाम १) डाकव्यय ।॥)

शिलादि तैल—इस तेल के लगानेसे बदनकी खुजली जलन लाल चट्टे पड़ जाना नशों में सुरसुराहट होना खून बिगड़ जाना ये सब बहुत जल्द आराम होता है और जो खून की बिमारी पुटास साल्सा आदि के पीने से न आराम हो तो इस तेल के लगाने से आराम होता है इस तेल से हजारों बि-

मार अच्छे हुवे हैं एक थान का दाम ।।।) डाकव्यय ।।।)

अद्भुतदन्तरोगनाशनि चूर्ण—इस चूर्ण को दांतों में रगड़ने से दन्त शूल दांत से रक्त जाना दांतों में पानी का लगना हिलना और मुख की दुर्गन्धि निस्सन्देह जाती रहती है। एक डिब्बी का दाम ।) डाकव्यय ।)

दहत्‌अपामार्ग क्षार तैल—इस तेल को सांझ सबेरे ५ बिन्दु कान में डालने से निस्सन्देह कर्ण शूल कर्णस्राव कर्ण शब्द और थोड़े दिन का बहिरापन आराम होता है एक शीशी तैल का दाम ॥) डाकव्यय ।)

व्याघ्रीतैल—इस तेल के नास लेने से कैसाहू पीनस की बिमारी क्यों न हो अर्थात् जिसके नाक से मवाद और दुर्गन्धि आने लगती है एक मास में आराम होता है दाम ॥) डाकव्यय ।)

कुमारकल्पद्रुम घटी—अर्थात् (बि

बिमार हो जात
व्यय ।)

परीक्षा

आज कल ३
मनुष्य ऐसे न मि
की शिकायत न
तक इस रोग
को मालूम भी
कहेंगे कि हमको
में नहीं लगता
यह ऐसा खराब
करने से गठ
कुछ दिन बना
मारी रहती है
जीर्णज्वर, तपे
अतीसार, कोष्ठ
दांत रोग इत्य
रोग हैं सब धा
होते हैं। धातु
तथा यह बहुत
सदा खाना खा
कमा ताकतवर
भी हो तो अ

वैसाही शरीर ढीली और सुस्त क-भी २ हो जाया करे मगर की इच्छा कम हो, हो भी तो शीघ्रही वीर्य्यपात और आनन्द रहित हो, ऐसे लोगों का धातु भी कई प्रकार से जाता है जैसे दिशा के पहिले या पीछे गिरना, दिशा फिरते समय मल उतरने के लिये कांखने से मूत्र मार्ग से धातु का टपक आना, मूत्र सफेद जम जाना, स्वप्न दोष होना, या सफेद शीशी में मूत्र को एक दिन रात काग से बन्द कर रखने से मूत्र में जाला २ सा या गदला नीचे जम जाना इत्यादि किसी प्रकार से धातु क्यों न जाता हो प्रमेहारिचूर्ण समूल नष्ट कर धातु को गाढ़ा करता है । अगर छ महीने से रोग हो तो १ डिब्बी चूर्ण से आराम होता है १ वर्ष से हो तो २ डिब्बी चूर्ण से और ५ डिब्बी चूर्ण के खाने से कैसाहू पुराना धातु रोग हो आराम होता है । सुजाक आराम होनेके बाद इस चूर्ण के खाने से फिर सुजाक नहीं उभड़ता । कैसाही दुबला मनुष्य हो बदन की हड्डी तक दिखाती हो ५ डिब्बी तक चूर्ण खाने से दूनी शरीर हो जातीहै । सुरत से ... गिरना, सभी

आंखों का सदा बना रहना, म[...] आदि जो धातु से सम्बन्ध रखते [...] सब आराम होते हैं तारीफ इ[...] यह है कि इस चूर्ण के सेवन [...] दस्त कब्ज न हो के और दस्त [...] लाफ होने लगता है । १ डि[...] चूर्ण का दाम ॥=) डाक महसूल [...] और ।।।) महसूल में दो डिब्बी चू[...] जा सक्ता है चूर्ण खाने का विधा[...] पत्र छपा हुआ दवा के साथ है ।

कामदेव चूर्ण ॥

इस चूर्ण के सेवन करने से धातु अत्यन्त गाढ़ा और पुष्ट होता है । धातु पुष्ट करने वाला इससे बढ़कर अन्य औषध नहीं है । कैसाहू पतला पानी के समान धातु क्यों न होगया हो ४० दिन के खाने से धातु गाढ़ा हो जायगा, हम शपथ पूर्वक कहते हैं चाहे उमर भी कुछ जादा होगई हो कभी लड़के नहीं हुये हों, अगर स्त्री पुरुष दोनों [...] मास पर्य्यन्त परहेज सहित कामदेव चूर्ण का सेवन करैं तो निस्सन्देह गर्भाधान रहैगा और ताकतवर लड़का पैदा होगा अगर फर्क पड़े तो १००) दण्ड देवैं । अगर तीन डिब्बी तक इस चूर्ण को बराबर खाता

मुलासा दस्त होगा ४० मात्रा का दाम ।) डाकव्यय ।)

आश्चर्यबालकों की औषध—ह जारों लड़के मरने से बच गये हैं इस दवा के खाने से पसुरी का च-लना खांसी बुखार पेट में दर्द होना इत्यादि जितने बालकों के रोग हों तेहँ आराम होते हैं। दाम ॥) डाकव्यय ।)

गर्भ चिन्तामणि रस—जिन स्त्रियों का कच्चा गर्भ गिर जाता है उनके वास्ते यह अमृतही है। इस औषध के प्रभाव से पूरे महीने में आरोग्य लड़का पैदा होता है परंच गर्भाधान से लेकर जब तक लड़का पैदा न हो बराबर दवा खाना होगा पहरेज के साथ दाम १।) डा० ।)

उदरशूलघ्न वटी—यह उस पेट के दर्द को आराम करती है जो प्रायः स्त्रियों को महीने दूसरे महीने चौथे छठे महीने बड़े जोर शोर से दर्द उठता है यहां तक कि मरने की नौबत आजाती है यह बिमारी औरतों को बहुत होती है इस गोली के खाने से चार पांच घंटे में दर्द जाता रहता है एक शीशी दवा का दाम ॥) डा० ।)

कामोत्पादक वटी—इस गोली को संध्या समय खाकर ऊपर से गर्म दूध पी लेने से शरीर में एक उत्तेजना आजाती है और मस्तूमें कुछ स्तंभन और आनन्द होताहै। परंच अति गर्म प्रकृत वाले को फायदा नहींकरती एकशीशी जिसमें ४० गोली हैं दाम ॥) डाकव्यय ।)

नपुंसकार वटी और तिला—इस वटी के खाने से और तिला के लगाने से ४० रोज में पन्द्रह बीस वर्ष तक का नपुंसक जो सब मारी गई हो आराम होता है तेल से छाले आदि नहीं पड़ते पूर्ण मात्रा दोनों औषध का दाम २) डाकव्यय ।)

बुद्धिवर्द्धक अर्क—इस अर्क के पीने से बातों का भूलना शिर का घूमना जी मचलाना आंखों के सा-मने अँधियारा होना पेट या छाती का जलना बुद्धि का भ्रम ये सब आराम होतेहैं एक शीशी का दाम ॥) डाकव्यय ।)

अर्क सून सफा—यह अर्क मुण्डी आदि औषधियों से खींचा गया है इसमें सालसापरैला आदि से भी अ-धिक गुण है १ बोतल का दाम ॥) परन्तु यह अर्क रेल द्वारा जा

ता है और ४ घंटा में दम न
जाते हैं ॥

अद्भुत दाद की दवा—निम्नदेह
स, महोपकारी देशी औषध के
मान कोई संसार में औषध भी ऐसा
य नहीं है किसीहू पुरानी दाद
माम शरीर में क्यों न फैल गयी
ो ५ दिन के लगाने से समूल नष्ट
ा जायगा और तारीफ इसमें यह
है कि जलता बिलकुल नहीं। एक
डिब्बी का दाम ।) डाकव्यय ।)

अमृतधारा व चूर्ण—कैसाहू पुराना
अतीसार या आंव खून का दस्त
हो इस चूर्ण के सेवन से अवश्य
आराम होता है यदि इस चूर्ण से
आराम न हुआ तो फिर आराम
होना मुशकिल है। दाम ॥) डाक-
व्यय ।)

शुष्क खांसी की गोली—जिसमें
मुशकिल से कफ आता है और खां-
सते २ मनुष्य थकान कर देता है
कुक्षि में पीड़ा होने लगे और ग-
रमी से भी घबड़ा उठे इस गोली
के सेवन से जाती रहती है दाम
।=) डाकव्यय ।)

श्वासकास की गोली—यह खांसी
जिसमें दम्मा आता हो इस गोली
को मुख में डाल कर चूसने से आ-
राम होगी एक डिब्बी का दाम ।=)
डाकव्यय ।)

जूड़ीबुखारकी अपूर्वबटी—कैसाहू
जाड़ा दे के बुखार बरसों से क्यों
न आता हो दैनिक (रोज २) अँ-
तरा तिजारी और चौथिया शीघ्र
ही छुट जाता है इसकी बहुत ता-
रीफ करना निष्फल है सिर्फ अर्ज
यह है कि जो बुखार कुईनाईन
आदि किसी दवा से न छुटा हो
उस ज्वर वाले को यह बटी अवश्य
खिलावें एक डिब्बी जिसमें २०० सौ
गोली हैं ।) डाक महसूल ।) में ४
डिब्बी जा सक्ती है जो लोग ५)
की इकट्ठा मँगावेंगे उनको ६।) का
माने २५ डिब्बी भेजी जायगी। और
लोग इस गोली को धर्मार्थ बांटना
चाहैं उन्हें भी डिब्बी =) में दिया
जायगा परन्तु ५) रुपये से कम न
मँगावें ॥

पट्बिन्दुतैल—यह प्रसिद्ध तैल है
प्रायः लोग जानते हैं कि इस के
नाश लेने से समलवायु शिर दर्द
शिर का घूमना शिर धप २ करना
शिर में ऐसे कुछ चल रहा है या

फाटता है ऐसा मालूम होना आंखों का हमेशा सुर्ख रहना या जलन मालूम देना आंखों से कम सूझना इत्यादि अवश्य आराम होता है दाम १ सीसी का ॥) डाकव्यय ।)

मस्तिष्क वल्लभ तैल–बहुत दिनों से आलोचना करते २ यह महोपकारक शिर का प्यारा तैल तैय्यार हुआ है । यथा बिधि इस तेल को शिर में लगाने से निश्चय शिर व्यथा घुमरी मस्तिष्क शून्यता झंझनाहट आखों के सामने अँधियारा हो जाना आदि और यावत् शिर के रोग हैं आराम होते हैं तथा मस्तिष्क सुशीतल और आंखों की ज्योति बढ़ती है इस की सुगंध अतीव मनोहर राजा महाराजाओं के सर्वदा लगाने योग्य है । विदेशी तैलों की अपेक्षा यह तैल भारत वर्ष में विशेष फल प्रद है । एक सीसी का दाम १) डाकव्यय ।) इकट्ठी १२ शीशी का दाम १०) डाकव्यय २)

पामारि चूर्ण–कैसाहू खजुरी लमाम शरीर में क्यों न फैल गई हो चाहे गीली हो या सूखी इस चूर्ण के लेपन से शीघ्रही आराम होती है दाम १ डिब्बी का ॥) डाक महसूल ।)

शहतहिंग्वादि वटी––इस गोली के खाने से गले की जलन तथा पेट का दर्द और हिचकी रोग आराम होता है विशेष गुण इस में यह है कि कैसाहू हैजा देश में क्यों न फैला हो दोनों समय इस गोली के खाने वाले को हैजा न होगा सौ गोली के डिब्बी का दाम ॥) डाकव्यय ।)

लवणभास्कर चूर्ण–यह प्रसिद्ध चूर्ण है प्रायः वैद्यक के ग्रन्थों में लिखा है तारीफ इसमें यह है कि और चूर्णों की अपेक्षा मातदिल है स्वादिष्ट है खाने से मन प्रसन्न होता है सम्पूर्ण प्रकार की उदर की बिमारी कैसाहू पुरानी क्यों न हो कुछ दिन इस चूर्ण के सेवन करने से आराम हो जाती है अगर इससे आराम न हुआ तो फिर आराम होने में कठिन समझना एक डिब्बी का दाम ॥) डाकव्यय ।)

चन्दनादिचूर्ण–स्त्रियों के रक्तरोग पर अनुभूत औषध है मासिक खून का अधिक जमा रहना या बिना

इस औषधालय में और भी अनेक प्रकार की वैद्यक मत से बनी हुई गोलियां चूर्ण अवलेह आसव पाक तैल रस शुद्धधातु उपधातु विष उपविष तैयार रहते हैं और जो लोग वैद्यक मत से कोई दवा बनवाना चाहैं अथवा सोना चांदी आदि धातु अथवा उपधातु भस्म कराना चाहैं हुकुम आने से बहुत उत्तमता के साथ तैयार करके भेजा जायगा ॥

हरएक शहरों में एजेंएट की जरूरत ॥

जिन महाशयों को हमारे औषधों के एजेंएट होने की इच्छा हो पत्र द्वारा लिखा पढ़ी करने से तै हो सक्ता है ॥

मैनेजर वैद्यनाथ शर्म्मा
अयुर्वेदोक्त औषधालय प्रयाग

प्रसंसापत्र।

महाशयो

संसारिक जितने कर्म हैं जब तक प्रत्यक्ष नहीं देखे जाते लोग उनपर विश्वास नहीं लाते पं० जगन्नाथ जी वैद्य इलाहाबाद में बीस पचीस वर्ष से चिकित्सा का काम करते हैं और कितनों बिमारों को आराम किया होगा करीब दस बारह वर्ष के लग भग हुआ कि हमारे लड़के की बारात झूसी में माधोप्रसाद जी के यहां गई जैसाही बारात दरवाजे पर लगी कि दुलहा के भाई छेदी लाल जी को महा घोर हैजा हो गया कि जिसको देख के हम सुद घबड़ा गये। और पं० जगन्नाथ जी वैद्य को बुलाया उन्हों ने बड़े साहस से रात भर में आराम कर दिया जिसका कि धन्यवाद हम अब तक देते हैं। हाल में हमारे समधी ला० कन्हई लाल जी उदर रोग से ऐसे पीड़ित हुये कि जिसका दुख वही जान सक्ता है जिस को वह दुख हो अनेक उपाय किये कुछ भी लाभ नहीं देखा गया अन्त में पं० जगन्नाथ शर्म्मा वैद्य जी ने एक ही दिन रात में रोग समूल नष्ट कर दिया उस चमत्कार औषध और पं० जगन्नाथ जी वैद्य को जहां तक धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है आशा है कि और लोग भी जो डाक्टरों को धन्वन्तरि का अवतार मान बैठे

हैं अवश्य पं० जी की विद्या बुद्धि और औषध की चमत्कारी देख आश्चर्य करेंगे।

ठाकुर प्रसाद वैद्य
महजनी टोला–प्रयाग

हमारे दहिने पैर में हाथी पांव हुआ था और हमने उस बिमारी के आराम कराने के लिये बहुत ह कीम और डाक्टरों का इलाज किया लेकिन किसी से फायदा न हुआ। आखीर में हमने पं० जगन्नाथ वैद्य की दवा किया और हमको बहुत जल्द आराम किया। हम इस त-जरुबे से कह सक्ते है कि यह ब-हुत चालाक और लायक चिकित्सक हैं–हर किस्म की सख़ बिमारियां आराम कर सक्ते हैं॥

इलाहाबाद } ए० सी० एच० पैटरील
ता०१५मार्च } फायरमैन ई० आई० आर०

ता० १ नवम्बर १८८७

वैद्यराज पं० जगन्नाथ शर्म्मा ने हमें दो दिन में हैजा से आरोग्य किया ...सा हम बदर बिगड़ गया था कि हमें जीने का कुछ भी आशा नही था-हमने उनको अपने काम में बहुत होशियार और चा-लाक पाया॥

नारायणराव
क्लर्क इलाहाबाद

---

१ फरवरी १८८१

पं० जगन्नाथ शर्म्मा वैद्य ने हमारे लड़को को हैजे की बिमारी में चि-कित्सा किया। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि पं० जी अपने काम में ब-हुत लायक हैं॥

कन्हैयालाल
इन्फटूमेन बोर्ड इलाहाबाद

ता० ८ फरवरी १८८१

हम पांच महीने से सुजाक के रोग से पीड़ित थे–अनेक हकीम और डाक्टरों के चिकित्सा कराने के बाद हमने पं० जगन्नाथ वैद्य की दवा किया और बहुत थोड़े अर्से में आ-रोग्य हुये॥

जगन्नाथप्रसाद क्लर्क
बहादुरगञ्ज-इलाहाबाद

ता० ८ मार्च १८८५

हमको यह लिखने में बड़ी खुशी है कि हमें पं० जगन्नाथ शर्म्मावैद्य ने पुराने जुकामसे दो हफ्ते में बिना किसी तकलीफ आराम किया— सिवाय इसके हमने अपने भाई की भी चिकित्सा उनसे करवाया जो कि खांसी और बुखार से पीड़ित थे उनको भी पं० जी ने एक सप्ताह में आराम किया । जोकुछ हमने देखा और जाना पं० जी को अपने काम में बहुत चालाक और परिश्रमी और वैद्यक में पूर्ण पाया ॥

हमें यकीन है कि कोई आदमी जो कि पं० जी से चिकित्सा करवायेगा कभी निराश न होगा विशेष कर गरीब रोगी जिन पर यह अधिक ध्यान देते और परिश्रम करते हैं ॥

जगन्नाथप्रसाद तिवरी
पि० डबलु० डी० एकजामिनर्स
आफिस इलाहाबाद

ता० १६ अपरैल १८८१ ।

हमारी स्त्री को इस कदर एक सख्त बिमारी हुई थी कि हमे उनका जीवन का कोई भी भरोसा नहीं था । हमने उनको आराम करवाने के लिये बहुत रुपया खर्च किया और अनेक डाक्टरों से इलाज करवाया लेकिन सब निष्फल हुआ । इस नाजुक मौके में हमने प० जगन्नाथ वैद्य के नाम सुनकर उनसे अपनी स्त्री का इलाज करवाया और वह बहुत थोड़े दिन मे आराम हो गई । यह बहुत यत्नवान और मरीजों के ओर ध्यान देते हैं—और उनकी दवाओं का फायदा पिलाते ही मालूम हो जाता है ॥

युगलकिशोर
इलाहाबाद

---

८ नवम्बर १८८१ ।

पं० जगन्नाथ शर्म्मा ने हमारे लड़के का इलाज किया जिसे आमाशय कि बिमारी बहुत दिन से थी पं० जी बहुत ध्यान से बिमारी का इलाज करते हैं ॥

हीरालाल
आर–एम–एम
इलाहाबाद

० जगन्नाथ शर्म्मा वैद्य ने इसी
र हमारे परिवार को ४ वर्ष से
ा कर रहे हैं। हमने उन से उ-
ा दया और योग्यता का अने-
तेक परिचय पाया है। उन्हें
मार का नाड़ी ही से मर्ज मा-
ा हो जाता है और बिमारियों
इलाज में प्रायः चमत्कारी दि-
ते हैं। वैद्यक के अलावा उन्हों
अंगरेजी भाषा में मेटिरीया मेडी-
आदि ग्रन्थों को भी अच्छी त-
ह से पढ़ा है। इनके दवाइयों के
ग भी बहुतही सस्ते हैं॥

तारिणीचरणघोष
गवर्मेण्ट पेनशेनर
इलाहाबाद

——:०:——

६ अक्टोबर १८८८,

पं० जगन्नाथ शर्म्मा वैद्य ने बहुत
दिनों से हमारी बहुत पुरानी खाँसी
का [illegible] कि बिमारी आराम किया।
हमने बहुत दिनों तक [illegible]
का [illegible] किया लेकिन [illegible]
को फायदा नहीं हुआ। [illegible]
[illegible]
[illegible]

खलाई जाती रही। अब हम बिलकुल
आरोग्य हैं॥

मनमोहनलाल
इलाहाबाद

---

१० अप्रैल १८८५,

हम अपनी तजरुबा से कह सकते
हैं कि कानपुर लखनऊ और बनारस
में हमें जितने वैद्य मिले पं० जगन्नाथ
शर्म्मा को हमने सब से उत्तम पाया।
थोड़े दिन हुये कि हमारी बहु को
हैजा हुआ था और वह बिलकुल बे
होश थीं उन्होंने दवा किया और
आध घंटे ही में वह होश में आई
और ८ रोज में वह संपूर्ण रूप से
आराम हो गई॥

मोहनलाल
[illegible] इलाहाबाद

ता० १४ जौलाई १८[illegible],

[illegible] पं० जगन्नाथ शर्म्मा के [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कोई दवा से उन को फायदा नहीं मालूम होता था अन्त में हमने उन को पं॰ जगन्नाथ जी से इलाज कर-वाया । उन्हों ने ऐसा दिल लगा के उनका दवा किया कि वह बिलकुल आराम हो गये। वैद्य जी सिर्फ हमारे पिताही को नहीं आरोग्य किया ब-ल्कि हमारे भाईकी स्त्री,को,जोकि अंग रेज डाक्टर के इलाज से भी मरणा-पन्न अवस्था में थीं उनको इलाज से आरोग्य हुई । उनमें हमने यह गुण सर्व्वोपरि पाया कि वह मरीज पर अपना पूरा ध्यान देते और मेहनत करते हैं जो कि और २ वैद्यों में मु-शकिल से पाया जाता है । वह हरवक्त रोगी को देखने के लिये मु-स्तैद रहते हैं और २ वैद्यों के मा-फिक लोभी नहीं हैं । उनके सामने गरीब और धनवान बराबर है ॥

बिन्दाप्रसाद
कोर्टइन्स्पेक्टर इलाहाबाद

ता॰ १४ अप्रैल १८८३,

हम बहुत खुसी के साथ अपना राय पं॰ जगन्नाथ वैद्य के लियाकत पर लिखते हैं हमारे साथ सिपाह-

के जलन से पीड़ित
दिन तक अंगरेज ड
करता रहा लेकिन ड
यदा नहीं हुआ । वि
और उसको बचने क
नहीं थी । उसका आ
अन्त में पं॰ जगन्नाथ
कराना आरम्भ किया
यदा हुआ कि दूसरे ह
हालत बदल गई । उन
वर होता रहा जब तक
न हो गया । सिवाय इ
पने पड़ोस में दवा कर
और उनको अपने काम
चालाक और लायक प

महम्मद अहूर हु
गवर्मेंट हाई
ह

चिट्ठियां ।

श्रीयुत वैद्यवर पं॰ जगन
महाराज

नमस्ते

जिला हजारीबाग से

महाशय

आप का सुगाक का दवा भेजा हुआ मिला सो बहुत बढ़िया था उससे तीन आदमी को आराम हो गया बल्कि वही सीसी में दवा कुछ बच भी गया है अब कृपा कर एक आदमी के लिये सुगाक की दवा वेल्यूपेबुल पारसल में बहुत जल्द भेज दीजिये ॥

श्री सम्भूराम गनपतराम
गोमीआसाजिला हजारीबाग

मित्रवर

आप का दवा विषगर्भ तैल बहुत फायदायन्द है इसलिये फिर एक सीसी पाव भर का वी० पी० पार्सल द्वारा हमारे नाम जल्द वापसी डाक भेजिये देरी न कीजियेगा दवा ठीक होने के सबब हम उम्मेद करते हैं कि बहुत दवाइयां आप की दूकान से हम मँगावेंगे ॥

धन्य है क्यों न फायदा हो जब कि वैद की रीति से बना है ॥

आप का कृपाकांक्षी
बाबू रामसिंह–रेवती बलिया

हरदोई से

महाशय नमस्ते

दाद की दवा आप का अत्यन्त उत्तम है मुझको उसके लगाने से अतिलाभ हुआ । वृहत्अपामार्ग क्षार तैल की भी एक सीसी भेल्यूपेबुल द्वारा भेज दीजिये ॥

शम्भूलाल भजनलालदुबे बावनहरदोई

फर्रुखाबाद से

महाशय

पश्चात् नमस्कार के विनय यह है कि शिवानन्द मिश्र की मार्फत जो दवा दस्तों की हम अपने वास्ते आप के यहां से अमृतार्णव नामक चूर्ण मँगवाया यह सो रामबाण होकर हमारे उक्त शत्रु रोग को भगा दिया अब इस समय दस्तों के बारे में हमको शिकायत बाकी नहीं है किन्तु बुखार अब पीछा नहीं छोड़ता है प्रति दिन ४ रोज से जाड़ा देकर आता है और ठंढे हो जाते हैं कै होने लगती है पण्डित जी साहब कृपा पूर्वक अब आप इसको भी दूर कीजियेगा हमको पूर्ण आशा है कि आपही की हाथ से इसका वध होगा हम ने दस्तों मे बहुत से हकीम व वैद्यों की औषधी सेवन की मगर किसी की औषधी से कुछ भी फायदा न हुआ अब आप को अन्तःकरण से धन्यवाद देते हैं आप बुखार की दवा भेल्यूपेबुल द्वारा निम्नलिखित पते से भेज दीजिये ॥

बद्रीप्रसादचौबे रईस
निवासी ग्राम माचीम